अलबलाग़

Al-Balagh

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद, क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

Al-Balagh
(in Hindi)

By
Hazrat Mirza Ghulam Ahmad[as]
The Promised Messiah & Mahdi

مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلَاغ

अल-बलाग़

जिसका दूसरा नाम है

फ़रियाद-ए-दर्द

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद-व-महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक : अलबलाग़- फ़रियाद ए दर्द
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद-व-महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक : डॉ. अन्सार अहमद, एम. ए., एम.फिल, पी एच डी
पी.जी.डी.टी., आनर्स इन अरबिक
टायप सैटिंग : नईम उल हक़ कुरैशी, मुरब्बी सिलसिला
संस्करण : प्रथम संस्करण (हिन्दी) जून 2019 ई०
संख्या : 1000
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)

Name of book : AL-BALAGH
Author : Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani
Masih Mouood & Mahdi Mahood Alahissalam
Translator : Ansar Ahmad, M.A., M.Phil, Ph. D
P.G.D.T., Hons in Arabic
Type Setting : Naeem Ul Haque Qureshi Murabbi Silsila
Edition : 1st Edition (Hindi) June 2019
Quantity : 1000
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक 'अलबलाग़' का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए. मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य, मुकर्रम इब्नुल मेहदी एम् ए और मुकर्रम मुहियुद्दीन फ़रीद एम् ए ने इसका रीव्यू आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

पुस्तक परिचय

अलबलाग़ फ़रियाद-ए-दर्द

1897 ई० में एक ईसाई अहमद शाह ने एक अत्यंत ही गंदी और दिल दुखाने वाली पुस्तक 'उम्महातुल मोमिनीन' प्रकाशित की और उसकी एक हज़ार प्रतियाँ डाक द्वारा हिंदुस्तान के उलेमा और इस्लाम के सम्मा-ननीय जनों को नि:शुल्क भिजवाई गईं ताकि उनमें से कोई उसका उत्तर लिखे क्योंकि इस पुस्तक में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी पवित्र पत्नियों की शान में लेखक ने अत्यंत गंदी गालियां प्रयोग की थीं। इसलिए इस पुस्तक के प्रकाशन से मुसलमानों में ईसाइयों के विरुद्ध अत्यंत जोश पैदा हुआ और मुस्लिम अंजुमनों ने इसका उत्तर देने की बजाय गवर्नमेंट की सेवा में मेमोरियल पर मेमोरियल भेजने शुरू कर दिए ताकि इस पुस्तक को ज़ब्त किया जाए और उसके प्रकाशन को बंद किया जाए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस अवसर पर यह पुस्तक लिखी जिसमें मुसलमानों के तरीके को अलाभदायक क़रार देते हुए फरमाया कि उचित यही है कि इन सब आरोपों का जो इस पुस्तक और अन्य पुस्तकों में पादरियों ने लिखे हैं संतोषजनक उत्तर दिया जाए क्योंकि जब एक पुस्तक देश में प्रकाशित होकर अपने बुरे प्रभाव पढ़ने वालों के दिलों पर डाल चुकी है तो अब इसकी रोकथाम से क्या लाभ? अब तो उसका अत्यंत ही नर्मी और सभ्यता से तार्किक और अकाट्य उत्तर देना चाहिए। और आपने गव-र्नमेंट से इस इच्छा का भी इज़हार किया कि उचित यही होगा अगर गवर्नमेंट भविष्य में धार्मिक शास्त्रार्थों में गंदे और अपवित्र शब्दों के प्रयोग को आदेश

देकर रोक दे। साथ ही आप ने यह भी लिखा कि पादरियों के आरोपों का जवाब देना भी हर एक का काम नहीं है बल्कि वही व्यक्ति इस काम को अंजाम दे सकता है जिसमें दस शर्तें पाई जाती हों।

यह पुस्तक आप अलैहिस्सलाम ने मई 1898 ई० में लिखी। इसके दो भाग हैं- एक भाग उर्दू भाषा में है और एक भाग अरबी भाषा में। लेकिन इसका सामान्य प्रकाशन पहली बार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी[रज़ि०] की अनुमति से 1922 ई० में हुआ।★

ख़ाकसार

जलालुद्दीन शम्स

★**नोट-** अलबलाग़ या फ़रियाद-ए-दर्द, अरबी भाग और फ़ारसी अनुवाद के साथ यद्यपि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहांत के बाद द्वितीय ख़िलाफ़त के समय में 1922 ई० में प्रकाशित हुआ परन्तु इसका अरबी भाग फ़ारसी अनुवाद सहित ‹तरग़ीबुल मोमिनीन› के नाम से 1898 ई० में ही प्रकाशित हो गया था। इसी प्रकार अंग्रेज़ी भाषा में इसका नाम-

THE MESSAGE OR A CRY OF PAIN

के नाम से 1898 ई० में ही प्रकाशित हो गया था। (सय्यद अब्दुल हय्यी)

अल बलाग़

जिसका दूसरा नाम है

फ़रियाद-ए-दर्द

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम

اَللّٰھُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَیْبِ وَ الشَّھَادَۃِ
اَنْتَ تَحْکُمُ بَیْنَ عِبَادِکَ فِیْ مَا کَانُوْا فِیْہِ یَخْتَلِفُوْنَ

(पुस्तक उम्महातुल मोमिनीन)

इस पुस्तक का विस्तृत हाल लिखना कुछ आवश्यक नहीं। यह वही पुस्तक है जिसने हमारे सय्यद-व-मौला ख़ातमुल अंबिया, खैरूल अस्फ़िया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में अपशब्दों, घोर अपमानजनक गन्दी और अश्लील गालियों से भरे शब्द इस्तेमाल करके पंजाब और हिन्दुस्तान के छः करोड़ मुसलमानों का दिल दुखाया और अपने झूठ एवं मनगढंत बातों, अत्यन्त अभद्र और लज्जाजनक शब्दों द्वारा मुसलमानों की क़ौम को वह पीड़ादायक घाव पहुंचाया है जिसे न हम और न हमारी सन्तान कभी भूल सकती है एवं इसी कारण से पंजाब और हिन्दुस्तान में इस पुस्तक के बारे में बहुत शोर उठा है और मुझे भी कई शरीफ़ मुसलमानों एवं सम्माननीय उलमा के पत्र पहुंचे हैं। अतः उलमा में से मौलवी मुहम्मद इब्राहीम साहिब ने आरा से इसी बारे में एक कार्ड भेजा है और अख़बारों में भी इस पुस्तक के बारे में बहुत सी शिकायतें मैंने पढ़ी हैं। जिनसे ज्ञात होता है कि वास्तव में इस व्यक्ति ने अपनी पुस्तक में जगह-जगह बहुत असभ्यता, धृष्टता तथा गालियों से काम लिया है।

अतः मैं देखता हूं कि मुसलमानों में इस पुस्तक से अत्यन्त उत्तेजना

पैदा हुई है। इस उत्तेजना की स्थिति में कुछ लोगों ने सरकार की सेवा में मोमोरियल भेजे और कुछ लोग पुस्तक के खण्डन की ओर आकृष्ट हुए। परन्तु मूल बात यह है कि इस झूठ का जैसा कि निवारण चाहिए था वह अब तक नहीं हुआ। ऐसी बातों में मेमोरियल भेजना तो केवल एक ऐसी बात है कि जैसे अपने पराजित होने का इक़रार करना और अपनी निर्बलता एवं कमज़ोरी को लोगों में प्रसिद्ध करना है। यह बात भी कदापि पसन्द करने योग्य नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति खण्डन लिखने के लिए तैयार हो जाए और उससे हम यह समझ लें कि हमने जो कुछ उत्तर देना था वह दे चुके। इसका परिणाम कभी अच्छा नहीं होता, और कभी एकान्त में रहने वाला एक भोला-भाला मुल्ला सादाह खण्डन लिखता है जिसे न क़ुर्आन के वास्तविक मआरिफ़ का पूरा ज्ञान होता है और न हदीसों के बारीक मायनों से कुछ सूचना और न सही रिवायतों और न इतिहास, न सद्‌बुद्धि, न उस शैली और पद्धति की कुछ ख़बर रखता है जिस पद्धति से वर्तमान की स्थिति पर असर पड़ सकता है। इसलिए ऐसे खण्डन के प्रकाशित होने से और भी शर्मिन्दगी होती है। अफ़सोस तो यह है कि अधिकतर ऐसे लोग जो स्वयं धार्मिक मुबाहसों के कार्यों में हाथ डालते हैं धार्मिक विद्याओं तथा दर्शनशास्त्रीय रहस्यों का बहुत ही कम ज्ञान रखते हैं और लिखने के समय नीयत में भी कुछ मिलावट होती है। इसलिए उनकी पुस्तकों में मान्यता और बरकत का रंग नहीं आता। यह युग एक ऐसा युग है कि इस युग में यदि कोई व्यक्ति धार्मिक बहसों के मैदान में क़दम रखे या विरोधियों के खण्डन में पुस्तकें लिखना चाहे तो उसमें निम्नलिखित शर्तें अवश्य होनी चाहिए।

प्रथम-अरबी भाषा के ज्ञान में ऐसा माहिर हो कि यदि विरोधी के साथ किसी शाब्दिक बहस का संयोग हो जाए तो अपने शब्द कोशीय ज्ञान

की शक्ति से उसे शर्मिन्दा और क़ायल करा सके और यदि अरबी भाषा में कुछ लिखने का संयोग हो जाए तो वक्तव्य की गंभीरता में विपक्षी पर बहरहाल विजयी रहे। भाषा का पूर्ण ज्ञान होने के रोब से विपक्षी को यह विश्वास दिला सकता हो कि वह वास्तव में ख़ुदा तआला के कलाम को समझने में उससे अधिक जानकारी रखता है अपितु उसकी यह योग्यता उसके देश में एक प्रसिद्ध घटना होनी चाहिए कि वह अरबी भाषा के ज्ञान में अद्वितीय है और इस्लामी मुबाहसों के मार्ग में प्राय: ऐसा होता है कि कभी शाब्दिक बहसें आरम्भ हो जाती हैं और वास्तविक अनुभव इस बात का गवाह है कि अरबी इबारतों के अर्थों का विश्वसनीय और अटल निर्णय बहुत कुछ भाषा के अक्षरीय और सन्धियों के ज्ञान पर निर्भर है। जो व्यक्ति अरबी भाषा से अनभिज्ञ और शब्दकोशीय कला की छानबीन के तरीकों से अपरिचित हो वह इस योग्य ही नहीं होता कि बड़े-बड़े संवेदनशील और महत्त्वपूर्ण मुबाहसों में क़दम रख सके और न उसका कलाम विश्वास के योग्य होता है और साथ ही प्रत्येक कलाम जो समाज के सामने आयेगा उसका आदर और महत्त्व बोलने वाले के आदर और महत्त्व के अनुसार होगा। फिर यदि बोलने वाला ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसके भाषाविद होने में विपक्षी तनिक चूँ-चरा नहीं कर सकता तो ऐसे व्यक्ति की कोई छानबीन जो अरबी भाषा से संबन्धित होगी, विश्वसनीय नहीं होगी। परन्तु यदि एक व्यक्ति जो मुबाहसा के मैदान में खड़ा है विपक्षियों की नज़र में एक प्रसिद्ध भाषाविद है और उसके मुक़ाबले पर एक मूर्ख ईसाई है तो न्यायकर्ताओं के लिए यही बात सन्तोषजनक होगी कि वह मुसलमान किसी वाक्य या किसी शब्द के अर्थ वर्णन करने में सच्चा है क्योंकि उसको भाषा का ज्ञान उस ईसाई से बहुत अधिक है और इस अवस्था में अकारण उसके कथन का दिलों पर प्रभाव पड़ेगा और

अत्याचारी विरोधियों का मुंह बन्द रहेगा।

याद रहे कि ऐसे शास्त्रार्थों में चाहे लिखित हों या मौखिक यदि वे पुस्तकीय हवालों (संदर्भों) पर आधारित हों तो वाक्यों या शब्दों पर बहस करने का बहुत बार संयोग पड़ जाता है अपितु ये बहसें अत्यन्त आवश्यक हैं क्योंकि उनसे वास्तविकता खुलती है और पर्दा उठता है तथा ज्ञान संबन्धी गवाहियां पैदा होती हैं। इसके अतिरिक्त यह बात भी इस शर्त को आवश्यक ठहराती है कि प्रत्येक विपक्षी अपने प्रतिद्वन्दी के मुक़ाबले पर ज्ञान की हैसियत परखता है और कोशिश करता है कि यदि और किसी मार्ग से नहीं तो इसी मार्ग से उसको लोगों की नज़र में अविश्वसनीय ठहराये। कभी कभी खण्डन लिखने वाले को अपने विरोधी की पुस्तक के संबंध में लिखना पड़ता है कि वह भाषाविद होने के दृष्टिकोण से किस स्तर का व्यक्ति है। अत: एक मुसलमान जो ईसाई हमलों के निवारण के लिए मैदान में आता है तो उसको याद रखना चाहिए कि एक बड़ा हथियार और अत्यन्त आवश्यक हथियार जो हर समय उसके हाथ में होना चाहिए अरबी भाषा का ज्ञान है।

दूसरी शर्त यह है कि ऐसा व्यक्ति जो विरोधियों का खण्डन लिखने पर और उनके हमलों का निवारण करने का इच्छुक होता है उसके धार्मिक ज्ञान में केवल यही पर्याप्त नहीं कि कुछ हदीसों और फ़िक़: तथा तफ़्सीर (व्याख्या) की पुस्तकों पर उसने महारत प्राप्त कर ली हो और केवल शब्दों पर नज़र डालने से मौलवी के नाम से नामांकित हो गया हो। अपितु यह भी आवश्यक है कि जांच-पड़ताल, खूब सोच-विचार, सूक्ष्मता, बात की तह तक जाने और विश्वसनीय प्रमाण पैदा करने की ईश्वर प्रदत्त योग्यता भी उसमें मौजूद हो। वास्तव में क़ौम का दार्शनिक और प्रतिभाषाली हो।

तीसरी शर्त यह कि किसी सीमा तक भौतिक शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र और भूगोल शास्त्र के ज्ञान में पकड़ रखता हो क्योंकि प्रकृति के नियमों के उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए या कुछ अन्य सहायक सबूतों के समय इन विद्याओं की जानकारी होना आवश्यक है।

चौथी शर्त यह कि ईसाइयों के मुक़ाबले पर बाइबल का वह आवश्यक भाग जो भविष्यवाणियों आदि में उल्लेखनीय होता है इब्रानी भाषा में याद रखता हो। हाँ यह सत्य है कि एक अरबी भाषा के विद्वान के लिए इतनी योग्यता प्राप्त करना अत्यन्त सरल है क्योंकि मैंने अरबी और इब्रानी के बहुत से शब्दों का मुक़ाबला करके सिद्ध कर लिया है कि 'इब्रानी' के चार भागों में से तीन भाग शुद्ध 'अरबी' है जो उसमें मिली हुई है और मेरी जानकारी में अरबी भाषा का एक पूर्ण विद्वान तीन महीनों में इब्रानी भाषा में एक पर्याप्त योग्यता प्राप्त कर सकता है। यह समस्त बातें पुस्तक 'मिननुर्रहमान' में मैंने लिखी हैं जिसमें सिद्ध किया गया है कि 'अरबी' सम्पूर्ण भाषाओं की जननी है।

पाँचवीं शर्त ख़ुदा तआला से वास्तविक सम्पर्क, सच्चाई, वफ़ा, ख़ुदा की मुहब्बत, निष्कपटता, आन्तरिक शुद्धता, उत्तम व्यवहार और अल्लाह के प्रति पूर्ण समर्पण है। क्योंकि धार्मिक ज्ञान आकाशीय (ख़ुदाई) ज्ञानों में से है और यह ज्ञान संयम, पवित्रता और अल्लाह के प्रेम से संबन्ध रखते हैं और सांसारिक कुत्ते को नहीं मिल सकते। अतः इसमें कोई सन्देह नहीं कि तर्क संगत कथन से समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करना नबियों और ख़ुदाई लोगों का काम है तथा अल्लाह तआला की बरकतों का पात्र होना (अल्लाह के लिए) मिट जाने वालों का मार्ग है। अल्लाह तआला फ़रमाता है-

لَّا يَمَسُّهُۥٓ إِلَّا ٱلْمُطَهَّرُونَ ﴿٨٠﴾ (अलवाक़िया-80)

अत: क्योंकर एक गन्दा, दोग़ली प्रवृति का व्यक्ति और संसार का उपासक उन आकाशीय बरकतों को पा सकता है जिनके बिना कोई विजय प्राप्त नहीं हो सकती? और उस दिल में रूहुल क़ुदुस कैसे बोल सकता है जिसमें शैतान बोलता हो? अत: कदापि आशा न करो कि किसी के भाषण में रूहानियत और बरकत तथा आकर्षण उस अवस्था में पैदा हो सके जबकि ख़ुदा के साथ उसके संबन्ध पवित्र नहीं है। परन्तु जो ख़ुदा में समर्पित होकर ख़ुदा की ओर से धर्म की सहायता के लिए खड़ा होता है वह ऊपर से प्रति पल बरकत पाता है और उसको परोक्ष से विवेक प्रदान किया जाता है तथा उसके मुख पर रहमत जारी की जाती है और उसके भाषण में मिठास डाली जाती है।

छठी शर्त- इतिहास का ज्ञान भी है क्योंकि कभी-कभी धार्मिक बहस करने वाले को इतिहास के ज्ञान से बहुत सहायता मिलती है। उदाहरणतया हमारे सय्यद-व-मौला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बहुत सी ऐसी भविष्यवाणियां हैं जिनकी चर्चा हदीस की पुस्तकों बुख़ारी और मुस्लिम में आ चुकी है और फिर उन पुस्तकों के प्रकाशित होने के सैंकड़ों वर्ष बाद घटित हो गई हैं तथा उस युग के इतिहासकारों ने अपनी पुस्तकों में उन भविष्यवाणियों का पूरा होना वर्णन कर दिया है। अत: जो व्यक्ति इस ऐतिहासिक परम्परा से बेख़बर होगा वह कैसे ऐसी भविष्यवाणियों को अपनी पुस्तक में वर्णन कर सकता है जिनका ख़ुदा की ओर से होना सिद्ध हो चुका है? या उदाहरणतया हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की वे ऐतिहासिक घटनाएं जो यहूदी इतिहासकारों और कुछ ईसाइयों ने भी उनके जीवन के उस भाग से संबन्धित लिखी हैं जो नुबुव्वत के साढ़े तीन वर्ष से पहले थीं या वे घटनाएं और झगड़े जो प्राचीन इतिहासकारों ने हज़रत मसीह और उनके सगे भाइयों से संबन्धित

लिखे हैं या वे इन्सानी कमज़ोरियों के बयान जो इतिहासों में हज़रत मसीह के जीवन के दोनों भागों से संबन्धित वर्णन किये गये हैं। ये सभी बातें इतिहास के बिना कैसे मालूम हो सकती हैं? मुसलमानों में ऐसे लोग बहुत कम होंगे जिनको इतना भी मालूम हो कि हज़रत ईसा वास्तव में पाँच सगे भाई थे, जो एक ही माँ के पेट से पैदा हुए और भाइयों ने आपके जीवन में आपको स्वीकार न किया अपितु आपकी सच्चाई पर उनको बहुत कुछ ऐतराज़ रहा। उन सबकी जानकारी प्राप्त करने के लिए इतिहास का देखना आवश्यक है और मुझे ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से यहूदी विद्वानों और कुछ ईसाई दार्शनिकों की वे पुस्तकें उपलब्ध हो गई हैं जिनमें यह मामले अत्यन्त विस्तारपूर्वक लिखे गए हैं।

सातवीं शर्त तर्कशास्त्र और मुबाहसे (शास्त्रार्थ) की विद्या में कुछ महारत होना है क्योंकि इन दोनों विद्याओं के अभ्यास से बुद्धि तीव्र होती है और बहस और तर्क द्वारा बात को सिद्ध करने की पद्धति में ग़लती बहुत ही कम होती है। हां अनुभव से यह भी सिद्ध हुआ है कि यदि स्वभाव में ख़ुदा का दिया हुआ प्रकाश, स्वभाव और अक़्लमन्दी न हो तो यह ज्ञान भी कोई लाभ नहीं दे सकता। बहुत से मूर्ख स्वभाव वाले मुल्ला क़ुत्बी, क़ाज़ी मुबारक बल्कि शेख़ुर्रईस की 'शिफ़ा' आदि पढ़कर विद्वान हो जाते हैं और फिर बात करने की योग्यता नहीं होती तथा दावे और प्रमाण में भी अन्तर नहीं कर सकते। यदि दावे के लिए कोई प्रमाण प्रसन्न करना चाहें तो एक दूसरा दावा पेश कर देते हैं जिसको अपनी अत्यन्त मूर्खता से प्रमाण समझते हैं जबकि वह भी एक सिद्ध करने योग्य दावा होता है अपितु कभी कभी पहले वाले से अधिक उलझाव और कठिनाई अपने अन्दर रखता है। परन्तु बहरहाल आशा की जाती है कि एक अक़्लमन्द स्वभाव का व्यक्ति जब वह नैयायिक विद्याओं का भी कुछ ज्ञान रखता

हो और तर्क-पद्धति से परिचित हो तो डींगें मारने के तरीक़ों से अपने बयान को बचा लेता है और विरोधियों के कल्पनात्मक तथा धोखा देने वाले भाषणों के रोब में नहीं आ सकता।

आठवीं शर्त लिखित या मौखिक मुबाहसों के लिए बहसकर्ता या लेखक के पास उन बहुत सी पुस्तकों का इकठ्ठा होना है जो अत्यन्त विश्वसनीय और प्रमाणित हैं जिनसे चालाक तथा झूठ गढ़ने वाले व्यक्ति का मुँह बन्द किया जाता और उसके झूठ की क़लई खोली जाती है। यह बात भी एक ख़ुदा की दी हुई बात है क्योंकि यह प्रमाणित पुस्तकों की फ़ौज जो झूठे का मुंह तोड़ने के लिए तेज़ हथियारों का काम देती है प्रत्येक को उपलब्ध नहीं हो सकती (इस कार्य के लिए हमारे सम्मानीय मित्र मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब का सम्पूर्ण पुस्तकालय हमारे हाथ में है और इसके अतिरिक्त और भी जिसकी कुछ सूची हाशिए में दी गई है। देखो पृष्ठ-6 शर्त-आठ से संबन्धित* हाशिया)

नौवीं शर्त भाषण या पुस्तक लेखन के लिए भौतिक इच्छाओं से मुक्ति और केवल धर्म की सेवा के लिए जीवन समर्पित करना है क्योंकि यह भी अनुभव में आ चुका है कि एक दिल से दो विभिन्न कार्य होने कठिन हैं। उदाहरणतया एक व्यक्ति जो सरकारी कर्मचारी है और अपने कर्त्तव्य की ज़िम्मेदारियां उसके गले पड़ी हुई हैं यदि वह धार्मिक पुस्तकें लिखने की ओर ध्यान देता है तो उस बेईमानी के अतिरिक्त जो उसने अपने बेचे हुए समय को दूसरे स्थान पर लगा दिया उस व्यक्ति के समान कदापि नहीं हो सकता जिसने अपने सम्पूर्ण समय को केवल इसी कार्य के लिए व्यस्त कर लिया है यहां तक कि उसका सम्पूर्ण जीवन उसी कार्य के लिए हो गया है।

*यह हाशिया पुस्तक के पृष्ठ 113 पर है। (प्रकाशक)

दसवीं शर्त भाषण या पुस्तक लेखन के लिए चमत्कारी शक्ति है। क्योंकि मनुष्य वास्तविक प्रकाश को प्राप्त करने के लिए और पूर्ण सन्तुष्टि पाने के लिए चमत्कारी शक्ति अर्थात् ख़ुदाई निशानों के देखने का मुहताज है तथा वह अन्तिम निर्णय है जो ख़ुदा तआला की ओर से होता है। इसलिए जो व्यक्ति इस्लाम के शत्रुओं के मुक़ाबले पर खड़ा हो और ऐसे लोगों को निरुत्तर करना चाहे जो चमत्कारों को क़ुदरत के विरुद्ध समझते हैं या हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विलक्षण निशानों और चमत्कारों का इन्कार करने वाले हैं तो ऐसे व्यक्ति को परास्त करने के लिए उम्मत-ए-मुहम्मदिया के वे बन्दे (दास) प्रमुख हैं जिनकी दुआओं के द्वारा कोई निशान प्रकट हो सकता है।

याद रहे कि धर्म से ख़ुदाई निशानों का घनिष्ट सम्बन्ध है और सच्चे धर्म के लिए आवश्यक है कि हमेशा उसमें निशान दिखलाने वाले पैदा होते रहें और वलियों को ख़ुदा तआला केवल शास्त्रीय ज्ञान पर नहीं छोड़ता और जो व्यक्ति केवल ख़ुदा तआला के लिए विरोधियों से बहस करता है उसको अवश्य ख़ुदाई निशान प्रदान किए जाते हैं। हां निःसन्देह समझो कि प्रदान किए जाते हैं ताकि आकाश का ख़ुदा अपने हाथ से उसको विजयी करे और जो व्यक्ति ख़ुदा तआला से निशान न पाये तो मैं डरता हूं कि वह छुपा हुआ बेईमान न हो क्योंकि क़ुर्आनी वादे के अनुसार ख़ुदाई सहायता उसके लिए नहीं उतरी।

ये दस शर्तें हैं जो उन लोगों के लिए आवश्यक हैं जो किसी विरोधी ईसाई का खण्डन लिखना चाहें या मौखिक मुबाहसा करें और इन्हीं का पालन करके कोई व्यक्ति पुस्तक "उम्महातुल मोमिनीन" का उत्तर लिखने के लिए निर्वाचित होना चाहिए। क्योंकि जिस प्रकार ईसाइयों ने जान तोड़ कर इस पुस्तक को प्रकाशित किया है और क़ानूनी पकड़ की भी कुछ

परवाह न करते हुए प्रत्येक मुसलमान को एक पुस्तक बिना मांगे भेजी और समस्त अंग्रेज़ी सरकार के समय के मुसलमानों का दिल दुखाया। इस सम्पूर्ण कार्यवाही से यही ज्ञात होता है कि यह अन्तिम हथियार उन्होंने चलाया है और अत्यन्त कठोर शब्द जो इस पुस्तक में प्रयोग किए गए हैं उनका कारण यह प्रतीत होता है कि ताकि मुसलमान उत्तेजित होकर अदालतों की ओर दौड़ें या सरकार में मैमोरियल भेजें और उस सीधे मार्ग पर न चलें जो ऐसे झूठे तौर पर गढ़े हुए आरोपों का वास्तविक और निश्चित इलाज है। अतः मैं देखता हूं कि यह चालाकी उनकी काम कर गई है और मुसलमानों ने इस कमीनी और गन्दी पुस्तक के मुक़ाबले में यदि कोई तदबीर सोची है तो बस यही कि इस पुस्तक की शिकायत के बारे में सरकार में एक मैमोरियल भेज दिया है। अतः 'अन्जुमन हिमायत-ए-इस्लाम' लाहौर को यही सूझी कि इस पुस्तक के बारे में सरकार के आगे रोते हुए फरियाद करे। परन्तु अफ़सोस कि इन लोगों को इस बात का तनिक भी ख़याल नहीं आया कि पादरी साहिबों का यही तो उद्देश्य था ताकि इस विपरीत तरीक़े को अपना कर मुसलमान लोग अपने करीम रब्ब की इस शिक्षा पर अमल करने से वंचित रहें कि جَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَن इस अफ़सोस और इस दर्दनाक ख़याल से जिगर टुकड़े-टुकड़े होता है कि एक और तो ऐसी पुस्तक प्रकाशित हो जिसके प्रकाशित होने से मूर्खों के दिलों में ज़हरीले असर फैलें और एक दुनिया नष्ट हो और दूसरी ओर इस ज़हरीली कार्रवाई के मुक़ाबले पर यह उपाय हो कि जो लोग मुसलमानों का हज़ारों रुपया इस उद्देश्य से लेते हैं कि वे धर्म के दुश्मनों का उत्तर लिखें उनकी केवल यह कार्रवाई हो कि दो-चार पृष्ठ का मैमोरियल सरकार में भेजकर लोगों पर ज़ाहिर करें कि जो कुछ हमने करना था कर दिया। जबकि सैकड़ों

बार स्वयं ही इस बात को स्पष्ट कर चुके हैं कि उनकी अन्जुमन के उद्देश्यों में से पहला उद्देश्य यही है कि वे उन आरोपों का उत्तर देंगे जो विरोधियों की ओर से समय समय पर इस्लाम पर किए जाएंगे। अत: जिन लोगों ने कभी उनकी पत्रिका अन्जुमन हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर को देखा होगा वह उस पत्रिका के आरम्भ में ही इस वादे को लिखा हुआ पाएंगे। हम नहीं कहते कि यह अन्जुमन जानबूझ कर इस कर्त्तव्य को जो उसके अपने वादे से प्रतिबद्ध है अपने सर पर से टालती है अपितु सत्य बात यह है कि वर्तमान अन्जुमन यह योग्यता ही नहीं रखती कि धर्म के बड़े मामलों में जीभ हिला सके या वे भ्रम और आरोप जो ईसाइयों की ओर से साठ साल से फैल रहे हैं पूर्ण जांच पड़ताल और बहुत सोच विचार से दूर कर सके या उस ज़हरीली हवा को जो देश में फ़ैल रही है किसी पुस्तक के द्वारा नष्ट कर सके। काश अच्छा होता कि यह अन्जुमन धार्मिक मामलों से अपना कोई संबन्ध व्यक्त न करती और उनकी समझ तथा बुद्धि का चक्कर केवल राजनीतिक मामलों की सीमा तक ही रहता।

हमारी निराशा 6 मई 1898 ई. के अख़बार आब्ज़रवर के देखने से और भी बढ़ गई क्योंकि उसके एडीटर ने जो अन्जुमन की ओर से वकालत कर रहा है स्पष्ट शब्दों में कह दिया है कि पुस्तक 'उम्महातुल मोमिनीन' का उत्तर लिखना समय के अनुकूल हरगिज़ नहीं है इसी को बहुत कुछ समझ लो जो अन्जुमन ने कर दिखाया। अर्थात् यह कि सरकार में मैमोरियल भेज दिया। आब्ज़रवर के लेख पर विचार करने से स्पष्ट मालूम होता है कि यह केवल एडीटर की ही राय नहीं है अपितु अन्जुमन का यही इरादा है कि इस पुस्तक का उत्तर कदापि नहीं देना चाहिए। अब बुद्धिमान सोच लें कि ऐसे उपायों से इस्लाम को क्या लाभ पहुँचता है। यदि सरकार उस व्यक्ति को जिसने ऐसी पुस्तक प्रकाशित

की कठोर से कठोर दण्ड भी दे दे तो और ज़हरीला प्रभाव जो उन गढ़े हुए झूठों का दिलों में बैठ गया वह कैसे उससे दूर हो जाएगा अपितु जहाँ तक मैं ख़याल करता हूं इस कार्यवाही से वह बुरा प्रभाव लोगों में और भी फैलेगा।

मैं बार-बार कहता हूं कि यदि हम यह चाहते हैं कि पादरियों की पुस्तकों का बुरा प्रभाव दिलों से मिटा दें तो यह मार्ग जो अन्जुमन ने अपनाया है कदापि इस सफलता के लिए वास्तविक मार्ग नहीं है अपितु हमें चाहिए कि वे तमाम आरोप जमा करके अत्यन्त शीघ्र और प्रमाण से भरे हुए शब्दों के साथ एक-एक का विस्तार पूर्वक उत्तर दें और इस प्रकार दिलों को उन अपवित्र भ्रमों से पवित्र करके इस्लामी प्रकाश को संसार पर प्रकट करें। मैं सच सच कहता हूं कि इस युग में जो पादरियों और दार्शनिकों के भ्रमों से नष्ट हो रहा है यह मार्ग पूर्णतः अनुचित है कि हम तर्क संगत उत्तर से मुंह फेर कर केवल दण्ड दिलाने की चिन्ता में लगे रहें। यद्यपि यह सत्य है कि हमारी उपकार करने वाली सरकार किसी जुर्म के सबूत पर पादरियों से तनिक भी रियायत नहीं कर सकती। परन्तु हम यदि अपनी सम्पूर्ण सफलता इसी को समझ लें कि सरकार के हाथ से किसी की कुछ कान खिंचाई हो जाए तो इस ख़याल में हम अत्यन्त गलती पर हैं। हे सीधे सादे और अन्जान लोगो! इन भ्रमों से मुसलमानों की सन्तान ख़राब होती चली जाती है। इसलिए आवश्यक और प्राथमिक बात यह है कि समस्त उपायों से पूर्व इस्लाम की ओर से उन आरोपों का उत्तर निकले जिनसे हज़ारों दिल गन्दे और ख़राब हो गए और हो जाते हैं। आरम्भ में नर्मी और क्षमा की यही पॉलिसी पादरियों ने भी अपनाई थी उनके मुक़ाबले पर लोग मौखिक मुक़ाबले में बहुत सख़्ती करते थे अपितु गालियां देते थे परन्तु उन लोगों में उन दिनों में सरकार के पास

कोई मैमोरियल नहीं भेजा और इसी तरह बर्दाश्त से अपने वसवसे दिलों में डालते गए यहां तक कि इस उपाय से हज़ारों नए ईसाई हमारे देश में पैदा हो गए।

हम इस बात के विरोधी नहीं हैं कि सरकार से एक सामान्य रूप से यह निवेदन हो कि मुबाहसों और पुस्तकों के लेखन को कुछ सीमित कर दिया जाए और ऐसी आज़ादी और धृष्टता से रोक दिया जाए जिस से क़ौमों में शान्ति भंग होने का भय हो। अपितु प्रथम इस कार्य के प्रेरक हम ही हैं और हमने अपने पिछले मैमोरियल में लिख भी दिया था कि यह उत्तम व्यवस्था कैसे और किस उपाय से हो सकती है। हाँ हम ऐसे मैमोरियल के कट्टर विरोधी हैं जो सामान्य रूप से नहीं अपितु एक ऐसे व्यक्ति के दण्ड के सम्बंध में ज़ोर दिया गया है जिसके वास्तविक आरोपों का उत्तर देना अभी हमारी ज़िम्मेदारी है क्योंकि क़ुर्आन करीम की शिक्षा के अनुसार हमारा कर्त्तव्य यह था कि हम गालियां देने वाले व्यक्ति की गालियों को अलग करके उसके वास्तविक आरोपों का उत्तर देते जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है-

جَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ط (अन्नहल-126)

क्योंकि यह बात अत्यन्त ख़तरों से भरी हुई और भयावह है कि हम आरोप लगाने वाले के आरोपों को अपनी हालत पर छोड़ दें और यदि ऐसा करें तो वे आरोप ताऊन (प्लेग) के कीड़ों की भांति दिन प्रतिदिन बढ़ते जाएंगे और हज़ारों शंकाएं लोगों के दिलों में पैदा हो जाएंगी। यदि सरकार ऐसे गालियां देने वाले को कुछ दण्ड भी दे तो वे शंकाएं उस दण्ड से कुछ कम नहीं हो सकतीं। देखो ये लोग जो इस्लाम पर आरोप लगाते हैं उदाहरणतया जैसे 'उम्महातुल मोमिनीन' का लेखक, इमादुददीन

और सफ़्दर अली आदि उनके मुर्तद् होने का भी यही कारण है कि उस समय नर्मी और हमदर्दी से काम नहीं लिया गया अपितु अधिकतर स्थानों पर तेज़ी और सख़्ती दिखाई गई तथा नम्रता से उनके सन्देहों को दूर नहीं किया गया। इसलिए इन लोगों ने इस्लामी बरकतों से वंचित रह कर मुर्तद होने का लिबास पहन लिया। अब इस्लाम पर हमला करने वाले अधिकतर यही लोग हैं जो क़ौम के कम ध्यान देने से परेशान होकर ईसाई हो गए। तनिक आँख खोलकर देखो कि ये लोग जो गालियां दे रहे हैं ये कोई यूरोप से तो नहीं आए इसी देश के मुसलमानों की सन्तान हैं जो इस्लाम से दूर होते-होते और ईसाइयों के शब्दों से प्रभावित होते-होते इस सीमा तक पहुंच गए हैं। वास्तव में ऐसे लाखों लोग हैं जिनके दिल ख़राब हो रहे हैं। हज़ारों स्वभाव ऐसे है जो बुरी तरह से बिगड़ गए हैं। इसलिए बड़ी बात और महत्त्वपूर्ण काम जो हमें करना चाहिए वह यही है कि हम नज़र उठाकर देखें कि देश कोढ़ियों की भांति होता जाता है और सन्देहों के विषैले पौधे अनगिनत सीनों में पनप गए हैं और पनपते जाते हैं। ख़ुदा तआला हमें सम्पूर्ण पवित्र क़ुर्आन में यही प्रेरणा देता है कि हम इस्लाम धर्म की वास्तविक यहायता करें और हमारा कर्त्तव्य होना चाहिए कि विरोधियों की ओर से एक भी ऐसा आरोप पैदा न हो जिसका हम पूर्ण जांच पड़ताल तथा छान बीन से उत्तर देकर सत्य के अभिलाषियों की पूर्ण सान्त्वना और सन्तुष्टि न करें।

परन्तु इस जगह यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या केवल इतना ही करना चाहिए कि पुस्तक उम्महातुल मोमिनीन के कुछ आरोपों का उत्तर दिया जाए? अत: मैं इसके उत्तर में बड़ा ज़ोर देकर यह मशवरा प्रस्तुत करता हूं कि वर्तमान ज़हरीली हवा को दूर करने के लिए केवल इतनी कार्यवाही कदापि पर्याप्त नहीं है। इसका ऐसा ही उदाहरण है कि हम कई

गन्दी नालियों में से केवल एक नाली को साफ करके फिर यह आशा रखें कि हमारा केवल इतना ही काम हवा की स्वच्छता के लिए पर्याप्त होगा। नहीं अपितु जब तक हम शहर की सम्पूर्ण नालियों को साफ न करें और वह सम्पूर्ण गन्दगी जो तरह तरह के आरोपों से विभिन्न स्वभावों में भरी हुई है दूर न कर दें। फिर वे प्रमाण और तर्कसंगत बातें प्रकाशित न करें जो इस दुर्गन्ध को पूर्णतया समाप्त करके उसके स्थान पर इस्लाम की पवित्र शिक्षा की सुगन्ध फैला दें तब तक मानो हमने इन्सानों की जान बचाने के लिए कोई भी काम नहीं किया।

इस बात का वर्णन करना आवश्यक नहीं कि पादरियों की शिक्षाओं से अत्यन्त हानि पहुँच चुकी है और देश में उन्होंने एक ऐसा ज़हरीला बीज बो दिया है जिससे इस देश का आध्यात्मिक जीवन अत्यन्त ख़तरे में है। यदि विचार करके देखो तो यह फसाद अधिकतर स्वभावों को ख़राब करता जाता और इस्लाम से दूर डालता जाता है। यह दो प्रकार का फसाद है -(1) एक तो वह जिसका अभी मैंने वर्णन किया है अर्थात् पादरियों की ज़हरीली पुस्तकों का फसाद। (2) दूसरा वह फसाद जो आधुनिक भौतिक विज्ञान आदि के फैलने से पैदा हुआ है जिस से बहुत से नये शिक्षित नास्तिक और अनीश्वरवादियों के रंग में नज़र आते हैं। न आस्थाओं की परवाह करते हैं और न कर्मों की तथा आज़ादी को अन्तिम सीमाओं तक पहुँचा दिया है। अब क़ौम और प्रजा की वास्तविक हमदर्दी यह नहीं है कि दो-चार बातों का उत्तर लिखकर ख़ुश हो जाएं।

इस स्थान पर याद रखना चाहिए कि इस आवश्यक कार्य को छोड़ कर यह दूसरी कार्यवाही कदापि लाभ न देगी कि उत्तेजित होकर सरकार में मैमोरियल भेजा जाए अपितु हम इस अवस्था में अपने समय और मेहनत को दूसरे कार्यों में व्यय करके वास्तविक इलाज और उपाय

के मार्ग को हानि पहुँचाने वाले होंगे। यदि इस राय में मेरे साथ एक भी व्यक्ति न हो और समस्त लोग इस बात पर सहमत हो जाएं कि इस ज़हरीली हवा को ठीक करने का वास्तविक इलाज यही है कि मैमोरियल पर मैमोरियल भेजा जाए और झूठे भ्रमों के उपचार की ओर ध्यान न दिया जाए तब भी मैं निस्सन्देह जानता हूँ कि ये समस्त लोग ग़लती पर हैं। और ऐसी कार्यवाहियां कदापि उस वास्तविक इलाज का स्थान नहीं ले सकतीं जिस से वे सम्पूर्ण भ्रम दूर हो जाएं जो सैंकड़ों दिलों में छुपे हुए हैं। अपितु यह तो बलपूर्वक मुँह बन्द करना होगा और यह भी नहीं कह सकते कि ऐसे निवेदनों में पूणतः सफलता भी हो क्योंकि विपक्षी के मुँह में भी जीभ है और वे भी जब देखेंगे कि यह कार्यवाही केवल एक से संबन्धित नहीं अपितु ईसाइयत के सम्पूर्ण मिशन पर हमला है तो मुक़ाबले पर ज़ोर लगाने में अन्तर नहीं करेंगे तथा इस अवस्था में मालूम नहीं कि अन्तिम परिणाम क्या होगा। सम्भवतः लज्जित होना पड़े। यह तो स्पष्ट है कि मैमोरियल भेजना एक मुकद्दमा उठाना है और प्रत्येक मुकद्दमा के दो पहलू होते हैं अब क्या पता है कि परिणाम किस पहलू पर हो। परन्तु यह विश्वसनीय बात है कि इस्लाम अत्यन्त पवित्र सिद्धान्त रखता है और प्रत्येक हमला जो विरोधियों की ओर से इस पर होता है यदि उसका विचार पूर्वक उत्तर दिया जाए तो केवल इतना ही न होगा कि हम आरोप का निवारण करेंगे अपितु आरोप के बजाए यह भी सिद्ध हो जाएगा कि जिस बात को मूर्ख विरोधी ने आरोप के योग्य समझा है वही एक ऐसी बात है जिस के अन्दर बहुत से आध्यात्मिक ज्ञान और दार्शनिक बातें भरी पड़ी हैं और इस प्रकार धार्मिक ज्ञान दिन प्रतिदिन उन्नति करेंगे और धार्मिक ज्ञान के हज़ारों सूक्ष्म रहस्य खुलेंगे।

याद रखना चाहिए कि सम्पूर्ण मुसलमानों पर अब यह अनिवार्य है

कि इस गुमराही के तूफान की अति शीघ्र चिन्ता करें परन्तु केवल इस प्रकार से कि इस कार्य के लिए एक व्यक्ति को नियुक्त करके नम्रता और सभ्यता के साथ ईसाइयों के आरोपों का खण्डन लिखवाएं। ऐसी पुस्तक में न केवल खण्डन होना चाहिए अपितु इस्लामी शिक्षाओं की अच्छाई, विशेषता और श्रेष्ठता भी ऐसी सरलता पूर्वक समझने योग्य शब्दों में लिखी होनी चाहिए जिससे प्रत्येक स्वभाव तथा योग्यता का व्यक्ति पूर्ण सन्तुष्टि प्राप्त कर सके। ऐसे लेखक को खण्डन के समय सोच लेना चाहिए कि मानो उसके सामने ऐसे लोगों की एक फ़ौज मौजूद है जिसमें से कुछ पुस्तकों के प्रमाण मांगने को तैयार बैठे हैं, कुछ लोग विवादास्पद वाक्यों की शाब्दिक बहसों के छेड़ने के लिए उत्सुक हैं और कुछ अकेले शब्दों के अर्थों पर झगड़ने के लिए खड़े हैं और कुछ पुस्तकीय रूप में अटल और विश्वसनीय तर्कों की मांग कर रहे हैं और कुछ प्रकृति के नियम मांगने के लिए भूखे-प्यासे हैं और कुछ लेखों की आध्यात्मिक बरकत और वर्णन शैली की मधुरता देखने की ओर झुके हुए हैं। तो जब तक कि पुस्तक में प्रत्येक स्वभाव का आदर-सत्कार न हो तब तक ऐसी पुस्तक सामान्य एवं विशेष वर्ग को स्वीकार नहीं हो सकती और उससे सार्वजनिक लाभ की उम्मीद रखना झूठी अभिलाषा है।

मैं बार-बार कहता हूं कि अब इन ज़हरीली हवाओं के चलने के समय जो उपाय करना चाहिए वह मेरे अनुसार यह है कि केवल यही बड़ा कार्य न समझें कि कोई मौलवी साहिब कुछ पृष्ठ 'उम्महातुल मोमिनीन' के खण्डन में लिखकर प्रकाशित कर दें अपितु इस समय एक व्यापक दृष्टि से उन समस्त आरोपों को देखना चाहिए जो उस ज़माने के आरम्भ से जबकि इस देश में पादरी साहिबों ने अपनी पुस्तकें और पत्रिकाएं प्रकाशित कीं इस समय तक कि पुस्तक उम्महातुल मोमिनीन प्रकाशित

हुई। इन आरोपों की संख्या कहां तक पहुँची है और उन आरोपों के साथ वे आरोप भी सम्मिलित कर लिए जाएं जो दार्शनिक दृष्टिकोण से किए गए हैं या डाक्टरी अनुसंधानों के अनुसार कुछ जल्दबाज़ मूर्खों ने प्रस्तुत कर दिए हैं। जब ऐसी विषय सूची जिसमें उन आरोपों का संग्रह हो तैयार हो जाए तो फिर उन समस्त आरोपों का उत्तर नम्रता और गंभीरता से पूर्ण धैर्य तथा बुद्धिमत्ता के साथ लिखना चाहिए।

नि:सन्देह यह काम बहुत ही बड़ा है जिसमें पादरी साहिबों की साठ साल की कार्यवाही को मिट्टी में मिलाना और नष्ट कर देना है, परन्तु हिम्मत वालों की ख़ुदा तआला सहायता करता है और ख़ुदा तआला का वादा है कि जो व्यक्ति उसके धर्म की सहायता करे वह स्वयं उसका सहायक होता है तथा उसकी आयु भी अधिक कर देता है। हे आदरणीय लोगो! वह यह ज़माना है जिसमें वही धर्म अन्य धर्मों पर विजयी होगा जो अपनी व्यक्तिगत शर्त से अपनी महानता दिखाए। अत: जैसा कि हमारे विरोधियों ने हज़ारों आरोप लगाकर यह इरादा किया है कि इस्लाम के प्रकाशमय और सुन्दर चेहरे को कुरूप तथा घृणित प्रकट करें। इसी प्रकार हमारे सम्पूर्ण प्रयास इसी कार्य के लिए होने चाहिएं कि इस पवित्र धर्म की अत्यन्त सुन्दरता और निर्दोष होना तथा मासूमियत को पूर्ण रूप से प्रमाणित कर दें। निस्सन्देह समझो कि गुमराहों की वास्तविक और निश्चित शुभ चिन्ता इसी में है कि हम झूठे और अधम आरोपों की ग़लतियों पर उनको सूचित करें तथा उनको दिखा दें कि इस्लाम का चेहरा कैसा प्रकाशमय, मुबारक और कैसा प्रत्येक दाग़ से पवित्र है। हमारा कार्य जो हमें अवश्य करना चाहिए वह यही है कि यह धोखा और गढ़ा हुआ झूठ जिसके द्वारा क़ौमों को इस्लाम के संबन्ध में भ्रमित किया गया है उसको जड़ से उखाड़ दें। यह कार्य सब कार्यों से प्राथमिक है जिसमें यदि हम

लापरवाही करें तो ख़ुदा और रसूल के गुनाहगार होंगे। इस्लाम की सच्ची हमदर्दी और पवित्र रसूल की सच्ची मुहब्बत इसी में है कि हम उन गढ़े हुए झूठों से अपने मौला व सय्यद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और इस्लाम का दामन पवित्र सिद्ध करके दिखाएं और भ्रमित दिलों को यह एक भ्रम का नया अवसर न दें कि जैसे हम बलपूर्वक हमला करने वालों को रोकना चाहते हैं और उत्तर देने से बचना चाह रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी राय और विचार का अनुकरण करता है परन्तु ख़ुदा तआला ने हमारे दिल को इसी बात के लिए खोला है कि इस समय और इस युग में इस्लाम की वास्तविक सहायता इसी में है कि हम उस बदनामी के बीज को जो बोया गया है और उन आरोपों को जो यूरोप और एशिया में फैलाए गए हैं जड़ से उखाड़ कर इस्लामी विशेषताओं के प्रकाश और बरकतें इतनी संख्या में अन्य क़ौमों को दिखाएं कि उनकी आंखें चकित जाएं तथा उनके दिल उन झूठे आरोप लगाने वालों से विमुख हो जाएं जिन्होंने धोखा देकर ऐसे बकवास प्रकाशित किए हैं और हमें उन लोगों के विचारों पर बहुत अफ़सोस है जो इसके बावजूद कि वे देखते हैं कि कितने ज़हरीले आरोप फैलाए जाते और जनता को धोखा दिया जाता है फिर भी वे कहते हैं कि इन आरोपों का खण्डन करने की कोई भी आवश्यकता नहीं। केवल मुक़दमे चलाना और सरकार में मैमोरियल भेजना पर्याप्त है। यह सत्य है कि हमारी उपकारी सरकार प्रत्येक को न्याय देने के लिए तैयार है। परन्तु हमें आँख खोल कर यह भी देखना चाहिए कि वह हानि जो क़ौम के विरोधियों के आरोपों से पहुँच रही है वह केवल यही नहीं कि उनके कठोर शब्दों से बहुत से दिल घायल हुए हैं अपितु एक भयानक हानि तो यह है कि प्राय: अनपढ़ और मूर्ख उन आरोपों को सत्य समझ कर इस्लाम से नफ़रत पैदा करते जाते हैं। अत:

जिस हानि का लोगों के ईमान पर असर है और जो हानि वास्तव में बहुत बड़ी है वही इस योग्य है कि सबसे पहले उसकी भरपाई की जाए। ऐसा न हो कि हम हमेशा दण्ड दिलाने की चिन्ताओं में ही लगे रहें और शैतानी भ्रमों से अज्ञानी लोग नष्ट हो जाएं। ख़ुदा तआला जो अपने धर्म और अपने रसूल के लिए हमसे अधिक स्वाभिमान रखता है वह हमें खण्डन लिखने की जगह-जगह प्रेरणा देकर गालियों के मुक़ाबले पर यह आदेश देता है कि "जब तुम अहले किताब वालों (यहूदी, ईसाई आदि अनुवादक) और मुश्रिकों (मूर्तीपूजकों था अनेकेश्वरवादियों) से दुःख देने वाली बातें सुनो और निश्चित है कि तुम अन्तिम युग में बहुत से दिल दुःखाने वाले शब्द सुनोगे। तो यदि तुम उस समय धैर्य धारण करोगे तो ख़ुदा के नज़दीक दृढ़ प्रतिज्ञ समझे जाओगे"। देखो यह कैसी नसीहत है और यह विशेष तौर पर इसी युग के लिए है क्योंकि ऐसा अवसर और इतना अपमान, तिरस्कार और गालियां सुनने का दृश्य इससे पहले कभी मुसलमानों को देखने का संयोग नहीं हुआ। यही युग है जिसमें करोड़ों अपमान और तिरस्कार पूर्ण की पुस्तकें लिखी गईं। यही युग है जिसमें हज़ारों आरोप केवल झूठे तौर पर हमारे नबी प्यारे नबी, हमारे सय्यद-व-मौला, हमारे हिदायत देने वाले और पेशवा जनाब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा, अहमद मुज्तबा श्रेष्ठ रसूल, सृष्टि में सर्वोत्तम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर लगाए गए। अतः मैं क़सम खा कर कह सकता हूं कि पवित्र क़ुर्आन में अर्थात् सूर:'आले इमरान' में यह आदेश हमें दिया गया है कि "तुम अन्तिम युग में बेईमान पादरियों और मुश्रिकों से दुःखदायक बातें सुनोगे तथा विभिन्न प्रकार के दिल दुखाने वाले शब्दों द्वारा परेशान किए जाओगे और ऐसे समय में ख़ुदा तआला के अनुसार धैर्य धारण करना उचित होगा।" यही कारण है कि हम बार-बार धैर्य के लिए प्रेरित

करते हैं और यही कारण है कि जब मुझ पर पादरियों की ओर से एक झूठा मुक़द्दमा क़त्ल का दायर किया गया तो इसके बावजूद कि कप्तान डगलस साहिब ज़िला मजिस्ट्रेट ने अच्छी तरह समझ लिया कि यह मुक़द्दमा झूठा है परन्तु जब उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या तुम इन पर मानहानि का दावा करना चाहते हो तो मैंने उसी क्षण खुले दिल से कह दिया (जिसको मजिस्ट्रेट साहिब ने ऐसे का ऐसे ही लिख लिया) कि मैं हरगिज़ नहीं चाहता कि दावा करूँ। इसका क्या कारण था? यही तो था कि ख़ुदा तआला हमें स्पष्ट रूप से पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है कि तुम अन्तिम युग में अहले किताब और मुश्रिकों द्वारा दुःख दिये जाओगे और दिल दुखाने वाली बातें सुनोगे उस समय यदि तुम बुराई का मुक़ाबला न करो तो यह बहादुरी का काम होगा। अतः मैं प्रत्येक मुसलमान को कहता हूं और कहूँगा कि तुम फ़साद का मुक़ाबला हरगिज़ न करो। ख़ाक हो जाओ और ख़ुदा को दिखाओ कि हमने किस प्रकार आदेश का पालन किया। धैर्य करने वालों के लिए बिना किसी बड़ी आवश्यकता के मैमोरियल की भी कुछ ज़रूरत नहीं क्योंकि यह कार्य भी बेसब्री का दाग़ अपने अन्दर रखता है। हाँ ख़ुदा ने हम पर अनिवार्य कर दिया है कि झूठे आरोपों को बुद्धिमत्ता और उत्तम सदुपदेश के साथ दूर करें और ख़ुदा जानता है कि कभी हमने उत्तर के समय नम्रता और धैर्य को हाथ से नहीं छोड़ा तथा हमेशा नम्र और कोमल शब्दों से काम लिया है सिवाए उस अवस्था के कि कभी-कभी विरोधियों की ओर से अत्यन्त अश्लील और उपद्रव पैदा करने वाली पुस्तकें पाकर हमने कुछ सख़्ती समय के अनुकूल हमने इस कारण की ताकि क़ौम इस प्रकार अपना बदला पाकर वहशियों जैसी उत्तेजना को दबाए रखे। और यह सख़्ती न किसी नफ़्स जोश से और न किसी उत्तेजना से अपितु केवल

आयत جَادِلْهُمْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَن ✶ पर अमल करके अवसर के अनुकूल प्रयोग में लाई गई और वह भी उस समय कि जब विरोधियों का अपमान, तिरस्कार और गालियां पराकाष्ठा तक पहुँच गईं तथा हमारे सय्यद-व-मौला, सरवर-ए-क़ाइनात, फ़ख़्रे मौजूदात के सम्बन्ध में ऐसे गन्दे और फसाद से भरे हुए शब्द उन लोगों ने प्रयोग किए जिनसे निकट था कि शान्ति भंग हो जाए तो उस समय हमने इस नीति को ग्रहण किया कि एक ओर तो उन लोगों के गन्दे आरोपों के मुक़ाबले पर कुछ स्थानों पर थोड़ी कड़वाहट अपनाई और दूसरी और इस उपदेश का सिलसिला भी जारी रखा कि अपनी उपकारी सरकार के आदेश का पालन करो और ग़रीबी अपनाओ और वहशियों जैसे व्यवहार को छोड़ दो। अतः यह एक दार्शनिक प्रणाली थी जो केवल सामान्य उत्तेजना को दबाने के लिए कभी-कभी आवश्यकता के अनुसार हमें धारण करनी पड़ी ताकि इस्लाम के अनुयायी इस प्रकार अपने जोशों को पूरा करके अभद्र एवं वहशियों जैसे व्यवहार से बचे रहें। यह एक ऐसा उपाय है जैसे किसी की अफ़ीम छुड़ाने के लिए उसको नरबसी खिलाई जाए जो कड़वाहट में अफ़ीम जैसी और लाभों में उससे अलग है। वे लोग अत्यन्त अत्याचारी और दुष्टात्मा हैं जो हम पर यह आरोप लगाते हैं कि जैसे हमने ही कठोरता से बोलने की नींव रखी। हम इसका इसके अतिरिक्त क्या उत्तर दें कि لَعْنَتُ اللّٰهِ عَلَی الْکَاذِبِیْنَ۔ जो व्यक्ति न्याय के इरादे से इस मामले में राय व्यक्त करना चाहता है उस पर इस बात का समझना कुछ मुश्किल नहीं कि हमारी प्रथम पुस्तक जो दुनिया में प्रकाशित हुई बराहीन अहमदिया है जिस से पहले पादरी इमादुददीन की गन्दी पुस्तकें और इन्दरमन मुरादाबादी

✶यहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सूरह अन्नहल की आयत 126 का हवाला दे रहे हैं जो यह है- اُدعُ إِلیٰ سَبِیلِ رَبِّكَ بِالحِکمَةِ وَالمَوعِظَةِ الحَسَنَةِ وَجادِلھُم بِالَّتی هِیَ أَحسَنُ (प्रकाशक)

की अत्यन्त सख़्त तथा अश्लील पुस्तकें, कन्हैयालाल अलखधारी की फ़साद फैलाने वाली पुस्तकें और दयानन्द की वह 'सत्यार्थ-प्रकाश' जो अभद्रता, गालियों और अपमान से भरी हुई है देश में प्रकाशित हो चुकी थीं और हमारे इस देश के मुसलमान इन पुस्तकों से इतने भड़के हुए थे जिस प्रकार लोहा एक समय तक आग में रखने से आग ही बन जाता है परन्तु हमने बराहीन अहमदिया में बहस की एक उचित प्रणाली प्रयोग करके उन जोशों को शान्त किया और उन भावनाओं को दूसरी ओर खींच कर ले आये जैसा कि एक दक्ष डॉक्टर मुख्य अंगों (दिल,दिमाग, जिगर आदि) से एक तत्त्व की दिशा फेर कर उसको किसी दूसरी ओर झुका देता है और इसके बावजूद कि बराहीन अहमदिया उन ईसाइयों और आर्यों के उत्तर में लिखी गई थी जिन्होंने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में अपमान और गालियों को पराकाष्ठा तक पहुँचा दिया था। परन्तु तब भी कथित पुस्तक अत्यन्त नम्रता और सम्मानपूर्वक लिखी गई सिवाए उन आवश्यक हमलों के जो अपने स्थान पर पूर्णतः उचित थे जिनका वर्णन प्रत्येक बहस करने वाले के लिए झगड़ों को समाप्त करते हुए आवश्यक होता है अन्य कोई कठोर शब्द उस पुस्तक में नहीं है और मान लो यदि होता भी तो कोई न्यायप्रिय जिसने इमादुद्दीन, इन्दरमन और कन्हैयालाल की पुस्तकें तथा दयानन्द सरस्वती का सत्यार्थ प्रकाश पढ़ी हो हम पर बिल्कुल आरोप नहीं लगा सकता। क्योंकि उन पुस्तकों की तुलना में जो कुछ किसी किसी स्थान पर कठोरता प्रयोग की गई है उसकी तुलना उन पुस्तकों की अभद्रता, गालियों, अपमान और तिरस्कार के ढेरों से ऐसी ही जैसे एक कण की किसी पहाड़ से हो सकती है। इसके अतिरिक्त जो कुछ हमारी पुस्तकों में निवारण के तौर पर लिखा गया है वह वास्तव में उन व्यक्तियों का दोष था जिन्होंने अपनी अभद्रता

से हमें उन पुस्तकों के लिए विवश किया। उदाहरणतया यदि ज़ैद केवल दुष्टता से बकर को यह कहे कि तेरा बाप अत्यन्त अयोग्य था और बकर उसके जवाब में यह कहे कि नहीं अपितु तेरा ही बाप ऐसा था तो इस अवस्था में यह सख़्ती जो बकर के शब्दों में पाई जाती हैं बकर की ओर सम्बद्ध नहीं हो सकती क्योंकि वास्तव में ज़ैद ने स्वयं ही अपने कटु शब्दों से बकर को प्रेरित किया है। अत: अल्लाह तआला जानता है कि यही हाल हम लोगों का है। उस व्यक्ति की हालत पर न एक अफ़सोस अपितु हज़ार अफ़सोस जिसने इस वास्तविक घटना को नहीं समझा या जानबूझ कर झूठे आरोप और झूठ को किसी अपने स्वार्थ के लिए प्रयोग में लाया है। यदि अन्जुमन हिमायत इस्लाम या उसके सहायकों की यह राय है जैसा कि 6 मई 1898 ई. के अख़बार ऑबज़रवर से ज्ञात होता है कि वास्तव में सम्पूर्ण कठोर शब्द इस्लाम के एक समूह से अर्थात् इस विनीत की ओर से ही प्रकट हुए हैं अन्यथा इससे पहले समस्त हमला करने वालों की पुस्तकें सभ्यतापूर्ण थीं और कोई कठोर शब्द उनकी पुस्तकों में न था तो ऐसी राय जितने अत्याचार, झूठ और बेईमानी से भरी हुई है उसको बताने की आवश्यकता नहीं प्रत्येक व्यक्ति स्वयं प्रकाशित होने की तिथि देख कर निर्णय कर सकता है कि क्या हमारी पुस्तकें उनके कठोर शब्दों से पहले लिखी गईं या निवारण के तौर पर बाद में।

हमारे विरोधियों ने जितनी हम पर सख़्ती की और जितना ख़ुदा से निडर होकर अत्यन्त असभ्यता से हमारे धर्म और हमारे धर्म के पेशवा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ख़ातमुन्नबिय्यीन पर हमले किए वह ऐसा मामला नहीं है कि किसी से छुपा रह सके। परन्तु क्या यह सम्पूर्ण हमले मेरे कारण हुए? क्या इन्द्रमन का 'इन्द्र' सिवाय इस्लाम के और दूसरे गन्दे

और अपवित्र पत्रिकाएं जिनमें गालियों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था उन समस्त पुस्तकों के लिखे जाने का मैं ही कारण था? और क्या दयानन्द की वह पुस्तक जिसका नाम सत्यार्थ प्रकाश था जो बराहीन अहमदिया से दो वर्ष पूर्व प्रकाशित हो चुकी थी क्या वह मेरे उक्साने के कारण लिखी गई? क्या यह सच नहीं कि उसमें वे सख़्त और अपमानजनक शब्द इस्लाम धर्म और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में लिखे गए हैं जिनको सुनने से कलेजा कांपता है। तो क्या इससे सिद्ध नहीं होता कि मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया के लिखे जाने से पहले आर्य साहिबों ने कठोर शब्दों को पराकाष्ठा तक पहुँचा दिया था? यदि कोई दोनों पक्षों की पुस्तकों की तुल्ना करे और पुस्तकों को एक दूसरे के मुक़ाबले पर खोलकर देखे तो मालूम होगा कि यद्यपि कुछ सख़्ती निवारण के तौर पर अत्यन्त दुःख उठाने के बाद हमारी ओर से भी प्रकट हुई है जिसका कारण और जिसके प्रयोग करने की नीति और उसके लाभकारी परिणाम अभी हम लिख चुके हैं परन्तु फिर भी मुक़ाबले पर वह सख़्ती कुछ भी चीज़ नहीं थी। प्रत्येक स्थान पर विरोधियों के बड़ों और पेशवाओं का नाम सम्मानपूर्वक लिखा गया था और उद्देश्य यह था कि हमारी इस नम्रता और सभ्यता के बाद हमारे विरोधी अपनी पुरानी आदतों में कुछ सुधार करें परन्तु लेखराम की पुस्तकों ने सिद्ध कर दिया कि यह आशा भी ग़लत थी। हम नहीं चाहते कि इस अनुचित घटना को छेड़ें, हमें केवल उन लोगों की हालत पर अफ़सोस होता है जिन्होंने सत्य का ख़ून करके हम पर यह आरोप लगाना चाहा कि मानो विरोधियों के मुक़ाबले पर सम्पूर्ण कठोरताओं, गालियों और सम्पूर्ण अपमान तथा अनादर के शब्दों का आरम्भ हमारी ओर से ही हुआ है। ये वही लोग हैं जो इस्लाम की सहायता का दम भरते हैं जिनका यह विचार है कि मानो कठोर शब्दों का

प्रयोग हमारे स्वभाव का अभिन्न अंग है जिसने सभ्य विरोधियों को जोश दिलाया। यदि इस दयनीय अन्जुमन की यह राय है जिसको ऑब्ज़रवर ने प्रकाशित किया है तो उसने बड़ी ग़लती की कि सरकार की सेवा में पादरियों की शिकायत में मैमोरियल भेज दिया क्योंकि जबकि मेरी ही तहरीक और जोश दिलाने से यह सब पुस्तकें लिखी गई हैं तो न्याय की प्रक्रिया तो यह थी कि मेरी शिकायत में मैमोरियल भेजते।

मैं सच्चे दिल से इस बात को भी लिखना चाहता हूं कि यदि किसी की दृष्टि में यही सत्य है कि गालियों की बुनियाद डालने वाला मैं ही हूं और मेरी ही पुस्तकों ने दूसरी क़ौमों को अपमान और तिरस्कार का जोश दिलाया है तो ऐसा विचार करने वाला चाहे ऑब्ज़रवर का एडीटर हो या अन्जुमन हिमायते इस्लाम लाहौर का कोई सदस्य या कोई अन्य समूह सिद्ध कर दिखाए कि यह सम्पूर्ण सख़्त कलामी जो पादरी फन्डल से आरम्भ होकर उम्महातुल-मोमिनीन तक पहुँची या जो इन्दरमन से आरम्भ होकर लेखराम पर समाप्त हुई मेरे ही कारण प्रकट हुई थी तो मैं ऐसे व्यक्ति को जुर्माने को तौर पर हज़ार रुपए नक़द देने को तैयार हूं क्योंकि यह बात वास्तव में सत्य है कि जिस हालत में एक ओर मेरा यह सिद्धान्त है कि विरोधियों के साथ कदापि अपनी ओर से सख़्ती का आरम्भ नहीं करना चाहिए और यदि वे स्वयं करें तो जहाँ तक हो सके सब्र करना चाहिए सिवाए उस अवस्था के कि जब जनता का जोश दबाने के लिए समय के अनुकूल क़दम उठाना उचित प्रतीत होता हो और फिर दूसरी ओर व्यावहारिक कार्रवाई मेरी यह हो कि यह क़यामत (प्रलय) का सम्पूर्ण शोर मैंने ही उठाया हो जिसके कारण हमारे विरोधियों की ओर से हज़ारों पुस्तकें लिखकर देश में प्रकाशित की गईं और हज़ारों प्रकार के अपमान और तिरस्कार प्रकट हुए यहां तक कि क़ौमों में परस्पर

अत्यधिक मतभेद तथा शत्रुता पैदा हो गई तो इस अवस्था में नि:सन्देह मैं प्रत्येक जुर्माने और दण्ड का पात्र हूं और यह निर्णय कुछ कठिन नहीं यदि कोई एक घण्टे के लिए हमारे पास बैठ जाए तो जैसे कि एक शक्ल आईने (दर्पण) में दिखाई जाती है वैसे ही यह सम्पूर्ण घटनाएं बिना न्यूनाधिक पुस्तकों की तुलना करके हम दिखा सकते हैं।

यह चर्चा तो जुम्ल-ए-मो'तरिज़* की भांति मध्य में आ गई। अब मैं वास्तविक अभिप्राय की ओर लौट कर कहता हूं कि यह पॉलिसी कदापि सही नहीं है कि हम विरोधियों से कोई कष्ट उठाकर कोई जोश दिखाएं या अपनी सरकार की सेवा में प्रार्थना करें। जो लोग ऐसे धर्म का दम भरते हैं जैसा कि इस्लाम जिसमें यह शिक्षा है कि

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ (आले इमरान-111)

अर्थात् तुम एक न्याय पर प्रतिष्ठित उम्मत हो जो सम्पूर्ण जन समुदाय के लाभ के लिए उत्पन्न की गई हो। क्या ऐसे लोगों को शोभा देता है जो बजाए लाभ पहुँचाने के आए दिन मुकद्दमे करते हैं। कभी मैमोरियल भेजें और कभी फ़ौजदारी में अत्याचार की शिकायत कर दें और कभी उत्तेजना प्रकट करें और धैर्य का नमूना कोई भी न दिखाएं। तनिक विचार करके देखना चाहिए कि जो लोग समस्त भटके हुए लोगों को दया की दृष्टि से देखते हैं उनके बड़े बड़े हौसले चाहिएं। उनकी प्रत्येक क्रिया और प्रत्येक विचार सब्र तथा सहनशीलता के रंग से रंगीन होना चाहिए। अत: जो शिक्षा ख़ुदा ने हमें पवित्र क़ुर्आन में इस बारे में दी है वह पूर्णत सही और उच्च कोटि की दार्शनिकताओं को अपने अन्दर रखती है जो हमें सब्र करना सिखाती है। यह एक विचित्र संयोग है कि

---

*लेख या भाषण के मध्य ऐसा वाक्य जो किसी अन्य विषय से सम्बंधित हो और मूल विषय से उसका कोई सम्बद्ध न हो। (अनुवादक)

जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम रूमी साम्राज्य के अधीन ख़ुदा तआला की ओर से नियुक्त होकर आए तो ख़ुदा तआला ने शिक्षा दी कि बुराई का मुक़ाबला कदापि न करना अपितु एक ओर थप्पड़ खा कर दूसरी ओर फेर दो। और यह शिक्षा उस कमज़ोरी के युग के अत्यन्त अनुकूल थी। ऐसा ही मुसलमानों को वसीयत की गई थी कि उन पर भी एक कमज़ोरी का युग आएगा उसी युग के समान जैसा हज़रत मसीह पर आया था और बल दिया गया था कि उस युग में और ग़ैर क़ौमों से कठोर बातें सुनकर और अत्याचार देखकर सब्र करें।अतः बधाई हो उन लोगों को जो इन आयतों पर अमल करें और ख़ुदा के दोषी न बनें। पवित्र क़ुर्आन को ध्यानपूर्वक देखें कि उसकी शिक्षा इस विषय में दो पहलू रखती है। एक- इस कथन के सम्बंध में है कि जब पादरी आदि विरोधी हमें गालियां दें और कष्ट दें तथा विभिन्न प्रकार के अपशब्द हमारे धर्म और हमारे नबी अलैहिस्सलाम और हमारे हिदायत के दीपक पवित्र क़ुर्आन के सम्बंध में कहें तो इस अवस्था में हमें क्या करना चाहिए। दूसरा पहलू- इस कथन से सम्बन्धित है कि जब हमारे विरोधी हमारे धर्म इस्लाम और हमारे मुक़्तदा (अनुकर्णीय) और पेशवा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा पवित्र क़ुर्आन से सम्बन्धित धोखा देने वाले आरोप प्रकाशित करें और प्रयत्न करें कि ताकि दिलों को सत्य से दूर कर दें तो उस समय हमारा क्या कर्त्तव्य है। यह दोनों आदेश ऐसे आवश्यक थे कि मुसलमानों को याद रखने चाहिए थे। परन्तु अफ़सोस है कि अब मामला विपरीत है और जोश में आना तथा विरोधी कष्ट देने वाले की चिन्ता में लग जाना ही धार्मिकता का पाउडर हो गया है और मानवीय नीति को ख़ुदा की सिखाई हुई नीति पर प्राथमिकता दी जाती है। जबकि हमारे धर्म की समयानुकूलता और हमारी भलाई और लाभ इसी में है कि हम मानवीय योजनाओं की कुछ भी परवाह न करें तथा ख़ुदा तआला की हिदायतों पर

क़दम मार कर उसकी दृष्टि में सैभाग्यशाली ठहर जाएं। ख़ुदा ने हमें उस समय के लिए कि जब हमारे धर्म का अपमान किया जाए और हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्बन्ध में सख्त शब्दों का प्रयोग किया जाए स्पष्ट तौर पर आदेश दिया है जो सूरह आले-इमरान के अन्त में लिखा हुआ है और वह यह है:-

وَ لَتَسۡمَعُنَّ مِنَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ وَ مِنَ الَّذِيۡنَ اَشۡرَكُوۡۤا اَذًى كَثِيۡرًا ؕ وَ اِنۡ تَصۡبِرُوۡا وَ تَتَّقُوۡا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنۡ عَزۡمِ الۡاُمُوۡرِ ﴿۱۸۷﴾ (आले-इमरान-187)

अर्थात् तुम अहले-किताब और अन्य सृष्टि उपासकों से बहुत सी कष्टदायक बातें सुनोगे तब यदि तुम सब्र करोगे और अन्याय से बचोगे तो तुम ख़ुदा के निकट साहसी गिने जाओगे। ऐसा ही उस दूसरे समय के लिए कि जब हमारे धर्म पर आरोप लगाए जाएं यह आदेश दिया है-

وجَادِلۡهُمۡ بالحكمة والموعظة الحسنة★ ---- وَلۡتَكُنۡ مِّنۡكُمۡ اُمَّةٌ يَّدۡعُوۡنَ اِلَى الۡخَيۡرِ وَ يَاۡمُرُوۡنَ بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَ يَنۡهَوۡنَ عَنِ الۡمُنۡكَرِ ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿۱۰۵﴾
(आले-इमरान-105)

अर्थात् जब तू ईसाइयों से धार्मिक बहस करे तो बुद्धिमत्ता से उचित तर्कों के साथ कर, और चाहिए कि तेरा उपदेश प्रशंसनीय ढंग से हो और तुम में से हमेशा ऐसे लोग होने चाहिएं जो भलाई की ओर बुलाएं दें और ऐसी बातों की ओर लोगों को बुलाएं जिनकी सच्चाई पर बुद्धिमत्ता आकाशीय सिलसिला गवाही देते रहे हैं। और ऐसी बातों से मना करें जिनकी सच्चाई से बुद्धि और आकाशीय सिलसिले इन्कार करते हैं। जो लोग इसके अनुसार आचरण करें और इस प्रकार मानवता को लाभ

★ यहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सूरह अन्नहल की आयत 126 का हवाला दे रहे हैं जो यह है-

اُدۡعُ اِلٰى سَبِيۡلِ رَبِّكَ بِالۡحِكۡمَةِ وَ الۡمَوۡعِظَةِ الۡحَسَنَةِ وَ جَادِلۡهُمۡ بِالَّتِىۡ هِىَ اَحۡسَنُ
(प्रकाशक)

पहुँचाते रहें तो वही हैं जो मुक्ति पा गए।

फिर इसके बाद अल्लाह तआला ने एक और आयत में इन दोनों पहलुओं को एक ही स्थान पर एकत्र करके वर्णन कर दिया है और वह आयत यह है-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَ صَابِرُوْا وَ رَابِطُوْا ۟ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۲۰۱﴾ (आले-इमरान-201)

अर्थात् हे ईमान वालो! शत्रुओं के कष्टों पर सब्र करो और इसके बावजूद मुक़ाबले में मज़बूत रहो तथा काम में लगे रहो और ख़ुदा से डरते रहो ताकि तुम मुक्ति पा जाओ। अत: इस पवित्र आयत में भी हमें अल्लाह तआला का यही निर्देश है कि हम मूर्खों के अपमान, तिरस्कार, अपशब्दों और गालियों से मुंह फेर लें और इन उपायों में अपना समय बरबाद न करें कि किस प्रकार हम भी उनको दण्ड दिलाएं★ बुराई के मुक़ाबले पर बुराई का इरादा करना एक सामान्य बात है ख़ूबी में शामिल नहीं। मानवता की ख़ूबी यह है कि जहां तक सामर्थ्य हो गालियों के मुक़ाबले पर मुंह फेरना और क्षमा करने की आदत को ग्रहण करें।

यह भी तो सोचो कि पादरी साहिबों का धर्म एक प्रशासनिक धर्म है अत: हमारे सम्मान की यह मांग होनी चाहिए कि हम अपनी धार्मिक स्वतन्त्रता को एक माध्यम से स्वतन्त्रता समझें और इस प्रकार एक सीमा तक पादरी साहिबों के उपकार के भी क़ायल रहें। सरकार यदि उनसे पूछताछ करे तो हम कितने पूछ ताछ के योग्य ठहरेंगे। यदि हरे वृक्ष काटे जाएं तो फिर सूखे वृक्षों की क्या बुनियाद है? क्या ऐसी अवस्था में हमारे

★ मेरी जमाअत ने जो ज़टल्ली की गालियों पर मैमोरियल भेजा है वह दण्ड दिलाने की इच्छा से नहीं अपितु इसलिए कि ये लोग केवल झूठे तौर पर सख्त कलामी का आरोप लगाते थे। अत: सरकार और जनता को दिखाया गया है कि इन लोगों की नम्रता औऱ सम्मान इस प्रकार का है। इस से अधिक उस मैमोरियल में कोई निवेदन दण्ड आदि का नहीं है।

हाथ में क़लम रह सकेगी? अतः होशियार हो कर आश्रित स्वन्त्रता की क़दर करो और इस उपकारी सरकार को दुआएं दो जिसने सम्पूर्ण समाज को एक ही दृष्टि से देखा। यह अत्यन्त अनुचित और सर्वथा अनुचित है कि पादरियों के सम्बन्ध में सरकार से शिकायत करें हाँ जो सन्देह और आरोप लगाए गए और जो झूठे आरोप प्रकाशित किए गए उनको जड़ से उखाड़ना चाहिए और वह भी नम्रता से तथा सत्य और बुद्धिमत्ता के सहयोगी होकर संसार को लाभ पहुंचाना चाहिए और हज़ारों दिलों को सन्देहों के बन्दीग्रहों से मुक्ति दिलानी चाहिए। यही कार्य है जिसकी अब हमें अत्यन्त आवश्यकता है। यह सत्य है कि मुसलमानों ने इस्लाम की सहायता के दावे पर जगह-जगह अन्जुमनें बना रखी हैं। लाहौर में भी तीन अन्जुमनें हैं लेकिन प्रश्न तो यह है कि इसके बावजूद ईसाईयों की ओर से दस करोड़ के लगभग विरोधी पुस्तकें और पत्रिकाएं निकल चुकी हैं और तीन हज़ार के लगभग ऐसे ऐतराज़ात प्रकाशित हो चुके हैं जिनका उत्तर देना मौलवियों और अन्जुमनों का कर्त्तव्य था जिन्होंने प्रत्येक पुस्तक में यह दावा किया है कि हम विरोधियों के प्रश्नों के उत्तर देंगे इन हमलों का इन अन्जुमनों ने क्या बन्दोबस्त किया और कौन-कौन सी लाभकारी पुस्तकें संसार में फैलाईं। हम उनके अनुसार काफ़िर सही, दज्जाल सही, सख़्त बोलने वाले सही परन्तु इन लोगों ने इस्लाम के हज़ारों रुपए एकत्रित करने के बावजूद इस्लाम की वास्तविक सहायता क्या की। शायद प्रचलित विद्याओं की शिक्षा का बड़े से बड़ा परिणाम यह होगा कि ताकि लड़के शिक्षा प्राप्त करके उचित नौकरी पायें और यतीमों (अनाथों) के पालन-पोषण का परिणाम भी इससे बढ़कर कुछ मालूम नहीं होता कि बच्चे मुसलमान होने की हालत में वयस्क और कुछ थोड़ा बहुत पढ़ना सीख जाएं। परन्तु आगे जो करोड़ों प्रकार के झूठ के

जाल वयस्कों के मार्ग में बिछे हैं उनसे बचने का कोई उपाय नहीं बताया गया। क्या कोई बता सकता है कि किसी अन्जुमन ने उनसे सुरक्षित रहने का क्या प्रबन्ध किया? परन्तु यदि ऐसी ही शिक्षा है जिसमें विरोधियों के समस्त हमलों से पूर्णत: सावधान नहीं किया जाता और यतीमों का ऐसा ही पालन-पोषण है कि उनको जवान और वयस्क कर देना ही पर्याप्त है तो यह सम्पूर्ण कार्य इस्लाम के शत्रुओं के लिए है न कि इस्लाम के लिए। यदि यह कार्य इस्लाम के लिए होता तो सबसे पहले इस बात का प्रबन्ध होना चाहिए था कि यह आरोप जो ईसाइयत, दर्शन शास्त्र, आर्य समाजियों और ब्रह्म समाजियों के हैं जिनकी संख्या तीन हज़ार तक पहुँच गई है अत्यन्त स्पष्टता पूर्वक, छानबीन और जांच-पड़ताल से उनका उत्तर प्रकाशित किया जाता और केवल यह पर्याप्त नहीं कि 'उम्महातुल मोमिनीन' के कुछ पृष्ठों का उत्तर लिखा जाए अपितु अनिवार्य है कि पादरियों की साठ वर्ष की कार्रवाई और ऐसा ही वे सम्पूर्ण दर्शन शास्त्र और भौतिक शास्त्र से संबंधित आरोप जो उसके साथ कदम मिलाकर चले आए हैं और ऐसा ही आर्य समाज के आरोप जो नवीन क्रान्ति से उनको सूझे हैं। उन समस्त आरोपों की एक सूची तैयार हो और फिर क्रमश: कई भागों में इस कूड़े-कर्कट को सत्य की एक प्रकाशमय और भड़कती हुई आग से नष्ट कर दिया जाए।

यह कार्य है जो इस ज़माने में इस्लाम के लिए करना आवश्यक है यही वह कार्य है जिस से नई पीढ़ी की नाव डूबने से बच रहेगी। और यही वह कार्य है जिससे इस्लाम का प्रकाशमय और सुन्दर चेहरा पूरब और पश्चिम में अपनी चमक दिखाएगा। इस कार्य के लिए ये बातें स्थानापन्न हरगिज़ नहीं हो कि सकतीं यतीमों की परवरिश की जाए या प्रचलित विद्याओं या किसी अन्य रोज़गार की उनको शिक्षा दी

जाए या कहने के लिए रस्म और आदत के तौर पर इस्लाम के आदेश तथा अनिवार्य शिक्षाएं उनको सिखाई जाएं। वे लोग जो इस्लाम से मुर्तद होकर ईसाइयों में जा मिले हैं जो संभवत: एक लाख के लगभग पंजाब और हिन्दुस्तान में मौजूद होंगे क्या वे इस्लाम के आदेशों और अनिवार्य शिक्षाओं से अपरिचित थे? क्या उनको इतनी भी शिक्षा नहीं मिली थी जो अब अन्जुमन हिमायते इस्लाम लाहौर यतीमों और अन्य विद्यार्थियों को दे रही है? नहीं अपितु इनमें से कुछ इस्लाम की रस्मी विद्याओं से बहुत कुछ परिचित भी थे परन्तु फिर भी उनकी जानकारियां ऐसी थीं कि उनको ईसाइयत के ज़हरीले असर और कल्पनिक आरोपों से बचा न सके। इसलिए बुद्धिमानी का मार्ग यह था कि उन लोगों की हालतों से शिक्षा प्राप्त करके इस ज़हरीली हवा का जो हर ओर से ज़ोर के साथ चल रही है कोई उत्तम प्रबन्ध किया जाता। परन्तु इस ओर किस ने ध्यान दिया और किस अन्जुमन को यह ख़याल आया? नहीं, अपितु उन लोगों ने तो और ही कार्यवाहियाँ आरम्भ कर दीं जो मुसलमानों की धार्मिक अवस्था पर तनिक भी अच्छा प्रभाव नहीं डाल सकतीं। अब भी समय है कि मुसलमान स्वयं को संभालें और वह मार्ग अपनाएं जो वास्तव में इस बाढ़ को रोकता हो। परन्तु याद रहे कि सिवाए इसके और कोई भी मार्ग नहीं कि सम्पूर्ण आरोपों और प्रत्येक प्रकार के संशयों को एकत्र करके इस कार्य को कोई ऐसा आदमी आरम्भ करे जो सर्वश्रेष्ठ रूप से इसको पूर्ण कर सके तथा जहां तक सामर्थ्य हो उन शर्तों को प्रयोग में लाए जिनको हम पहले लिख चुके हैं।

अत: यह कार्य है जो मुसलमानों की सन्तान को वर्तमान ज़हरीली हवाओं से बचा सकता है परन्तु यह ऐसे ढंग से होना चाहिए कि प्रत्येक उत्तर पवित्र क़ुर्आन के प्रमाण से हो ताकि इस प्रकार उत्तर भी हो जाए

और सत्य के इच्छुकों को पवित्र क़ुर्आन के विशेष स्थानों की व्याख्या की भी अच्छी तरह ज्ञान हो जाए। यह हर एक का काम नहीं यह उन लोगों का काम है जो पहले लेखन की आवश्यक शर्तों से सम्पन्न हों और फिर प्रत्येक मिलावट से अपने संकल्प तथा काम को अलग करके ख़ुदा तआला के मार्ग में उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए यह प्रयत्न करें। और यह भी आवश्यक है कि ऐसी पुस्तक कम से कम पचास या साठ हज़ार तक प्रकाशित कराई जाए और समस्त इस्लामी घरों में निशुल्क बांटी जाए।

अत: केवल उम्महातुल मोमिनीन जैसी एक छोटी सी पुस्तक का खण्डन लिखना पर्याप्त नहीं है कार्रवाई पूरी करनी चाहिए और विश्वास रखना चाहिए कि अल्लाह तआला अवश्य सहायता करेगा। हाँ नम्रता,धीरज और सभ्यता से यह कार्रवाई होनी चाहिए। ऐसा सख्त लेख न हो कि पढ़ने वाला रुक जाए और उससे लाभ न उठा सके। परन्तु इतना बड़ा काम बिना सबकी सहायता के किसी प्रकार पूर्ण नहीं हो सकता। जब बुद्धिमान लोग किसी एक व्यक्ति को इस कार्य के लिए नियुक्त करें तब यह दूसरी व्यवस्था भी होनी चाहिए कि इस कार्य के समापन के लिए अमीरों, धनवानों और प्रत्येक स्तर के मुसलमानों से एक बड़ी धनराशि बतौर चन्दा के जमा हो और किसी एक अमानतदार के पास उस कमेटी की इच्छा के अनुसार जो इस काम को हाथ में ले, वह चन्दा जमा रहे और आवश्यकता के अनुसार खर्च होता रहे।

अब एक दूसरा प्रश्न और है तथा वह यह कि इस पूर्ण खण्डन के लिखने के लिए कौन नियुक्त हो? इसका उत्तर यह है कि अधिकांश मतों से जो व्यक्ति योग्य हो वही नियुक्त किया जाए जैसा कि अभी मैं वर्णन कर चुका हूं और जब इस प्रकार किसी को शर्तों के अनुसार पाया जाए

और उसकी योग्यता के विषय में सन्तुष्टि हो जाए तो सम्पूर्ण खण्डन का कार्य उसको दिया जाए और फिर समस्त मुसलमानों को चाहिए कि अपने मतभेदों को दूर करके दिल व जान से ऐसे व्यक्ति की सहायता में लग जाएं तथा अपने धनों को इस मार्ग में पानी की तरह बहा दें ताकि जैसे इस युग में विरोधियों के आरोप पराकाष्ठा को पहुंच गए हैं ऐसे ही उत्तर भी पराकाष्ठा को पहुंच जाएं और इस्लाम की महानता और प्रतिष्ठा सम्पूर्ण धर्मों पर सिद्ध हो जाए।

अब इस कार्य में कदापि विलम्ब नहीं चाहिए और मुसलमानों पर अनिवार्य है कि साफ दिल से तथा केवल ख़ुदा के लिए खड़े हो जाएं और कथित मामलों के अनुसार जिसको चाहें नियुक्त कर लें। यह भी उचित प्रतीत होता है कि जो साहिब इस कार्य के लिए नियुक्त किए जाएं वह इस पुस्तक को तीन भाषाओं में जो इस्लामी भाषाएं हैं लिखें अर्थात् उर्दू, अरबी और फ़ारसी में, क्योंकि पादरी साहिबों ने भी ऐसा ही किया है अपितु इससे अधिक कई भाषाओं में इस्लाम का खण्डन प्रकाशित करवाया है। अतः हमें भी यही चाहिए कि हिम्मत न हारें अपितु अंग्रेज़ी में भी इस पुस्तक का एक अनुवाद प्रकाशित करें।

मैं काफी समय तक इस सोच में रहा कि इस आवश्यक कार्य का सिलसिला कैसे आरम्भ हो। अन्ततः मुझे यह ख़याल आया कि अधिकतर विद्वानों का तो यह हाल है कि उनमें परस्पर द्वेष और ईर्ष्या बढ़ी हुई है उनकी अधिकतर रुचि मुसलमानों पर कुफ्र के फत्वे लगाने और किसी की बात को झुठलाने में है। पंजाब और हिन्दुस्तान में जितनी अन्जुमनें बनी हैं मुझे अब तक किसी ऐसी अन्जुमन का पता नहीं जो इन उद्देश्यों को जैसा कि हमारा इरादा है, पूरा कर सके या इस ढंग का जोश उनमें मौजूद हो। मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि इन अन्जुमनों के सदस्यों में से

कई ऐसे सज्जन भी होंगे जो हमारी अभिलाषा के अनुसार उनके दिलों में भी धर्म की सहायता का जोश होगा परन्तु वे अधिकांश मतों के नीचे ऐसे दबे हुए मालूम होते हैं जैसे तोती की आवाज़ नगाड़ा घर में। बहरहाल हमें धर्म की हमदर्दी के जोश से जितना वर्तमान अन्जुमनों के कुछ दोष वर्णन करने पड़े हैं वे मआज़ल्लाह (अल्लाह की शरण) इस नीयत से नहीं कि हम अन्जुमनों के पूर्ण सदस्यों और कार्यकर्ताओं पर आरोप लगाते हैं अपितु हमारा आरोप उस मा'जून (अवलेह) मिश्रण पर है जो बहुमत से आज तक पैदा होता रहा है परन्तु इन समस्त सज्जनों के निजी बातों और लोगों से हमें कुछ बहस नहीं जो उन अन्जुमनों से सम्बन्ध रखते हैं अपितु हम खूब जानते हैं कि कभी एक व्यक्ति की अपनी राय कुछ और होती है परन्तु बहुमत की राय के अन्तर्गत आकर अकारण में उसको हां से हां मिलानी पड़ती है और साथ ही हम उन अन्जुमनों और उनके कार्यों को केवल बेकार नहीं समझते निःसन्देह मुसलमानों की सांसारिक अवस्था की उन्नति देने के लिए बहुत अच्छा माध्यम है। हाँ हमें अफ़सोस के साथ यह भी कहना पड़ता है कि वर्तमान ज़हरीली हवा से मुसलमानों के ईमान को सुरक्षित रखने के लिए उनमें कोई प्रशंसनीय प्रयत्न नहीं किया गया। नाम मात्र की धार्मिक सहायता के लिए जितने सामान दिखाए गए हैं वे कदापि इस तेज़,प्रचंड और ज़हरीली हवा का मुक़ाबला नहीं कर सकते जो हमारे देश में चल रही है। इसलिए मुसलमानों की वास्तविक हमदर्दी जिस दिल में होगी वह अवश्य हमारी इस पुस्तक पर बोल उठेगा कि निस्सन्देह इस समय मुसलमान अपनी धार्मिक हालत की दृष्टि से दया के योग्य हैं और निश्चय ही अब एक ऐसी उत्तम व्यवस्था की आवश्यकता है जिसमें उन हमलों का पूर्ण निवारण हो जो इस साठ साल के ज़माने में इस्लाम पर किए गए हैं। हम उन मुर्दा स्वभाव के लोगों को सम्बोधित

करना नहीं चाहते जो स्वयं अपनी आयु के परिवर्तन पर नज़र डाल कर अब तक इस परिणाम पर नहीं पहुँचे कि यह अस्थायी जीवन हमेशा रहने का स्थान नहीं और अवश्य हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने लिए और अपनी सन्तान के लिए वह आराम का स्थान बनाएं जो मरने के बाद स्थायी विश्राम स्थल होगा। हे सज्जनो! निःसन्देह समझो कि ख़ुदा है और उसका एक क़ानून है जिसको दूसरे शब्दों में धर्म कहते हैं और यह धर्म हमेशा ख़ुदा तआला की ओर से पैदा होता रहा और लुप्त होता रहा और फिर पैदा होता रहा। उदाहरणतया जैसा कि तुम गेहूँ आदि अनाजों को देखते हो कि वे कैसे लुप्त के निकट पहुँच कर फिर हमेशा नये सिरे से पैदा होते हैं और इसी प्रकार वह प्राचीन भी हैं उनको नये उत्पन्न हुए नहीं कह सकते। यही हाल सच्चे धर्म का है कि वह प्राचीन भी होता है और उसके उसूलों में कोई बनावट और नवीनता की बात नहीं होती और फिर हमेशा नया भी किया जाता है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जो बनी इस्राईल में एक प्रतिष्ठित अवतार गुज़रे हुए हैं वह कोई नया धर्म नहीं लाए थे अपितु वही लाए थे जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम को दिया गया था और हज़रत इब्राहीम भी कोई नया धर्म नहीं लाए थे अपितु वही लाए थे जो नूह अलैहिस्सलाम को मिला था। इसी प्रकार हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम भी कोई नया धर्म नहीं लाए थे और कोई नया मुक्ति का मार्ग नहीं गढ़ा था अपितु वही था जो हज़रत मूसा[अ.] को मिला था और मुक्ति का वही पुराना मार्ग था जो दयावान ख़ुदा हमेशा अवतारों के द्वारा मनुष्यों को सिखाता रहा परन्तु जब मुक्ति का मार्ग जो हमेशा से चला आता था और दूसरे एकेश्वरवाद के सिद्धान्त में ईसाइयों ने धोखे खाए और यहूदियों की व्यावहारिक हालत भी बिगड़ गई सम्पूर्ण पृथ्वी पर अनेकेश्वरवाद फैल गया तब ख़ुदा ने अरब में एक अवतार (नबी) पैदा किया ताकि नये सिरे

से पृथ्वी को एकेश्वरवाद (तौहीद) और अच्छे कार्यों से प्रकाशमय करे। उसी ख़ुदा ने हमें ख़बर दी थी कि अन्तिम ज़माने में फिर सृष्टि उपासना की आस्थाएं दुनिया में फैल जाएंगी और लोगों की व्यावहारिक हालतों में भी बहुत अन्तर हो जाएगा और अधिकतर दिलों पर भौतिकवाद की मुहब्बत विजयी और ख़ुदा की मुहब्बत ठण्डी हो जाएगी तब ख़ुदा फिर उस ओर ध्यान देगा कि उस सत्य के बीज को जो हमेशा अनाज की तरह उत्पन्न होता रहा है उन्नत करे। अतः ख़ुदा अब अपने धर्म को ऐसे लोगों के द्वारा उन्नति देगा जो उसकी दृष्टि में बहुत प्रिय होंगे। परन्तु यह ख़ुदा तआला को मालूम है कि ऐसे लोग उसकी नज़र में कौन से हैं। बहरहाल समय के अनुकूल यही मालूम होता है कि इस कठिन कार्य में वर्तमान राजनेताओं और दूसरे समस्त व्यापारियों, रईसों, धनवानों और परामर्शदाताओं को संबोधित किया जाए और फिर देखा जाए कि इस हमदर्दी के मैदान में कौन-कौन निकलता है और कौन-कौन मुँह फेरता है। परन्तु वे लोग क्या ही प्रशंसा के योग्य हैं जो इस समय इस कार्य के लिए ख़ुदा तआला से सामर्थ्य पायेंगे। ख़ुदा उनके साथ हो और उनको अपनी विशेष दया की छाया में रखे।

यह लेख जिन जिन सज्जनों की सेवा में पहुँचे उनका काम यह होगा कि सर्वप्रथम इस लेख को ध्यान से पढ़ें और फिर कृपया मुझे सूचित करें कि वे इस कार्य के पूरा करने के लिए क्या परामर्श देते हैं और किसको इस सेवा के लिए पसन्द करते हैं। काम यही है कि विरोधियों की समस्त पुस्तकों से आरोप एकत्रित करके उनका उत्तर दिया जाए और फिर वे पुस्तकें लगभग पचास हज़ार छपवा कर देश में प्रकाशित की जाएं और इस प्रकार वर्तमान इस्लामी नस्ल को मारने वाले ज़हर से बचा लिया जाए। यह सम्पूर्ण कार्य पचास हज़ार रुपए के खर्च से

अच्छी तरह हो सकता है और यदि ऐसी पुस्तकें कम से कम पचास हज़ार या साठ हज़ार तक दुनिया में प्रकाशित की जाएं तो यह समझो कि हमने पादरियों तथा अन्य विरोधियों की सम्पूर्ण कार्रवाई को नष्ट कर दिया। परन्तु क्योंकि यह धन का मामला है इसलिए इसमें आरम्भ से खूब जांच-पड़ताल होनी चाहिए कि इस कार्य के योग्य कौन लोग हैं? किसका लेख दुनिया के दिलों को इस्लाम की ओर झुका सकता है? और कौन ऐसा व्यक्ति है जिसका उत्तम बयान, तर्क देने की शक्ति और सबूत का ढंग सरल तथा संतोषजनक है और किसका भाषण है जो सम्पूर्ण आरोपों को तहस नहस करके उनका निशान मिटा सकता है। इसी विचार से मैंने अपने इस लेख में दस शर्तें लिखी हैं जो मेरे ख़याल में ऐसे लिखने वाले के लिए आवश्यक हैं, लेकिन मेरे ख़याल की पैरवी कुछ आवश्यक नहीं प्रत्येक सज्जन को चाहिए कि इस कार्य के लिए पूरा-पूरा विचार करके यह राय प्रकट करें कि यह लिखने की सेवा किसके सुपुर्द करनी चाहिए और उनके अनुसार कौन है जो श्रेष्ठता और आचार-व्यवहार की अच्छाई के साथ इस कार्य को पूर्ण कर सकता है। मैं इतनी सेवा अपने ज़िम्मे ले लेता हूं कि हर एक सज्जन इस विषय में अपनी-अपनी राय लिख कर मेरे पास भेज दें। मैं उन समस्त पत्रों को जमा करता जाऊंगा और जब वे सब पत्र जमा हो जाएंगे तो मैं उनको एक पुस्तक का रूप दूंगा और फिर वह बात जो अधिकांश मतों से निर्णय पाए उसी को अपनाया जाएगा। प्रत्येक पर अनिवार्य होगा कि बहुमत के अनुयायी होकर सच्चे दिल से उस कार्य में जहां तक सामर्थ्य हो आर्थिक सहायता दें। और इस राय के योग्य वही सज्जन समझे जाएंगे जो आर्थिक सहायता देने को तैयार हों परन्तु राय लिखने के समय प्रत्येक सज्जन को चाहिए कि उस विद्वान का नाम स्पष्टता पूर्वक लिखें जिसको यह लिखने का संवेदनशील

कार्य दिया जाए।

सम्भवतः कुछ सज्जन इस राय को अपनाएं कि कई विद्वान इस कार्य के लिए आगे बढ़ें और मिलकर करें। लेकिन यह सही नहीं है ऐसे मामलों में परस्पर लेखों का दाखिल होना हानिकारक होता है बल्कि कभी-कभी झगड़े और द्वेष तक बात पहुँच जाती है। हाँ जो व्यक्ति वास्तव में योग्य और ज्ञानी होगा उसको यदि कोई आवश्यकता होगी तो वह स्वयं अपने कुछ सहायक सेवकों की तरह पैदा कर सकता है। कमेटी के परामर्श के अन्तर्गत यह बात नहीं आ सकती अपितु ऐसे प्रकोपयुक्त उपाय से कई उपद्रवों की संभावना है। जब तक केवल एक व्यक्ति इस कार्य का सर्वेसर्वा नियुक्त न किया जाए तब तक कोई कार्य भली भांति सम्पन्न नहीं हो सकता। हाँ वह सर्वेसर्वा जैसे उचित समझे अपनी इच्छा और वर्णन शैली के अनुसार दूसरे लोगों से सामग्री एकत्र करने के लिए कोई सेवा ले सकता है और इस कार्य के लिए एक स्टाफ नियुक्त कर सकता है।

यह विचार करने योग्य बातें हैं और मुझे प्रायः यही भय है कि इस पर्चे को जो खून-ए-जिगर से लिखा गया है यों ही लापरवाही से न फेंक दिया जाए या शीघ्रता से इस पर राय देकर उसको रद्दी या बेकार बस्तों में न डाल दिया जाए। इसलिए मैं उस व्याकुल व्यक्ति के समान जो हर ओर हाथ-पैर मारता है अपने आदरर्णीय पाठकों को जो अपने सम्मान, वैभव तथा बुलन्द हौसले के कारण इस्लाम के गर्व हैं उस महाप्रतापी ख़ुदा की क़सम देता हूं जिसकी क़सम को नबियों ने भी अस्वीकार नहीं किया कि अपनी राय से जो सर्वथा धार्मिक सहानुभूति पर आधारित हो मुझे अवश्य कृतज्ञ करें। यद्यपि फुर्सत के अभाव के कारण दो-चार पंक्तियां ही लिख सकें परन्तु इस सम्पूर्ण लेख को पढ़कर लिखें। मैं आशा रखता हूं

कि इस्लाम के जितने सच्चे हमदर्द तथा रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सच्चा प्रेम रखने वाले हैं वे ऐसी राय के लिखने से जिसमें क़ौम की भलाई और हज़ारों उपद्रवों से मुक्ति है विलम्ब नहीं करेंगे। किन्तु स्मरण रहे कि इस राय में तीन (3) बातों की व्याख्या अवश्य चाहिए-

(1) प्रथम यह कि वह अपनी समझ से इस कार्य के लिए किसका चयन करते हैं और उस बुज़ुर्ग का नाम क्या है और कहां के रहने वाले हैं।

(2) द्वितीय यह कि वह स्वयं इस महान कार्य को पूर्ण करने के लिए किस सीमा तक सहायता देने को तैयार हैं।

(3) तृतीय यह कि यह बड़ी धन राशि जो इस कार्य के लिए एकत्र होगी वह कहां और किस स्थान पर अमानत की मद में रखी जाएगी और समय-समय पर किस की आज्ञा से व्यय होगी। इन तीनों बातों का विवरण आवश्यक है।

यहाँ एक अन्य बात उल्लेखनीय है और वह यह कि शायद कुछ लोगों के दिलों में यह विचार पैदा हो कि संभव है कि इस कार्य में हस्तक्षेप करना सरकार की इच्छा के विरुद्ध हो। तो मैं उनको विश्वास दिलाता हूं कि हमारी उपकारी सरकार जो हमारे माल और प्राणों की रक्षा कर रही है उस ने पहले से विज्ञापन दे रखा है कि वह किसी की धार्मिक बातों और धार्मिक उपायों में हस्तक्षेप नहीं करेगी जब तक कोई ऐसा कार्य न हो जिससे विद्रोह की गंध आए। हमारी उपकारी ब्रिटिश सरकार का यही एक प्रशंसनीय आचरण है जिसके साथ हम समस्त संसार के सामने गर्व कर सकते हैं। निस्सन्देह हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम इस उपकारी सरकार के सच्चे दिल से शुभ चिन्तक हों तथा आवश्यकता पड़ने पर प्राण न्योछावर करने को भी तैयार हों। परन्तु हम इस प्रकार से भी अन्य क़ौमों तथा अन्य देशों में अपनी उपकारी सरकार के यश को फैलाना चाहते

हैं कि इस न्यायवान सरकार ने धार्मिक बातों में हमें कितनी (अधिक) स्वतंत्रता दी है। व्यावहारिक नमूने हज़ारों कोसों तक चले जाते हैं और दिलों पर एक अद्‌भुत प्रभाव डालते हैं तथा उनसे सैकड़ों मूर्खों के भ्रम दूर हो जाते हैं। यह धार्मिक स्वतंत्रता एक ऐसी प्रिय चीज़ है कि इसकी ख़बर पाकर अन्य देश भी चाहते हैं कि इस मुबारक सरकार का हम तक क़दम पहुंचे। निष्कर्ष यह कि इस मुबारक सरकार को अपनी सच्चाई और वफ़ादारी दिखाओ और समय पड़ने पर उसके काम आओ। चाहिए कि तुम्हारा दिल बिलकुल साफ़ और वफादारी से भरा हुआ हो। जब तुम यह सब कुछ कर चुके तो इस श्रद्धा और निष्ठा के बावजूद कुछ हानि नहीं कि नम्रतापूर्वक अपने धर्म के सिद्धान्तों का समर्थन किया जाए। ऐसे कार्यों में बारीक सिद्धान्तों के अनुसार सरकार का प्रताप और दौलत की शुभ चिन्ता है। क्योंकि जिस प्रकार अच्छे दुकानदार का नाम सुनकर उसी ओर खरीदार दौड़ते हैं। इसी प्रकार जिस सरकार के ऐसे निष्पक्ष और स्वतंत्र सिद्धान्त हों वह सरकार अवश्य ही प्यारी और सर्वप्रिय मानी जाती है तथा बहुत अन्य देशों के लोग हसद करते हैं कि काश हम भी इसके अधीन होते। क्या आप लोग नहीं चाहते कि इस **उपकारी सरकार** का इन समस्त प्रशंसाओं के साथ सम्पूर्ण विश्व में नाम फैले और उसका प्रेम दूर-दूर तक दिलों में जागरूक हो। देखो आदरणीय सर सय्यद अहमद खान साहिब इस उपकारी सरकार के कितने शुभचिन्तक थे और सरकार की इच्छा से कितने परिचित थे तथा वह इस बात को कितना चाहते थे कि ऐसी बातों से दूर रहें जो सरकार की इच्छा के विरुद्ध हैं। इन सब के बावजूद वह हमेशा धार्मिक बातों में भी लगे रहे और न केवल पादरियों के आरोपों के उत्तर दिए बल्कि इलाहाबाद के एक लाट साहिब की पुस्तक का भी उन्होंने खण्डन लिखा जो बड़ा संवेदनशील कार्य था तथा हण्टर

के आरोपों का भी उत्तर दिया और मृत्यु के दिनों के निकट इस पुस्तक "उम्महातुल मोमिनीन" के कुछ भाग के उत्तर लिख गए जो अलीगढ़ इंस्टीयूट प्रेस में रिसाला जिल्द-6 अप्रैल 1898 ई. में प्रकाशित भी हो गया है। हाँ क्योंकि वह बुद्धिमान और वास्तविकता को पहचानने वाले थे इसलिए उन्होंने अपनी सम्पूर्ण आयु में कोई ऐसा बेकार मैमोरियल कभी सरकार की सेवा में नहीं भेजा जैसा कि अब लाहौर से भेजा गया अपितु अब भी जब उनको "उम्महातुल मोमिनीन" पुस्तक के विषयों की सूचना मिली तो केवल खण्डन लिखना ही पसन्द किया। सय्यद साहिब तीनों बातों में मुझसे सहमत रहे। **प्रथम-** हज़रत ईसा की मृत्यु के मामले में। **द्वितीय-** जब मैंने यह विज्ञापन प्रकाशित किया कि रोम के बादशाह की अपेक्षा अंग्रेज़ी सरकार के अधिकार हम पर अधिक हैं तो सय्यद साहिब ने मेरे इस लेख की पुष्टि की और लिखा कि सबको इसका अनुसरण करना चाहिए। **तृतीय-** इसी पुस्तक "उम्महातुल मोमिनीन" से संबन्धित उनकी यही राय थी कि इसका खण्डन लिखना चाहिए, मैमोरियल न भेजा जाए। क्योंकि सय्यद साहिब ने अपनी व्यावहारिक कार्रवाई से खण्डन लिखने को इस पर प्राथमिकता दी। काश यदि आज सय्यद साहिब जीवित होते तो वह मेरी इस राय का अवश्य खुला-खुला समर्थन करते। बहरहाल ऐसे मामलों में समस्त आदरणीय मुसलमानों के लिए स्वर्गीय सय्यद साहिब का यह काम एक आदर्श है जिसके नमूने पर अवश्य चलना चाहिए और निस्सन्देह सय्यद साहिब की यह कार्यप्रणाली कि आपने 'उम्महातुल मोमिनीन' का खण्डन लिखना उचित समझा और कोई मैमोरियल सरकार में न भेजा यह वास्तव में हमारी राय की पुष्टि है जो सय्यद साहिब ने अपनी व्यावहारिक कार्रवाई से लोगों के सामने रख दी।

हमारी राय हमेशा से यही है कि नम्रता, सभ्यता, बौद्धिक और

दार्शनिक ढंग से हमला करने वालों का खण्डन लिखना चाहिए और इस ख़याल से दिल को ख़ाली कर देना चाहिए कि सरकार से किसी सम्प्रदाय की कान खिंचाई करा दें। धर्म के समर्थकों को शिष्टाचार की अवस्था दिखाने की बहुत आवश्यकता है। इस प्रकार धर्म बदनाम होता है कि बात-बात पर हम उत्तेजना प्रकट करें। और याद रहे कि एडीटर ऑब्ज़रवर ने बहुत ही धोखा खाया या धोखा देना चाहा है जबकि उसने मेरे संबन्ध में यह लिखा कि जैसे मैं इस बात का विरोधी हूँ कि जो लोग हमारे धर्म पर हमला करें उनके हमलों का निवारण किया जाए। वह मेरे उस मैमोरियल को प्रस्तुत करता है जिसमें मैंने लिखा था कि सरकार उपद्रव फैलाने वाले लेखों को रोकने के लिए दो प्रस्तावों में से एक प्रस्ताव को अपनाए कि या तो प्रत्येक पक्ष को निर्देश दिया जाए कि किसी आरोप के समय बिना इसके कि विपक्षी की विश्वसनीय पुस्तकों का प्रमाण दिया जाए कदापि आरोप के लिए क़लम न उठाए और या यह कि एक पक्ष विपक्षी के धर्म पर बिलकुल हमला न करे अपितु अपने-अपने धर्म की विशेषताएं वर्णन किया करे। अब स्पष्ट है कि मेरे उस कथन और वर्तमान कथन में कोई मतभेद नहीं है जैसा कि ऑब्ज़रवर ने समझा है। क्या मेरे पहले लेख का यह अर्थ हो सकता है कि विरोधियों के हमलों का उत्तर न दिया जाए? मान लिया कि हम दूसरों के धर्म पर हमला न करें परन्तु यह तो हमारा कर्त्तव्य है कि अन्यों के हमले से अपने धर्म को बचाएं और अपने धर्म की विशेषताएं दिखाएं।

अत: हमारी सरकार हमें नहीं रोकती कि हम सभ्यता के साथ अपने धार्मिक सिद्धान्तों का समर्थन करें। इसलिए हे बुज़ुर्गो! स्वयं देख लो कि इस्लाम कितने हमलों के नीचे दबा हुआ है। पादरी साहिबों के हमले हैं, आधुनिक दर्शनशास्त्र के हमले हैं, आर्य साहिबों के हमले हैं, ब्रह्म समाज

के हमले हैं, नास्तिक स्वभाव वालों के हमले हैं।

अब मुझे बेधड़क कहने दो कि इस समय सच्चा मुसलमान वही है जो इस्लाम की हालत पर कुछ सहानुभूति दिखाए और दिल की कठोरता, लापरवाही या बेकार के दूर के विचारों से, सहानुभूति से मुंह न फेरे। हे हिम्मत वाले मर्दो! वह व्यवस्था जो अब होनी चाहिए मुझे शर्म आती है कि कहां तक मैं बार-बार लिखूं। हे क़ौम के चमकते हुए सितारो! और आदरणीय बुज़ुर्गो! ख़ुदा आप लोगों के दिलों को इल्हाम करे। ख़ुदा के लिए इस ओर ध्यान दो। अगर मुझे इस बात का ज्ञान होता कि मेरे इस लेख के पढ़ने के समय अमुक-अमुक आरोप आपके दिल में गुज़रेगा तो मैं उन आरोपों का पहले से ही निवारण कर देता और यदि मेरे पास वे शब्द होते जो आप सज्जनों को इस मुद्दे की ओर ले आते तो मैं उन्हीं शब्दों का प्रयोग करता। हाय अफसोस हम क्या करें और किस प्रकार उस भयानक चित्र को दिलों के आगे रख दें जो हमें ताऊन (प्लेग) से अधिक और हैज़ा से बढ़कर रो'बनाक प्रतीत होता है। हे ख़ुदा तू स्वयं दिलों में डाल। हे दयालु ख़ुदा तू ऐसा कर कि यह लेख जो ख़ून-ए-दिल से लिखा गया आलस्य की दृष्टि से न देखा जाए।

अन्ततः इतना लिखना भी आवश्यक है कि जो सज्जन इस कार्य के लिए किसी लिखने वाले का चयन करने हेतु इस बात के इच्छुक हों कि उनकी पिछली पुस्तकों को देखें तो वे प्रत्येक लिखने वाले से जो उनके विचार में सबसे अच्छा यह कार्य कर सकता हो नमूने के तौर पर उसकी लिखित पुस्तकें मांग सकते हैं जिनसे उसकी ज्ञान शक्ति और भाषण की शैली तथा तर्क पद्धति का पता लग सकता हो और मेरी जानकारी में इस परीक्षा के समय महोत्सवों के वे विभिन्न भाषण जो कई विद्वानों की ओर से प्रकाशित हो चुके हैं बहुत कुछ सहायता कर सकते हैं क्योंकि उस

जल्से में प्रत्येक इस्लामी विद्वान ने अपना सम्पूर्ण ज़ोर लगाकर भाषण किया है। अत: नि:सन्देह वह पुस्तक जो वर्तमान में लाहौर में जल्से के सदस्यों की ओर से प्रकाशित हुई है जिस में पंजाब और हिन्दुस्तान के विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों के भाषण हैं, इस चयन के लिए सर्वोत्तम कसौटी है और मैं परामर्श देता हूं कि इस निर्णय के लिए किसका लेखन ज़बरदस्त, प्रमाणयुक्त और लाभदायक है उस पुस्तक से सहायता ली जाए क्योंकि इस अखाड़े जिसमें पादरी लोग, आर्य लोग, ब्रह्म समाज के लोग, सनातन धर्मी और इस्लाम के विद्वान एकत्रित थे और प्रत्येक अपनी पूर्ण शक्ति से भाषण करता था जो व्यक्ति ऐसे अवसर पर अपने ज़ोरदार भाषण से सब पर विजयी रहा हो उस से अब भी आशा कर सकते हैं कि इस दूसरी कुश्ती में भी विजयी होगा।

हाँ यह भी आवश्यक है कि यह भी देख लिया जाए कि ऐसा व्यक्ति अपनी बहसों में अरबी भाषा में भी कुछ पुस्तकें रखता है या नहीं क्योंकि तथा (कथित) शर्तों के अनुसार ऐसे लेखक को जो इस शास्त्रार्थ की कला का पेशवा समझा जाए अरबी में भी लिखने की पूर्ण योग्यता होनी चाहिए। कारण यह कि जो व्यक्ति अरबी भाषा में भी सामर्थ्य न रखता हो उसकी समझ और प्रतिभा विश्वसनीय नहीं और न वह पुस्तकों को अरबी में लिखकर सामान्य लाभ पहुँचा सकता है और क्योंकि यह चर्चा बीच में आ गई है कि जो सज्जन इस कार्य के लिए किसी का चयन करने हेतु कोई राय प्रकट करें सर्व प्रथम उनको पर्याप्त ज्ञान इस बात का होना चाहिए कि क्या उस व्यक्ति की पूर्व पुस्तकें यह गवाही दे सकती हैं कि वह इस पद और स्तर का व्यक्ति है कि पहले भी धार्मिक मामलों में उसकी उत्तम लेख उसकी क़लम से निकले हैं, साथ ही यह कि वह अरबी में अद्भुत पुस्तकें रखता है। इसलिए यह लिखने वाला ख़ाकसार

भी केवल धर्म की सहायता के उद्देश्य से हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम की तरह केवल शुभ-इच्छा से अपने विषय में यह वर्णन करना आवश्यक समझता है कि यह ज्ञान ख़ुदा तआला की कृपा ने मुझे प्रदान किया है और मैं इस योग्य हूँ कि इस कार्य को पूरा करूं।

मेरी पुस्तकें जो अब तक शास्त्रार्थ के सम्बन्ध में लिखी गई हैं ये हैं- 'बराहीन-ए-अहमदिया' चारों भाग जो आर्यों, ब्रह्म समाजियों और ईसाइयों के खण्डन में है। 'सुर्मा चश्म आर्य' जो आर्यों के खण्डन में है 'एक ईसाई के चार सवाल का उत्तर' जो एक उत्तम पुस्तिका है। 'किताबुल बरिय्या' ईसाइयों के खण्डन में है। 'अय्यामुस्सुलह' पुस्तक, 'नूरूल क़ुर्आन' जो ईसाइयों के खण्डन में है। 'करामातुस्सादिक़ीन' पुस्तक जो पवित्र क़ुर्आन की व्याख्या अरबी भाषा में है। पुस्तक 'हमामतुल-बुशरा' जो अरबी में है। पुस्तक 'सिर्रुल-ख़िलाफ़त' जो अरबी में है। पुस्तक 'नूरूल-हक़' जो अरबी में है। पुस्तक 'इत्मामुल-हुज्जत' जो अरबी में है और अन्य कई पुस्तकें हैं जो इस लेखक (ख़ाकसार) ने उर्दू, फ़ारसी और अरबी में लिखी हैं। महोत्सव के सर्वधर्म सम्मेलन के विषय में जो कमेटी की ओर से एक पुस्तक प्रकाशित हुई है उस पुस्तक में एक लम्बा लेख इस्लाम की सहायता में इस लेखक (ख़ाकसार) का भी मौजूद है। और यह समस्त पुस्तकें 'अय्यामुस्सुलह' के अतिरिक्त जो शीघ्र प्रकाशित होगी, प्रकाशित हो चुकी हैं। यदि कोई सज्जन राय लिखते समय इन पुस्तकों में से किसी पुस्तक की आवश्यकता समझें तो मैं इस शर्त पर भेज सकता हूँ कि वह एक दो सप्ताह रख कर वापस कर दें क्योंकि मालूम नहीं कि इस कार्रवाई के लिए कौन-कौन साहिब मेरी पुस्तकें मांगेंगे। अब यह लेख अपनी सम्पूर्ण कार्यवाही के साथ समाप्त हो गया और मैं आशा करता हूँ कि प्रत्येक सज्जन जिनकी बरकतपूर्ण सेवा में यह लेख भेजा जाए वह

दो सप्ताह के अन्दर ही अपनी सुनहरी राय से मुझे सौभाग्यशाली करेंगे।

यहां तक हम लिख चुके थे कि पैसा अख़बार का पर्चा 14 मई 1898 ई. को प्रकाशित हमारी नज़र से गुज़रा जिसमें मेरे और मेरी राय से सम्बन्धित मैमोरियल अन्जुमन हिमायते इस्लाम की सहायता से कुछ ऐसी अनुचित★ बातें लिखी हैं जिनके लिखने की शैली से सरकार या पब्लिक के धोखा खा जाने का सन्देह है। अत: उस ग़लत बयानी को सरकार की सेवा में स्पष्ट कर देना उचित समझकर कुछ पंक्तियां उन झूठे आरोपों को दूर करने के लिए नीचे लिखी जाती हैं और हम आशा करते हैं कि हमारी **बात की तह तक पहुँच जाने वाली** सरकार अवश्य उस पर ध्यान देगी और वे आरोप उत्तरों के साथ ये हैं-

(1) प्रथम यह आरोप किया गया है कि "हिमायत-ए-इस्लाम"

★हाशिया- पैसा अख़बार और ऑब्ज़रवर के एडीटर ने अपने पर्चा में मुझ पर यह आरोप भी लगाना चाहा है कि मानो वह विवाद और झगड़ा जो हिन्दुओं और मुसलमानों में हुआ उसका बीज मेरी ओर से बोया गया कि मैंने लेखराम के मरने की भविष्यवाणी की और उसके मरने पर हिन्दुओं को जोश आया और बुरे विचार पैदा हुए। परन्तु इस आरोप से यदि कुछ सिद्ध होता है तो केवल यही कि इन एडीटरों को कुछ गुप्त तहरीकों के कारण मुझ से वह द्वेष और ईर्ष्या है जिनको वे धार्मिक मामलों में भी सहन नहीं कर सके और अन्तत: आन्तरिक जोश में आकर इस्लामी हिमायत और अधिकारों को भी पीछे फेंक दिया। मैंने बार-बार अपनी पुस्तकों में व्याख्यात्मक रूप से लिखा है और स्वयं लेखराम ने भी अपनी पुस्तक में इस बात को स्वीकार किया है कि वह भविष्यवाणी जो लेखराम के सम्बन्ध में की गई थी उसका कारण स्वयं लेखराम ही था। जिन दिनों में लेखराम ने इस्लाम के बारे में गालियों पर कमर कस रखी थी और बात-बात पर गाली उसके मुंह में थी उन दिनों में उसने जोश में आकर एक यह कारवाई भी की थी कि मुझसे बहस करने के लिए क़ादियान में आकर लगभग एक महीने रहा। मैं उससे बहस करने के लिए उसके ज़िले और गांव में नहीं गया और न मैंने कभी उससे

लोकल अंजुमन का उम्महातुल मोमनीन पुस्तक के बारे में मेमोरियल भेजने का उद्देश्य यह था कि यह पुस्तक जो अत्यन्त दिल दुखाने वाले शब्दों से भरी हुई है और आशंका है कि उसके निबंधों से शान्ति भंग न हो जाए उसका प्रकाशन रोक दिया जाए। अब मिर्ज़ा साहिब क़ादियानी ने उसके विरुद्ध मेमोरियल भेजा है जिस का उद्देश्य यह है कि इस पुस्तक को आदेश द्वारा न रोका जाए" इस आरोप से एडीटर साहिब का उद्देश्य यह ज्ञात होता है कि अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर ने तो इस्लाम तथा मुसलमानों के लिए बहुत उत्तम कार्रवाई की थी कि शान्ति भंग होने का तर्क प्रस्तुत करके सरकार से विनती की थी कि इस पुस्तक का प्रकाशित होना रोक दिया जाए। परन्तु इस व्यक्ति ने अर्थात् इस लेखक ने केवल वैर और ईर्ष्या से इस कार्रवाई का विरोध किया

शेष हाशिया- पत्रकारिता का आरम्भ किया। वह स्वयं अपने वहशियाना जोश से मेरे पास क़ादियान में आया। यहाँ के समस्त हिन्दू इस बात के गवाह हैं कि वह पच्चीस दिन यहाँ क़ादियान में रहा तथा कठोर वचन एवं गालियों से एक दिन भी स्वयं को रोक न सका। बाज़ार में मुसलमानों के गुज़रने की जगह में हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियां देता रहा और मुसलमानों को उत्तेजित करने वाले शब्द बोलता रहा। मैंने शान्ति भंग होने के भय से मुसलमानों को रोक दिया था कि उसके भाषण के समय कोई बाज़ार में खड़ा न हो और कोई मुक़ाबले के लिए तैयार न हो। इसलिए बावजूद इसके कि वह फ़साद के लिए कुछ लोफरों को साथ मिलाकर प्रतिदिन हंगामे के लिए तैयार रहता था परन्तु मुसलमानों ने मेरे निरन्तर उपदेशों के कारण अपनी उत्तेजनाओं को दबा लिया। उन दिनों में कई स्वाभिमानी मुसलमान मेरे पास आये कि यह व्यक्ति बात-बात पर हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियां देता है। और मैंने देखा कि वे लोग जोश में हैं तब मैंने नम्रता से मना किया कि एक मुसाफ़िर है बहस करने के लिए आया है, सब्र करना चाहिए। मेरे बार-बार रोकने से वे लोग अपने जोशों से रुक गए और लेखराम ने यह तरीक़ा अपनाया कि प्रतिदिन मेरे मकान पर आता और कोई निशान और चमत्कार मांगता तथा सख्त, हंसी और ठट्ठे के शब्द उसके

और इस प्रकार से इस्लाम को आघात पहुंचाया। जैसे उन बुज़ुर्गों ने तो इस्लाम की सहायता करनी चाही। परन्तु इस लेखक ने केवल अपनी शत्रुता और ईर्ष्या के जोश से इस्लामी कार्रवाई को जानबूझ कर हानि पहुंचाने का प्रयास किया।

इस आरोप का उत्तर यह है कि मैंने अपने मेमोरियल में जो 14 मई 1898 ई. को उर्दू भाषा में छपा है इतना तो निस्सन्देह लिखा है कि 'उम्महातुल मोमिनीन' पुस्तक के प्रकाशन को रोकने के लिए सरकार से विनती करना हरगिज़ उचित नहीं है। किन्तु मैंने इस मेमोरियल में शान्ति-भंग होने का ख़तरा दूर करने के लिए यह वास्तविक उपाय प्रस्तुत कर दिया है कि नर्मी और सभ्यता से उस पुस्तक का उत्तर मिलना चाहिए। प्रत्येक अन्वेषक और विचारक यह गवाही दे सकता है कि 'उम्महातुल

शेष हाशिया- मुंह से निकलते। अब एक मुसलमान जो सच्चा मुसलमान हो विचार कर सकता है कि ऐसा व्यक्ति जो इस्लाम और हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियां देता हो और प्रतिदिन सामने आकर धर्म के अपमान और तिरस्कार के शब्द बोलता हो उसकी आदतों पर सब्र करना कितना कठिन होता है परन्तु फिर भी मैंने इतना सब्र किया कि हर एक से ऐसा सब्र होना कठिन है। मैं हर समय जब क़ादियान में रहने के दिनों में जब वह मुझसे मिलता रहा बावजूद उसके वहशियाना जोशों को जो हमारे पवित्र नबी से संबन्धित उसके दिल में भरे हुए थे नम्रता और शिष्टाचार पूर्वक उससे व्यवहार करता रहा और वह हंसी, ठठ्ठे और अकारण अपमान से कभी न रुका और हमेशा सुबह या तीसरे पहर क़ादियान में मेरे मकान पर आता और इस्लाम तथा हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में भिन्न-भिन्न प्रकार के अनादर करता और जैसा कि ज़ालिम पादरियों ने प्रसिद्ध कर रखा है। बार-बार यही कहता था कि तुम्हारे पैग़म्बर से कोई चमत्कार नहीं हुआ और न कोई भविष्यवाणी हुई। मुल्लानों ने धर्म को सजाने के लिए झूठे चमत्कारों से पुस्तकें भर दी थीं। अन्ततः प्रतिदिन तिरस्कार सुनते-सुनते दिल को बहुत दुःख पहुंचा। मैंने कुछ बार दुआ की कि हे मेरे ख़ुदा तू शक्तिमान है कि अपने नबी का सम्मान प्रकट करने के लिए कोई निशान प्रकट कर

मोमिनीन पुस्तक ईसाइयों की ओर से कोई पहली पुस्तक नहीं है जिसमें उसके लेखक ने कठोर शब्द और झूठे आरोप तथा गालियों की पद्धति ग्रहण की है बल्कि देशीय पादरियों की ओर से निरन्तर साठ वर्ष से यही पद्धति जारी है और कुछ पुस्तकें और अख़बार तो ऐसी कठोर बातों और दिल दुखाने वाले शब्दों से भरे हुए हैं जो इस पुस्तक से कई गुना अधिक हैं।

अब सोच लेना चाहिए कि इस साठ वर्ष में मुसलमानों ने इन कड़े शब्दों में बात करने से तंग आकर सरकार को कितने (ही) मेमोरियल भेजे। जहां तक मैं सोचता हूं इस मेमोरियल तथा रेवाडी के मेमोरियल के अतिरिक्त जो इसी अंजुमन के हाथों की कार्रवाई है कभी मुसलमानों की अन्तर्आत्मा (कान्शन्स) ने यह फ़त्वा नहीं दिया कि ऐसी पुस्तकों के

शेष हाशिया- या कोई भविष्यवाणी प्रकटन में ला जिससे हमारे समझाने का अन्तिम प्यास पूर्ण हो। इन दुआओं के बाद मेरे दिल को सन्तुष्टि हो गयी कि ख़ुदा इसके मुकाबले पर मेरी सहायता अवश्य करेगा और यह भी ज्ञात हुआ कि वही निशान भविष्यवाणी होगा। अत: मैंने उस को वादा दिया और उससे जाने के बाद पत्र द्वारा विनती की कि वह अनुमति दे कि हर प्रकार की भविष्यवाणी जो उसके बारे में हो उसे प्रकाशित किया जाए। अत: उसने पत्र द्वारा लिखित अनुमति भेज दी जिसका विषय यह था कि यद्यपि कैसी ही भविष्यवाणी मेरे बारे में हो मैं उससे नाराज़ नहीं हूं, बल्कि मैं उसको निरर्थक और बकवास समझता हूं। इस अनुमति के पश्चात् ख़ुदा के सामने बराबर ध्यान करने से उसके बारे में वे इल्हाम हुए जिनको मैं उसके जीवन-काल में ही प्रकाशित कर चुका हूं तथा उन दिनों में उसने भी गुस्ताखी और चालाकी से मेरे बारे में यह विज्ञापन प्रकाशित किया कि मुझे भी यह इल्हाम हुआ है कि यह व्यक्ति तीन वर्ष के अन्दर हैज़े से मर जाएगा। अन्तत: जो ख़ुदा की ओर से था वह प्रकटन में आ गया और लेखराम की भविष्यवाणी के आशय के अनुसार समय सीमा के अन्दर इस नश्वर संसार को छोड़ गया। अब कोई न्यायवान बताए कि इसमें मेरा क्या दोष था। ये समस्त घटनाएं जो मैंने लिखी हैं उसके पचास

मुकाबले पर मेमोरियल भेजने आवश्यक हैं। संभवत: बीस वर्ष का समय हुआ कि मैंने किसी बिशप साहिब के लेख में देखा था कि पचास या चालीस वर्ष के समय में पादरियों की ओर से विरोधी धर्मों का खण्डन करने के लिए छ: करोड़ पुस्तकें लिखी गई हैं। इस हिसाब से ज्ञात होता है कि अब तक हिन्दुस्तान में कम से कम ईसाइयों की ओर से नौ करोड़ ऐसी पुस्तकें पर्काशित की गई होंगी जिसमें मुसलमानों और अन्य धर्मावलम्बियों पर प्रहार होगा और यदि कुछ कम करते हुए यह भी मान लें कि इसके बाद कोई पुस्तक नहीं लिखी गई तो छ: करोड़ पुस्तकें भी कुछ कम नहीं। इस बात पर बहस करने की कुछ आवश्यकता नहीं कि

शेष हाशिया- से अधिक गवाह होंगे। क्या इस्लाम धर्म का इतना भी सम्मान नहीं है कि इतनी गालियां सुनने के बाद ख़ुदा के नबियों की सुन्नत (पद्धति) के अनुसार भविष्यवाणी सुनाई जाए और वह भी अत्यधिक आग्रह के बाद। क्या जिस व्यक्ति ने इतना इन्कार और कठोरता और गालियों के साथ भविष्यवाणी मांगी और ख़ुदा ने अपने रसूल के सम्मान के लिए बता दी। क्या ऐसी भविष्यवाणी गुप्त रखी जाती इस विचार से कि पैसा अखबार का एडीटर या उसके सहपंथी लोग इससे नाराज़ होंगे। अफ़सोस इन लोगों को समझ नहीं आता कि जो व्यक्ति इतना कष्ट देने वाला स्वभाव रखता था कि क़ादियान में आकर गालियां देता रहा। उसके बारे में यदि ख़ुदा तआला ने उसकी विनती के बाद इल्हाम किया तो इसमें हमारी ओर से कौन सा अत्याचार हुआ। उसने भी तो मेरे बारे में विज्ञापन दिया था। यह कैसी मूर्खता है कि बार-बार हिन्दुओं के क्रोधित होने का नाम लिया जाता है और ख़ुदा के लिए कोई ख़ाना ख़ाली नहीं छोड़ा जाता।

हमारा और उन लोगों का मुक़द्दमा ख़ुदा तआला के सामने है जो मुझ पर ऐतराज़ करते हैं। यह मुझ पर नहीं बल्कि ख़ुदा तआला पर ऐतराज़ करते हैं कि उसने लेखराम को क्यों मारा और क्यों ऐसा काम किया जिससे हिन्दू क्रोधित हुए। यदि यह मामला ऐतराज़ का स्थान है तो फिर पैसा अखबार के एडीटर तथा ऑबज़र्वर की क़लम से कोई नबी और रसूल बच नहीं सकता।

इस छः करोड़ पुस्तकें में कितने कठोर वाक्य होंगे, क्योंकि जिस प्रकार के पादरी लोग धार्मिक पुस्तकों के लिखने में पवित्र भाषी और सभ्य सिद्ध हुए हैं यह तो किसी पर छुपा नहीं। तो इस स्थिति में यदि शान्ति-भंग होने की आशंका का उपाय यही था जो अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर को अब सूझा अर्थात् यह कि सरकार को मेमोरियल भेजकर ईसाइयों की पुस्तकें नष्ट कराई जाएं तो अब तक इस्लाम की ओर से कम से कम एक करोड़ मेमोरियल जाना चाहिए था। क्योंकि बड़े धर्म ब्रिटिश इण्डिया में दो ही हैं-हिन्दू और मुसलमान। किन्तु हिन्दुओं की ओर पादरियों का

शेष हाशिया- मुझे याद पड़ता है कि पैसा अखबार के एडीटर आथम के न मरने पर ऐतराज़ किया था कि वह निर्धारित समय के अन्दर नहीं मरा और अब लेखराम के बारे में ऐतराज़ किया कि वह विर्धारित समय के अन्दर क्यों मर गया। तो मूल बात यह है कि ईर्ष्यापूर्ण मीन-मेख हर एक पहलूसे हो सकती है। आथम के बारे में जो भविष्यवाणी की गई था उसके साथ कितनी स्पष्टता के साथ यह शर्त मौजूद थी कि यदि वह ख़ुदा से डरेगा तो निर्धारित समय के अन्दर नहीं मरेगा। उसने स्पष्ट और ख़ुले-ख़ुले तौर पर भय के लक्षण दिखाए, इसलिए निर्धारित समय के अन्दर नहीं मरा। परन्तु फिर सच्ची गवाही को गुप्त रखकर हमारे इल्हाम के अनुसार अन्तिम विज्ञापन से छः माह के अन्दर मर गया। अब देखो आथम के बारे में भविष्यवाणी भी कैसी सफाई से पूरी हो गयी थी। स्पष्ट है कि मैं और आथम दोनों प्रारब्ध (तक़्दीर) के अधीन थे। तो इसमें क्या रहस्य था कि बहुत समय हुआ कि मेरी भविष्यवाणी के बाद आथम मर गया और मैं अब तक ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल (कृपा) से जीवित हूं। क्या यह ख़ुदा का वह कार्य नहीं है जो मेरे इल्हाम तथा मेरी भविष्यवाणी के पश्चात् मेरे समर्थन के लिए प्रकट हुआ। फिर उन लोगों पर अत्यन्त आश्चर्य है कि मुसलमानों की सन्तान होकर ख़ुदा की इन क़ुदरतों को न समझें जिनमें ख़ुदा के स्पष्ट समर्थन की चमक है-

ترسم کہ بہ کعبہ چوں رہی اے اعرابی
کیں رہ کہ تو میروی بہ ترکسان ست

ध्यान स्वाभाविक तौर पर कम है परन्तु यदि मान भी लें कि ये छः करोड़ पुस्तकें जो लिखी गईं तो उनका आधा हिन्दुओं के खण्डन में था तब भी सिद्ध होता है कि इस्लाम के खण्डन में अब तक तीन करोड़ पुस्तकें लिखी गईं। इसलिए एक करोड़ मेमोरियल भेजे जाना कुछ अधिक न था।

अब प्रश्न यह है कि अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर को छोड़कर क्योंकि किसी को यह बात न सूझी कि ये ईसाइयों की समस्त पुस्तकें जो अब तक बार-बार प्रकाशित हो रही हैं मेमोरियल द्वारा नष्ट कराई जाएं। यहां तक कि सर सय्यद ख़ान साहिब को भी यह विचार न आया बल्कि स्वर्गीय सय्यद साहिब ने तो पुस्तक 'उम्महातुल मोमिनीन' के प्रकाशित होने के समय भी उत्तर लिखने की ओर ही ध्यान दिया जो अब प्रकाशित भी हो गया है जिसे वह मृत्यु हो जाने के कारण पूर्ण न कर सके। परन्तु इस पुस्तक को नष्ट कराने के लिए कोई मेमोरियल न भेजा और ज़ुबान (जीभ) पर संकेत तक न लाए। इसका क्या कारण है? क्या यह कारण है कि राजनीतिक मामलों में इस अंजुमन को उनसे भी अधिक बुद्धि और विवेक है या उनका इस्लामी स्वाभिमान सय्यद साहिब से बढ़ा हुआ है। ऐसा ही दूसरे बुज़ुर्ग और स्वाभिमानी मुसलमान साठ वर्ष के समय तक देशीय पादरियों की ओर से यही कठोरता देखते रहे परन्तु कोई मेमोरियल न भेजा गया। वे सब के सब इस अन्जुमन से बुद्धि के स्तर या धार्मिक स्वाभिमान में कम थे? फिर क्या इस से परिणाम नहीं निकलता कि यह अंजुमन की राय एक ऐसी निराली राय है जो कभी इस्लाम के विचारकों एवं स्वाभिमानियों तथा राजनीतिक रहस्यों के विशेषज्ञों ने इस पर ध्यान नहीं दिया, किन्तु खण्डन लिखने के मामले पर सब सहमत हो गए? प्रारंभ में इस अंजुमन ने भी दिखाने के दांतों के तौर पर इसी सिद्धान्त को उचित समझ कर उस पर बाध्य रहने का वादा भी दिया था तथा उसको अपनी

पुस्तक में बार-बार प्रकाशित करने की ओर अब तक ध्यान न दिया। तो पैसा अख़बार के कथनानुसार यही बात सच थी कि अब ईसाइयों के प्रहारों का खण्डन लिखने की कुछ आवश्यकता नहीं, इससे पहले बहुत कुछ लिखा गया है। अब तो हमेशा यथा आवश्यक मेमोरियल भेजना ही हित में है तो इस अंजुमन ने क्यों ऐसा अवैध वादा किया था। बहुत अफसोस की बात है कि ये लोग अपने सांसारिक मामलों में तो ऐसे चुस्त और चालाक हों कि इस अस्थायी संसार की उन्नतियों को किसी सीमा तक बन्द करना न चाहें, परन्तु धर्म के मामले में उनकी यह राय हो कि विरोधियों की ओर कैसे ही से प्रहार हों और कैसी ही नई-नई शैलियों में आलोचनाएं की जाएं और कैसे ही धोखा देने वाले आरोप प्रकाशित किए जाएं, परन्तु हमारा यही उत्तर हो कि पहले बहुत कुछ खण्डन हो चुका है अब खण्डन लिखने की आवश्यकता नहीं। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मुसलमानों की हालत कहां तक पहुंच गयी और धार्मिक मामलों में कितनी बुद्धि कम हो गयी। ख़ुदा तआला तो पवित्र क़ुर्आन में यह फ़रमाए-

وَ جَادِلۡهُمۡ بِالَّتِیۡ هِیَ اَحۡسَنُ ؕ

(सूरह अन्नहल-126)

और यह फ़रमाया:-

وَلۡتَکُنۡ مِّنۡکُمۡ اُمَّةٌ یَّدۡعُوۡنَ اِلَی الۡخَیۡرِ

(सूरह आले इमरान-105)

जिस से यह समझा जाता है कि हमेशा के लिए जब तक इस्लाम पर प्रहार करने वाले प्रहार करते रहें इस ओर से भी प्रतिरक्षा का क्रम जारी रहना चाहिए। किन्तु इस अंजुमन के लोगों की यह शिक्षा हो कि अब ईसाइयों के मुकाबले पर हरगिज़ क़लम नहीं उठाना चाहिए और

दण्ड दिलाने के उपायों पर विचार किया जाए। इससे यह समझा जाता है कि इन लोगों को धर्म की कुछ भी परवाह नहीं। तनिक नहीं सोचते कि पादरियों के प्रहार क्या संख्या की दृष्टि से तथा क्या गुणवत्ता की दृष्टि से तरंगे मारते दरिया के समान देश में फैले हुए हैं। संख्या अर्थात् प्रकाशन करने की संख्या का यह हाल है कि कुछ स्थान पर दो पृष्ठों की साप्ताहिक एक लाख दो पृष्ठों की पत्रिका इस्लाम के खण्डन में निकलती है और कुछ स्थान पर पचास हज़ार। और अभी सुन चुके हो कि अब तक ईसाइयों की ओर से इस्लाम के खण्डन में कई करोड़ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अब बताओ कि संख्या एवं मात्रा की दृष्टि से इन लोगों की पुस्तकें की तुलना में इस्लामी पुस्तकें कितनी हैं। कई करोड़ हिन्दू इस देश में ऐसे हैं कि उनको ख़बर तक नहीं कि मुसलमानों ने ईसाइयों की उन पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का क्या उत्तर दिया है,परन्तु शायद ही कोई हिन्दू ऐसा होगा जिसने ईसाइयों की ऐसी गन्दी पुस्तकें न देखी हों जो इस्लाम के खण्डन में लिखी गईं। हम दावे से कह सकते हैं कि हिन्दुओं में से जो व्यक्ति कुछ उर्दू समझ सकता है या अंग्रेज़ी जानने वाला है ईसाइयों की पुस्तकों की बहुत कुछ गंध उसके कानों तक पहुंची होगी और हिन्दुओं का इस्लाम के सामने गालियों के साथ मुंह खोलना वास्तव में इसी कारण से हुआ है कि ईसाइयों के ज़हरीले लेखों की गन्दी नालियों से बहुत कुछ दूषित मवाद उनके ख़ून में भी मिल गए हैं और उनके मनगढ़त झूठों को उन लोगों ने सच समझ लिया। इस प्रकार आर्य लोग भी शत्रुता में सुदृढ़ हो गए।

अब मैं पूछता हूं कि इतनी अधिक मात्रा में प्रकाशन इस्लामी पुस्तकों का कहां हुआ। क्या कोई सिद्ध कर सकता है कि मुसलमानों ने अब तक क्या किया है? कुछ नहीं! यदि किसी एकान्तवासी मुल्ला

को यह विचार भी आया कि किसी पुस्तक का खण्डन लिखें तो मर-मर कर दो तीन सौ रुपया इकट्ठा किया और दिल की बेचैनी के साथ कुछ लिख कर किसी संक्षिप्त पुस्तक की छः सात सौ प्रतियां छपवा दीं, जिसके छपने की सामान्यतया क़ौम को भी ख़बर नहीं हुई। तो अब क्या इस संक्षिप्त तथा अत्यन्त तुच्छ कार्रवाई के साथ यह समझा जाए कि जो कुछ करना था किया गया अब कोई आवश्यकता शेष नहीं रही। यह किसे मालूम नहीं कि इस अवधि में मुसलमानों की ओर से केवल कुछ पुस्तकें निकली हैं जिनको उंगलियों पर गिन सकते है। किन्तु ईसाइयों ने इस्लामी नुक्त:चीनी की पुस्तकों तथा दो पृष्ठीय पत्रिकाओं को इतनी अधिक मात्रा में प्रकाशित किया है कि ब्रिटिश इण्डिया के समस्त मुसलमानों में से प्रत्येक मुसलमान के हिस्से में हज़ार-हज़ार पुस्तक आ सकती है। अब बहुत बड़ा दज्जाल तथा इस्लाम का शत्रु वह व्यक्ति होगा जो इस अत्यन्त स्पष्ट घटना का इन्कार करे। फिर जब प्रकाशन की संख्या की दृष्टि से इस्लामी प्रतिरक्षा को पादरियों के प्रहार से वह तुलना भी नहीं जो एक कण को एक पर्वत के साथ हो सकती है। तो क्या अभी तक यह कहना उचित है कि हमने जो कुछ करना था कर लिया और जिस सीमा तक प्रतिरक्षा हम पर अनिवार्य थी वह सब हम कर चुके। हे लापरवाहो! अल्लाह तआला से डरो। आन्तरिक शत्रुओं के कारण सच्चाई को क्यों छोड़ते हो? और इतने क्यों बढ़े जाते हो? क्या एक दिन अपने कार्यों के बारे में पूछे नहीं जाओगे?

हमारे उलमा ने अब तक जो कुछ मात्रा की दृष्टि से प्रकाशन का कार्य किया है वह एक ऐसी बात है कि उसका विचार करके सहसा क़ौम की हालत पर रोना आता है। क्योंकि जिस प्रकार इस प्रकाशन में पादरियों को अपनी क़ौम की ओर से करोड़ों रुपए की सहायता प्राप्त

हुई और उन्होंने प्रकाशित पुस्तकों की संख्या करोड़ों तक पहुंचाई। यदि इस्लाम के लेखकों को भी यह सहायता मिलती तो वे भी इसी प्रकार करोड़ों पुस्तकों को प्रकाशित करके दिलों में सच्ची आस्थाओं की ओर एक बड़ी क्रान्ति पैदा कर देते। यह वह संकट है जो प्रकाशित पुस्तकों की मात्रा की दृष्टि से अब तक इस्लाम पर है। अब दूसरे संकट पर भी विचार करो जो गुणवत्ता की दृष्टि से इस्लाम के हाल पर आया है और वह यह कि तीन हज़ार आरोपों में से अन्तत: अब तक डेढ़ सौ या पौने दो सौ आरोपों का उत्तर दिया गया है और वह भी प्राय: प्रत्यारोप के तौर पर। और अधिकतर खण्डन लिखने वालों की पुस्तकें ऐसी हैं कि जो वास्तविक मआरिफ तथा दर्शन शास्त्रीय विद्याओं को छू भी नहीं गईं। और बहुत सा भाग सोने के आभूषण बनाने के युद्ध में खर्च किया गया है। अब देखो इस्लाम की सहायता का कितना काम है जो करने योग्य है। इसके अतिरिक्त यह मोटी बात प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि आजकल हमारे विरोधियों की यह पद्धति है कि जिन आरोपों के आज से चालीस वर्ष पूर्व उत्तर दिए गए थे वही आरोप अन्य रंग-रूपों तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की नई-नई तर्क शैलीयों से प्रस्तुत कर रहे हैं और कुछ स्थान पर भौतिकी या खगोल विद्या को उनके साथ सजाकर अथवा अन्य प्रकार के धोखा देने वाले सबूत तलाश करके देश में प्रकाशित कर दिया है और उन आरोपों का बहुत अधिक प्रभाव हो रहा है और उनके पहले उत्तर नवीन शैली और पद्धति की तुलना में निरस्त होने के समान हैं। फिर कौन बुद्धिमान इस बात को स्वीकार कर सकता है कि अब उन आरोपों के उत्तर लिखने की आवश्यकता नहीं। अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम स्वयं विचार करे कि जब हमारा मेमोरियल देख कर उसे चिन्ता पड़ गयी कि उसके मेमोरियल के कारण कमज़ोर किए गए हैं तो उसने किस प्रकार

पंजाब ऑबज़रवर और पैसा अख़बार के माध्यम से उस ने हाथ-पैर मारे और इस बात को पर्याप्त न समझा कि हमारे मेमोरियल के कारण पूर्ण हैं फिर और कुछ लिखने-लिखाने की क्या आवश्यकता है। इसी प्रकार मानवीय अदालतों में देखा जाता है कि जब एक व्यक्ति अपनी अपील में उत्तम कारणों का सामान एकत्र करता है तो दूसरा पक्ष इस बात पर हरगिज़ संतोष नहीं करता कि पहली अदालत में मैं पूर्ण कारणों को दे चुका हूं, अब मुझे क्या आवश्यकता है कि इस अपील के कारणों का खण्डन करूं या वकील करता फिरूं बल्कि मेरे पहले कारण ही पर्याप्त होंगे। मैं ख़ूब जानता हूं कि अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम के सदस्य और उसके सहायक अपने सांसारिक मामलों में हमेशा ऐसा ही करते होंगे और ऐसा ही समझते होंगे। परन्तु इस्लाम धर्म के संबंध में इस सिद्धान्त को भुला दिया है।

अत: यह स्मरण रहे कि आज तक जो कुछ विरोधियों के मुकाबले पर किया गया है कुछ भी चीज़ नहीं। हमारे विरोधियों ने संसार में करोड़ों पुस्तकें प्रसारित करके प्रत्येक क़ौम तथा प्रत्येक वर्ग के इन्सान को इस्लाम से कुधारणा रखने वाला कर दिया है। हमने उनकी करोड़ों पुस्तकों और पत्रिकाओं और उन दो पृष्ठीय पत्रिकाओं की तुलना पर जो एक माह में पंजाब और हिन्दुस्तान में कई लाख प्रकाशित की जाती ह तथा प्रत्येक क़ौम पुरुष-स्त्री तक प्रसारित की जाती हैं क्या किया है। फिर उन तीन हज़ार आरोपों का जो भिन्न-भिन्न प्रकार से कई ज्ञान संबंधी शैलियों में संसार में प्रसिद्ध किए गए और दिलों में बिठाए गए हैं। इस्लाम की ओर से क्या उत्तर प्रकाशित हुआ है। यह तो हमने कुछ कम करके उन आरोपों को लिखा है जो प्राय: देखने और सुनने में आए। अन्यथा अन्यायी विरोधियों को पवित्र-क़ुर्आन के सैकड़ों स्थानों पर और भी आरोप

हैं कि उनका उत्तर लिखना जैसे पवित्र क़ुर्आन की पूर्ण तफ़्सीर (व्याख्या) को चाहता है। अब बुद्धिमान और न्यायवान तनिक सोचें कि अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम और उसके सहायकों, का यह कैसा अन्याय है कि वे अपने सांसारिक कार्यों में तो ऐसे तन्मय हैं कि सारे यत्न प्रयोग में लाते हैं परन्तु इस बात की कुछ भी आवश्यकता नहीं समझते कि विरोधियों की दिन-रात की दज्जाली कोशिशों की तुलना में इस्लाम की ओर से भी कोशिश होती रहे। हम तो उसी दिन से इस अंजुमन से निराश हो गए जब उसने इस असीम सुलह की बुनियाद डाली कि हज़रत अबू बकर[रज़ि.] और हज़रत फ़ारूक़[रज़ि.] को गाली-गलौज करने वाला एक व्यक्ति उस (अंजुमन) का प्रेज़ीडेण्ट हो सकता है और ऐसा ही उसके मुकाबले पर बयाज़िय: सम्प्रदाय का भी कोई व्यक्ति सदस्य होने का अधिकार रखता है जो हज़रत अली[रज़ि.] को बुरे शब्दों, अपमान एवं गाली से याद करता है। क्या ऐसे सिद्धान्तों पर इस अंजुमन के लिए संभव था कि वास्तव में ईमानदारी का पालन कर सकती?

(2) दूसरा आरोप यह है कि वे मुझ पर यह आरोप लगाना चाहते हैं कि जैसे मैंने अपने 24,फरवरी 1898 ई. के मेमोरियल में उम्महातुल मोमिनीन पुस्तक को रोकने की विनती की थी और इक़रार किया था कि वह शान्ति-भंग होने का कारण है और यह भी लिखा था कि सरकार यह कानून जारी करे कि प्रत्येक पक्ष अपने धर्म की विशेषताएं वर्णन किया करे दूसरे पक्ष पर हरगिज़ आक्रमण न करे। और फिर जैसे मैंने इस मेमोरियल के विरुद्ध दूसरा मेमोरियल भेजा।

इस आरोप के उत्तर में प्रथम यह व्यक्त करना चाहता हूं कि मैंने अपने 24,फरवरी 1898 ई. के मेमोरियल में पुस्तक 'उम्महातुल मोमिनीन' को रोकने की कदापि दरख़्वास्त नहीं की। मेरे उस मेमोरियल

को ध्यानपूर्वक पढ़ा जाए कि यद्यपि मैंने उसमें यह स्वीकार किया है कि इस 'उम्महातुल मोमिनीन' पुस्तक से शान्ति-भंग होने की आशंका हो सकती है परन्तु सरकार से कदापि यह दरख़्वास्त नहीं कि कि इस पुस्तक को रोके या नष्ट करे या जलाए बल्कि उसी मेमोरियल में मैंने लिख दिया है कि यह पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है और एक हज़ार मुसलमानों के पास मुफ़्त बिना मांगे भेजी गई है तथा मेरे बहुत से प्रतिष्ठित मित्रों को भी उनकी मांग के बिना पहुंचायी गयी है। फिर कैसे हो सकता था कि मैं उस मेमोरियल में उसके रोकने की दरख़्वास्त करता बल्कि मैंने उस मेमोरियल के पृष्ठ 9 में तो कथित पुस्तक का कारण शान्ति-भंग होना व्यक्त किया और फिर पृष्ठ-10 में उसी आधार पर सरकार को इस बात की ओर ध्यान दिलाया कि वह ऐसे उपद्रव फैलाने वाले लेखों को रोकने के लिए दो उपायों में से एक उपाय अपनाए। या तो यह उपाय करे कि प्रत्येक बहस करने वाले पक्ष को यह निर्देश दे कि वह अपने प्रहार के समय सभ्यता और नम्रता से बाहर न जाए और केवल उन पुस्तकों के आधार पर आरोप लगाए जो सामने वाले पक्ष की मान्य और प्रमाणित हों और या यह उपाय प्रयोग में लाए कि आदेश जारी करे कि प्रत्येक पक्ष केवल अपने धर्म की विशेषताओं का वर्णन किया करे और दूसरे पक्ष की आस्थाओं एवं कर्मों पर कदापि प्रहार न करे। अब प्रत्येक न्यायवान सोच सकता है कि इन इबारतों में मैंने कहां लिखा है कि 'उम्महातुल मोमिनीन' पुस्तक नष्ट की जाए या रोकी जाए और मेरे इस मेमोरियल में कहां विरोधाभास है? क्या इससे विरोधाभास पैदा हो जाएगा कि प्रतिरक्षा के तौर पर आरोप लगाने वालों के आरोपों का इस उद्देश्य से उत्तर दें ताकि अपने धर्म की विशेषताएं व्यक्त करके दिखलाएं?

(3) तीसरा आरोप यह है कि "यदि मिर्ज़ा साहिब ने "सुर्मा चश्म

आर्य" न लिखी होती तो पंडित लेखराम 'तक्ज़ीब बराहीन अहमदिया' में गालियां न देता और निरर्थक आरोप न लिखता।"इसमें एडीटर साहिब का उद्देश्य यह है कि बेचारे आर्यों का कुछ भी दोष नहीं समस्त उत्तेजना 'सुर्मा चश्म आर्य से उत्पन्न हुई है। किन्तु ज्ञात होता है कि उनको इस मीन-मेख करने के समय फिर साथ ही यह धड़का भी आरंभ हुआ कि आर्यों ने इस्लाम का खण्डन लिखने में पहल की है और इन्दरमन मुरादाबादी की गन्दी पुस्तकों ने मुसलमानों में शोर डाल दिया था। इस लिए उन्होंने आर्यों का वकील बन कर यह उत्तर दिया कि जिस समय पुस्तक 'सुर्मा चश्म आर्य' लिखी गई उन दिनों में इन्दरमन की बहसें बिल्कुल पुरानी और भूली बिसरी हो चुके थे। किन्तु इस लेख में उन्होंने जितना झूठ का प्रयोग किया है तथा जितना सच्च को छुपाया है उसका सर्वज्ञ ख़ुदा ही उनके बदला दे हम क्या कर सकते हैं। याद रहे कि पुस्तक 'सुर्मा चश्म आर्य' एक मौखिक मुबाहसे के तौर पर होशियारपुर में लिखी गई थी और यह बात होशियारपुर के सैकड़ों मुसलमानों और हिन्दुओं को मालूम है कि 'सुर्मा चश्म आर्य' के लिखे जाने का कारण और प्रेरक स्वयं आर्य लोग ही हुए थे। 'सुर्मा चश्म आर्य' क्या चीज़ है? यह वही मुबाहसः है जो दिनांक 14,मार्च 1886 ई. मुझ में और मुंशी मुरलीधर ड्राइंग मास्टर में उन्हीं के अत्यधिक आग्रह पर होशियार के स्थान पर शेख मेहर अली रईस के मकान पर हुआ था। यह समस्त विवरण 'सुर्मा चश्म आर्य' के प्राक्कथन में लिख दिया गया है।★ यह मुबाहसः अत्यन्त गंभीरता एवं सभ्यतापूर्वक हुआ था और लगभग पांच

★ सुर्मा चश्म आर्य के पृष्ठ 4 में यह इबारत है- लाला मुरलीधर साहिब ड्राइंग मास्टर से होशियार में धार्मिक मुबाहसः (शास्त्रार्थ) का संयोग हुआ। इसका कारण यह हुआ कि कथित मास्टर साहिब ने स्वंय आकर दरख़्वास्त की। (इसी से)

सौ हिन्दू तथा मुसलमानों की उपस्थिति में सुनाया गया था। फिर कितना (अधिक) झूठ और लज्जाजनक बेईमानी है कि इस पुस्तक को आर्यों और मुसलमानों के वैर की जड़ ठहराया गया है। हम प्रत्येक जुर्माने के योग्य होंगे यदि कोई यह सिद्ध करके दिखा दे कि केवल हमारे हार्दिक जोश से यह पुस्तक लिखी गई थी और उसके प्रेरक लाल मुरलीधर साहिब नहीं थे। बल्कि हम बात को संक्षिप्त करने के लिए स्वयं लाला मुरलीधर साहिब को ही इस बारे में न्यायकर्ता बनाते हैं। वह क़सम खाकर वर्णन करें कि क्या होशियारपुर में यह मुबाहसः हमारी प्रेरणा से हुआ था या स्वयं मेरे मकान पर आए और इस मुबाहसः के लिए दरख़्वास्त की थी और कहा था कि इस्लाम पर मेरे कई प्रश्न हैं तथा बड़े आग्रहपूर्वक मुबाहसा करना तय किया था। इसके अतिरिक्त कोई इन्साफ़ करने वाला इस पुस्तक को प्रारंभ से अन्त तक पढ़ कर देख ले। इसमें कोई कठोर शब्द नहीं हैं। प्रत्येक शब्द आवश्यकतानुसार वर्णन किया गया है जो यथास्थान है। फिर इस अंजुमन के समर्थनों ने मुझ पर कैसे यह आरोप लगाया कि आर्यों तथा लेखराम का कुछ भी दोष नहीं वास्तव में अत्याचार इस व्यक्ति की ओर से हुआ है।

इस से पाठक समझ लें कि इस अंजुमन की नौबत कहां तक पहुंच गई है। सच कहें कि अब हिमायत-ए-इस्लाम का शब्द उनके लिए उचित है या हिमायत-ए-आर्य का। फिर यह बात भी सोचने योग्य है कि क्या यह सच है कि अंजुमन-हिमायत-ए-इस्लाम के समर्थकों के कथनानुसार 'सुर्मा चश्म आर्य' के समय इन्दरमन की पुस्तकें भूली-बिसरी हो चुकी थीं। मुझे बहुत अफ़सोस है कि केवल मुझ से वैर रखने के कारण इस अंजुमन तथा इसके समर्थकों ने न्याय और ईमानदारी के आचरण को क्यों छोड़ दिया। इन्दरमन की पुस्तकों पर कौन सा हज़ार-दो हज़ार वर्ष

गुज़र गए थे कि मुलमानों को वे घाव भूल गए थे जो अकारण झूठ गढ़कर उसकी पुस्तक 'तुहफ़तुल इस्लाम' और 'इन्द्र बज्र' तथा 'पादाश-ए-इस्लाम' से दिलों को पहुंचे थे। वे कैसे मुसलमान थे जिन्होंने ऐसी झूठ गढ़ कर बनाई हुई धोखा देने वाली पुस्तकों को भूला-बिसरा कर दिया था और उन लेखों पर सहमत हो गए थे। वे पुस्तकें तो अब तक हिन्दू प्रेम से पढ़ते और प्रकाशित करते हैं।

इसके अतिरिक्त फिर इन पुस्तकों के बाद एक और पुस्तक जो अत्यन्त गन्दी थी आर्य समाज वालों ने प्रकाशित की जो सुर्मा चश्म आर्य से कुछ समय पहले लिखी गयी थी, जिसे पंडित दयानन्द ने लिखकर हिन्दुओं और मुसलमानों में फूट डालना चाही थी जिसका नाम सत्यार्थ प्रकाश है और इसके अतिरिक्त आर्यों में पंडित दयानन्द द्वारा एक नई-नई तेज़ी उत्पन्न हो कर तथा कई छोटी-छोटी पत्रिकाएं भी प्रकाशित होना आरंभ हो गई थीं। और एक-दो अखबार भी इसी उद्देश्य से निकलते थे और प्राय: गालियों से भरे होते थे। इन लोगों तथा इनके धर्म ने जन्म लेते ही इस्लाम पर प्रहार करना और कठोर शब्दों का प्रयोग करना प्रारंभ कर दिया था। और न केवल इस्लाम बल्कि वह तो राजा रामचन्द्र और राजा कृष्ण इत्यादि हिन्दुओं के बारे में भी अच्छा विचार नहीं रखते थे और न बावा नानक साहिब के बारे में उनके लेख सभ्यतापूर्ण थे। यही कारण था कि उनके लेखों से सामान्यत: शोर मचा हुआ था। पंडित दयानन्द और उनके समर्थकों की पुस्तकें उस समय प्रकाशित हुई थीं जबकि मेरी किसी पुस्तक का नामोनिशान न था और मैंने एक पृष्ठ भी नहीं लिखा था। पंडित दयानन्द ने केवल यही नहीं किया कि सत्यार्थ प्रकाश को लिख कर करोड़ों मुसलमानों का दिल दुखाया बल्कि उन्होंने पंजाब तथा हिन्दुस्तान का भ्रमण करके सार्वजनिक जल्सों में गालियों पर कमर कस

ली और उन्होंने यह इरादा व्यक्त किया कि पंजाब और हिन्दुस्तान में आठ सौ वर्ष से हिन्दू ख़ानदान से मुसलमान हुए हैं उन सब की सन्तान को पुनः हिन्दू बनाया जाए। यह मनुष्य इतना अधिक गाली-गलौज करने वाला था कि बेचारे सनातन धर्म वाले भी इनकी ज़ुबान से सुरक्षित न रह सके। यदि भाग्यवश मृत्यु शीघ्र उन्हें चुप न करा देती तो मालूम नहीं कि उनके लेखों एवं भाषणों से देश में क्या-क्या उपद्रव पैदा होते। मैंने सुना है कि ठीक उसके व्याख्यान के समय कुछ हिन्दू सज्जनों ने अत्यधिक भड़कने के कारण उस पर पत्थर फेंके। फिर जब आर्यों की ओर से इस सीमा तक नौबत पहुंच गई थी कि बाज़ारों में कूचों में गलियों में, सार्वजनिक जल्सों में इस्लाम का अपमान किया जाता था और हिन्दुओं को मुसलमानों के मिलने-जुलने से नफ़रत दिलाई गई थी तथा द्वेष, अपमान, और गालियों का पाठ पढ़ाया जाता था तो इस स्थिति में नाम के मुसलमानों के ऐसे अतिरिक्त जो धर्म से कुछ वास्तविक संबंध न रखते हों प्रत्येक मुसलमान को इस नए पंथ की धृष्टता से कष्ट पहुंचना एक अनिवार्य बात थी और इसी कारण से बराहीन अहमदिया पुस्तक भी लिखी गई थी। अब हम अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम और उसके समर्थकों को क्या कहें और क्या लिखें, जिन्होंने इस्लाम का कुछ भी ध्यान न रखकर सच्चाई का इतना ख़ून किया। हमारी समस्त शिकायत ख़ुदा तआला के दरबार में है। ये लोग इस्लाम का दावा करके, इस्लाम की सहायता का दावा करके किस बेईमानी से ज़ुबान खोल रहे हैं। हमें कब आशा है कि अब भी वे शर्मिन्दा हो कर अपनी ग़लती का इक़रार करके रुक जाएंगे। किन्तु ख़ुदा हमारे दिल और उनके दिलों को देख रहा है। वह निस्सन्देह अपने नियमानुसार उनमें और हम में फैसला करेगा।

رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِيْنَ (अलआराफ़-90)

फिर एक आरोप अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर के समर्थकों का यह है कि इस अंजुमन के सदस्य और हमदर्द तो हज़ारों मुसलमान हैं तथा इस का महत्त्व और ज़िम्मेदारी प्रमाणित है परन्तु मिर्ज़ा साहिब को इस से अधिक एक कण भर हैसियत प्राप्त नहीं कि वह एक मुल्ला या मौलवी या बहस करने वाले या लड़ने वाले हैं। उन्हें मुसलमानों का विश्वासपात्र बनने का कोई अधिकार प्राप्त नहीं। इस आरोप के उत्तर में प्रथम तो यह समझ लेना चाहिए कि हमारे धर्म ने रस्म और आदतों के तौर पर किसी चीज़ को पसन्द नहीं किया। यदि एक व्यक्ति अपने अस्तित्व में धार्मिक पेशवा या विश्वासपात्र होने की कोई वास्तविक योग्यता नहीं रखता बल्कि इसके विपरीत उसमें बहुत से दोष पाए जाते हैं किन्तु इसके बावजूद एक बहुसंख्यक समूह का शरण-स्थल है। तो हमारा धर्म हरगिज़ वैध नहीं रखता कि केवल जन साधारण के शरण-स्थल के कारण उसे क़ौम का वकील और शासन के मामलों का व्यवस्थापक समझा जाए। हम ऐसा फ़त्वा पवित्र क़ुर्आन में नहीं पाते। पवित्र क़ुर्आन तो जगह-जगह यही फ़रमाता है कि इमाम और पेशवा तथा आदेश देने वाले बनाने के योग्य वही लोग हैं जिन की धार्मिक जानकारियां विशाल हों और सही विवेक एवं विस्तृत ज्ञान रखते हैं तथा संयम, पवित्रता और निष्कपटता के सद्गुणों से विभूषित हों, ऐसे न हों कि अपने उद्देश्यों के कारण और चन्दों के लालच से प्रत्येक गुमराह समुदाय को अंजुमन का सदस्य बनाने के लिए तैयार हों। निष्कर्ष यह कि ख़ुदा तआला का आदेश यही है कि साहिबुल अम्र (आदेश देने वाला) बनाने के लिए वास्तविक योग्यता देखो। भेड़चाल न अपनाओ।

फिर इसके अतिरिक्त यह विचार भी ग़लत है कि मुसलमानों ने अंजुमन हिमायत के लोगों को हार्दिक आस्था से अपना इमाम, अनुकरणीय

तथा पेशवा बना रखा है। बल्कि वास्तविक स्थिति यह है कि अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर के साथ जितने लोग सम्मिलित हैं वे इस विचार से सम्मिलित है कि यह अंजुमन इस्लाम के कठिन कार्यों में अपनी राय से कुछ नहीं करती बल्कि मुसलमानों के सार्वजनिक मशवरे और बहुमत की राय से किसी पहलू को ग्रहण करती है। यही ग़लती है जिस से अधिकतर लोग धोखा खाते हैं न यह कि वे वास्तव में स्वीकार कर चुके हैं कि यही अंजुमन शेख़ुलकुल फ़िलकुल (सब मामलों में प्रमुख धर्माचार्य) है। यह तो अंजुमन के महत्त्व के प्रमाणित होने की वास्तविकता है जिसे हमने वर्णन किया। रहा यह आरोप कि जैसे यह लेखक (ख़ाकसार) समस्त मुसलमानों की दृष्टि में केवल एक मुल्ला या उपदेशक की हैसियत रखता है। यह वह लज्जाजनक झूठ है जिसे कोई कुलीन और सत्प्रकृति व्यक्ति प्रयोग नहीं कर सकता। अंजुमन को मालूम है कि मुसलमानों में सैकड़ों प्रतिष्ठित, सम्मानित, विद्वान और शिक्षित लोग जिन का उदाहरण अंजुमन के सदस्यों तथा समर्थकों में तलाश करना समय को नष्ट करना है। मुझे वे मसीह मौऊद मानते हैं जिसकी प्रशंसाएं स्वयं हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने की हैं। फिर यह विचार व्यक्त करना कि समस्त लोग केवल एक मुल्ला समझते हैं उन लोगों का काम है जो शर्म, ईमानदारी और सच बोलने से कुछ संबंध नहीं रखते। परन्तु अफ़सोस का कुछ स्थान नहीं क्योंकि पहले भी सच्चों, नबियों और रसूलों को ऐसा ही कहा गया है तथा यह कहा कि मिर्ज़ा साहिब अपने अनुयायियों की संख्या तीन सौ अठारह से अधिक नहीं बता सकते। यह कितना सच्चाई को गुप्त रखना है। यह संख्या तो केवल उन लोगों की लिखी गई थी जो सरसरी तौर पर उस समय विचार में आए न यह कि वास्तव में यही संख्या थी और इसी पर निर्भरता थी। बल्कि हमने अपने एक लेख में स्पष्ट तौर पर प्रकाशित

भी कर दिया था कि अब हमारी जमाअत की संख्या आठ हज़ार से कम नहीं होगी। परन्तु यह एक बहुत समय पहले की बात है और इस समय तो बड़े विश्वास से कह सकते हैं कि दो हज़ार की और वृद्धि हो गयी है। हमारी जमाअत इस समय दस हज़ार से कम नहीं है जो पेशावर से लेकर बम्बई, कलकत्ता, कराची, हैदराबाद दक्कन, मद्रास, आसाम देश, बुख़ारा, ग़ज़नी, मक्का, मदीना और शाम देश तक फैली हुई है और प्रत्येक वर्ष में कम से कम तीन सौ लोग हमारी जमाअत में बैअत करने वालों के समूह में दाख़िल होते हैं। यदि कोई दस दिन भी क़ादियान आकर ठहरे तो उसे ज्ञात हो जाएगा कि कितनी तेज़ी से ख़ुदा तआला का फ़ज़्ल (कृपा) लोगों को हमारी ओर खींच रहा है। अंधों और नेत्रहीनों को क्या ख़बर है कि किस श्रेष्ठता की सीमा तक यह सिलसिला पहुंच गया है और सत्य के अभिलाषी लोग कैसे يَدۡخُلُوۡنَ فِیۡ دِیۡنِ اللّٰہِ اَفۡوَاجًا (सूरत अन्नस्र-3) के चरितार्थ हो रहे हैं। फिर क्या कारण है कि यह अंजुमन अपनी इस अल्प हैसियत और कमज़ोर जीवन के बावजूद सूर्य पर थूक रही है क्या यही कारण नहीं कि इन लोगों का धर्म की ओर ध्यान नहीं। इसके बावजूद कि दूर–दूर से सैकड़ों लोग आकर हिदायत पाते जाते हैं परन्तु इस अंजुमन का एक सदस्य भी अब तक हमारे पास नहीं आया ताकि सत्य के अभिलाषियों की तरह हम से हमारे दावे के कारण पूछे। क्या यह धार्मिकता का लक्षण है कि एक व्यक्ति उनके बीच खड़ा है और कह रहा है कि मैं वही मसीह मौऊद हूं जिसके अनुकरण के लिए तुम्हें वसीयत की गई है और इनमें से उसकी आवाज़ कोई नहीं सुनता? और न दावे को रद्द कर सकते हैं और न वैर के कारण स्वीकार कर सकते हैं। क्या यह इस्लाम है? बल्कि कभी तो केवल मनगढ़त झूठ के तौर पर इस अंजुमन के समर्थक हमारी व्यक्तिगत बातों पर प्रहार करते हैं और

कभी कभी अपनी बात को बढ़ावा देने के लिए स्पष्ट झूठ बोलते हैं और कभी सरकार को जो हमारी स्थितियों तथा हमारे ख़ानदान की स्थितियों से अपरिचित नहीं है धोखा देने के लिए उकसाना चाहते हैं। क्या यह इस्लाम की सहायता हो रही है। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। थोड़ा ध्यान से दूसरे फिर्कों की क़ौमी हमदर्दी देखो। उदाहरणतया इसके बावजूद कि सनातन धर्म और आर्य मत के सदस्यों में भी अत्यन्त द्वेष है बल्कि आर्य समाज वालों का एक गिरोह दूसरे से घोर शत्रुता रखता है। परन्तु फिर भी उन्होंने भी क़ौमी हमदर्दी का ध्यान रख कर कभी एक दूसरे पर सरकार को ध्यान नहीं दिलाया परन्तु अंजुमन हिमायत–ए–इस्लाम के समर्थकों, पैसा अख़बार तथा पंजाब ऑबजरवर ने हमारी व्यक्तिगत बातों पर बहस करते हुए अपने भाषण को स्डेशन कानून के निकट पहुंचा दिया है और इस बार हम उन अनुचित प्रहारों के बारे में क्षमा और माफ़ करने के पाबन्द होते हैं किन्तु भविष्य में हम इन दोनों अख़बारों के एडीटरों को सतर्क करना चाहते हैं कि वे सही घटनाओं को लिखते समय अपने संवेदनशील दायित्वों को भूल न जाएं और कानून का निशाना बनने से बचें तथा जो कुछ हमारे बारे में और हमारी जमाअत के बारे में लिखें सोच–समझ कर लिखें। क्योंकि हर बार, हर अवसर पर एक अन्याय करने वाला मनुष्य क्षमा दिए जाने का अधिकार नहीं रखता। निस्सन्देह क्षमा करना और माफ़ करना हमारा सिद्धान्त और बुराई का मुकाबला न करना हमारा आचरण है। किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि यद्यपि किसी के झूठ गढ़ने तथा झूठ से कैसी ही हानि और बदनामी हमारे साथ संलग्न हो या हमारे मिशन पर प्रभाव डाले फिर भी हम बहरहाल चुप ही रहें, बल्कि ऐसी बदनामी जो हमारे ऊपर धोखेबाज़ी बेईमानी, झूठ तथा छलपूर्ण कार्रवाई का दाग़ लगाती हो। उसे सहन करना धार्मिक हितों की

दृष्टि से हरगिज़ वैध नहीं, क्योंकि इस से जन–साधारण की दृष्टि में एक बुरा नमूना स्थापित होता है। ऐसे अवसर पर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने भी मिस्र की सरकार को समीक्षा के लिए ध्यान दिलाया था। इसलिए अंजुमन और उसके समर्थकों को चाहिए कि इस नसीहत को अच्छी तरह याद रखें और हम इस समय अल्लाह तआला की क़सम खाकर वर्णन करते हैं कि हमने अंजुमन हिमायत–ए–इस्लाम का विरोध अत्यन्त नेकनीयत के साथ किया था और हम भयभीत तथा कांप रहे थे कि यह आचरण जो अंजुमन ने अपना लिया है इस्लाम के लिए हरगिज़–हरगिज़ लाभप्रद नहीं है। क्या अंजुमन ग़लती करने से सुरक्षित है? या नबियों की तरह अपने लिए निर्दोष होने का संबोधन उचित समझती है। फिर हमारी नसीहत जो केवल निष्कपटता पर आधारित थी उसे क्यों बुरी लगी। बुद्धिमान को चाहिए कि मामले के दोनों पहलुओं को ध्यान में रखकर किसी पहलू को अपनाए। हम बहुत बल देकर कहते हैं कि यह पहलू जो अंजुमन ने अपनाया हमारे मौला करीम (कृपालु ख़ुदा) के उद्देश्य के अनुकूल हरगिज़ नहीं है जो पवित्र क़ुर्आन में प्रकट किया गया है और हम प्रतीक्षा करते हैं कि देखें कि इस मेमोरियल से अंजुमन को कौन सी स्पष्ट सफलता प्राप्त होती है जो उन्हें खण्डन लिखने से क्षमा कर देगी। यदि कल्पना के तौर पर यह बात भी हो कि समस्त प्रकाशित पुस्तकें पंजाब और हिन्दुस्तान से वापस मंगाई जाएं और फिर जला दी जाएं या अन्य (किसी) प्रकार से नष्ट कर दी जाएं और भविष्य में कानूनी तौर पर किसी दण्ड के वादे की धमकी देकर कहा जाए कि कोई पादरी इस्लाम के मुकाबले पर कभी तथा किसी समय में ऐसे शब्दों का प्रयोग न करे। फिर भी यह सम्पूर्ण कार्रवाई खण्डन लिखने का स्थानापन्न नहीं हो सकती। अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है कि निश्चित

तौर पर वही तबाह होता है जो स्पष्ट आदेशों से तबाह हो। किन्तु यदि अंजुमन के प्रार्थना–पत्र पर कोई ऐसी कार्यवाही न हुई बल्कि कोई मामूली और महसूस न होने वाली कार्यवाही हुई तो उस दिन विरोधियों की इस अवनति पर प्रसन्नता होगी स्पष्ट है। इसलिए हमें अंजुमन की इस राय पर बार–बार रोना आता है। अफ़सोस कि इन लोगों ने खण्डन लिखने वालों के मार्ग को भी बन्द करना चाहा है। अफ़सोस कि इस अंजुमन को यह भी ख़बर नहीं थी कि 'उम्महातुल मोमिनीन' पुस्तक के लेखक ने कथित पुस्तक में यह दावा किया है कि कोई मुसलमान इस का उत्तर नहीं दे सकेगा। अब अंजुमन ने उत्तर देने से मुंह फेर कर तथा एक अन्य पहलू अपना कर दिखा दिया कि उनका यह विचार उचित है और अंजुमन के समर्थक जैसा कि पैसा अख़बार तथा 'ऑबज़रवर' बल देकर कहते हैं कि खण्डन की कुछ भी आवश्यकता नहीं थी पहली पुस्तकें बहुत हैं। अब वही बात हुई कि जो अल्लाह तआला फ़रमाता है–

وَ لَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ

(सूरह सबा-21) अब क्या अंजुमन उस स्थिति में कि मेमोरियल का लक्ष्य ख़ाली जाए या अधूरा रहे उस दूसरे पहलू को अपना सकती है कि खण्डन लिखा जाए। और ऐसे इरादे को पैसा अख़बार या ऑबज़र्वर इत्यादि अख़बारों में प्रकाशित कर सकती है? हरगिज़ नहीं। अब मुसलमान देख लें कि इस अंजुमन की जल्दबाज़ी से इस्लाम की वास्तविक कार्रवाई को कितनी हानि पहुंची है और इस्लाम की प्रतिरक्षा में हानि हुई है। आदरणीय सर सय्यद अहमद ख़ान कैसा बहादुर और प्रवीण तथा इन कार्यों में प्रतिभावान व्यक्ति था, उन्होंने अन्तिम समय में भी इस पुस्तक का खण्डन लिखना अत्यावश्यक समझा और मेमोरियल भेजने की ओर हरगिज़ ध्यान न दिया। यदि वह जीवित होते तो आज वह मेरी राय का ऐसा ही समर्थन करते जैसा कि उन्होंने रूम के बादशाह के बारे में केवल

मेरी ही राय का समर्थन किया था और विरोधी रायों को बहुत अप्रिय और आपत्तिजनक ठहराया था। अब हम उस महान राजनीतिक हितों को जानने वाले को कहां से पैदा करें ताकि वह भी हम से मिल कर इस अंजुमन की जल्दबाज़ी पर रोएं। सच है कि– "मर्दों की क़द्र उनके मरने के बाद होती है।"

यदि इस अंजुमन की ओर से यह बहाना प्रस्तुत हो कि हम खण्डन लिखने के इसलिए विरोधी हैं कि ये लोग यद्यपि कैसी ही गुस्ताख़ी (धृष्टता) से काम लेते हैं परन्तु फिर भी शाही धर्म से संबंध रखते हैं इसलिए उनका खण्डन लिखना सम्मान के विरुद्ध है। तो हम कहते हैं कि क्या गिरफ़्त करने के लिए और दण्डित करने के लिए मेमोरियल भेजना यह सम्मान में सम्मिलित है। हमारी महान सरकार ने बहुत बुद्धिमत्ता और उच्च साहस से यह कानून प्रत्येक के लिए खोला हुआ है कि यदि कोई व्यक्ति किसी के धर्म पर राय के मतभेद के आधार पर प्रहार करे तो उस दूसरे व्यक्ति को भी अधिकार है कि वह उस प्रहार को रोके। यह सच है कि चूंकि हम इस सरकार की प्रजा हैं और दिन–रात असंख्य उपकार देख रहे हैं, इसलिए हमारा यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि सच्चे दिल से इस सरकार की आज्ञा का पालन करें और इसके उद्‌देश्यों के सहायक हों। इसके मुक़ाबले पर, आदर विनम्रता और आज्ञा पालन करने के साथ जीवन व्यतीत करें जिसके सही और उचित होने पर हमारी बुद्धि, हमारी अन्तरात्मा, हमारा विवेक फ़त्वा देता हो। हम तो बार–बार स्वयं गवाही देते हैं कि अत्यन्त नीच वे लोग हैं जो इस सरकार के निरन्तर उपकारों को देख कर और उसकी छत्र–छाया में अपने माल प्राण तथा सम्मान को सुरक्षित पा कर फिर विद्रोह के निशान दिल में छुपाए रखते हों। यह तो हमारा वह धर्म है जो हमें ख़ुदा तआला सिखाता है। किन्तु पादरियों के

झूठे आरोपों का उत्तर देना यह दूसरी बात है यह ख़ुदा का अधिकार है जिसे अदा करना अनिवार्य है। सर सय्यद अहमद ख़ान साहिब की सदैव नीति इसी की साक्षी है। वह हमेशा पादरियों का खण्डन लिखते रहे, यहां तक कि इलाहाबाद के लेफ्टीनेन्ट गवर्नर म्योर साहिब की पुस्तक का भी किसी सीमा तक खण्डन लिखा, परन्तु पादरियों के दण्ड दिलाने के लिए या पुस्तकों को नष्ट करने के लिए उन्होंने सरकार को कभी मेमोरियल नहीं भेजा। अत: हमें वह मार्ग निकालना चाहिए जो निश्चित तौर पर हमारी नस्लों को लाभप्रद हो और उस से इस्लाम धर्म का वास्तविक सम्मान पैदा हो। और वह यही है कि हम आरोपों से बचाव के लिए ध्यान दें और नौजवानों को ठोकर खाने से बचाएं।

एक और प्रहार पंजाब ऑबज़र्वर में कथित अंजुमन के समर्थन में हम पर किया गया है जो मई 1898ई. के अखबार में प्रकाशित हुआ है। और वह यह है कि एडीटर साहिब ने कथित अख़बार में ऐसा विचार कर लिया है कि जैसे हमारी जमाअत ने ज़टल्ली नामक एक व्यक्ति की गालियों से भड़क कर उसे दण्ड दिलाने के लिए सरकार में मेमोरियल भेजा है और उनकी यह हरकत स्पष्ट बता रही है कि वह जोश जो उनको दण्ड दिलाने के लिए इस स्थान पर आया, उस जोश तथा स्वाभिमान के विरुद्ध वह मेमोरियल है जो अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम के विरोध में लिया गया है। किन्तु एडीटर साहिब यदि मेरी जमाअत के मेमोरियल को तनिक ध्यानपूर्वक पढ़ते तो ऐसा हरगिज़ न लिखते। क्योंकि प्रथम तो उस मेमोरियल और अंजुमन के मेमोरियल में जैसे पृथ्वी-आकाश का अन्तर है। जिस व्यक्ति के दण्ड या पुस्तकों को नष्ट कराने के लिए अंजुमन ने मेमोरियल भेजा है उसने ज़टल्ली की तरह यह मार्ग नहीं अपनाया कि केवल गालियां दी हों बल्कि, गालियों के अतिरिक्त अपनी समझ में इस्लामी पुस्तकों के हवाले

देकर आरोप लिखे हैं। अतः पक्षपाती ईसाइयों का इसी बात पर ज़ोर है कि उसने कोई गाली नहीं दी बल्कि इस्लामी पुस्तकों के हवाले से घटनाओं का वर्णन किया है। फिर यदि यह बिल्कुल सच और सर्वथा सच है कि ऐसा बहाना करने वाले स्पष्ट झूठ बोलते तथा सच बोलने के आचरण को छोड़ते हैं किन्तु न्याय एवं बुद्धि के अनुसार हम पर यही अनिवार्य है कि प्रथम उन झूठे आरोपों और आपत्तियों को जो बेईमानी तथा अन्यायपूर्वक लगाए गए हैं अत्यन्त औचित्य तथा सफाई के साथ दूर करें। और फिर यदि यही दण्ड पर्याप्त न हो कि झूठ बोलने वाले का झूठ खोला जाए तो प्रत्येक को अधिकार है कि सरकार की ओर रुजू करे। हमने बड़ी नेक नीयत तथा उस विवेक से जो ख़ुदा ने हमारे दिल में डाला है इसी बात को पसन्द किया है कि गालियों की कल्पना से हमारे दिल बहुत घायल और ज़ख़्मी हैं। किन्तु अत्यावश्यक और प्रमुख कार्य यही है कि जन सामान्य को धोखों से बचाने के लिए पहले आरोपों का निवारण करने की ओर ध्यान दें। अंजुमन और उसके समर्थकों को ख़बर नहीं है कि आजकल अधिकतर लोगों के दिल कितने बीमार तथा कुधारणा करने की ओर दौड़ते हैं। फिर जिस हालत में उस अपवित्र पुस्तक के लेखक ने अपनी इस पुस्तक में यही भविष्यवाणी की है कि मुसलमान इसके उत्तर की ओर हरगिज़ ध्यान नहीं देंगे। तो यदि यही पहलू दण्ड दिलाने का अपनाया जाए तो जैसे उस की बात को सच्चा करना है और जन साधारण का कोई मुंह बन्द नहीं कर सकता। हमारी इस दण्ड दिलाने की कार्यवाही पर सामान्य लोगों, ईसाइयों तथा आर्यों का यही आरोप होगा कि ये लोग जब उत्तर देने से असमर्थ हो गए तो अन्य यत्नों की ओर दौड़े। अब विचार करो कि इस प्रकार की बातें लोगों की ज़ुबान पर जारी होना इस्लाम धर्म के अपमान का कारण हो सकती हैं। परन्तु अंजुमन के मेमोरियल का मेरी जमाअत के

मेमोरियल पर अनुमान लगाना ऐसा असंबंधित अनुमान है जिसे तर्कशास्त्र की परिभाषा में 'कियास* मअल-फारिक़' कहा जाता है। क्योंकि ज़टल्ली के लेख में ज्ञान के रंग में कोई आरोप नहीं ताकि उसका निवारण करना प्रमुख होता। बल्कि वह तो केवल मज़ाक से हंसी-ठट्ठे के तौर पर बहुत गन्दी गालियां देता है और उन गालियों के अतिरिक्त उसके अख़बार और विज्ञापन में कुछ भी नहीं और उसकी इतनी ही हैसियत ज़टल्ली के शब्द से भी समझ आती है जो उसने अपने लिए निश्चित की है। तो उसके बारे में मेमोरियल भेजना केवल इस उद्देश्य से था ताकि दिखाया जाए कि ये लोग कैसी गन्दी गालियों के अभ्यस्त और हमें अकारण कठोर शब्दों के प्रयोग से झूठा आरोप लगाते हैं। चूंकि हमारे विरोधियों ने शरारत से यह प्रसिद्ध कर रखा है कि हमारे लेख कठोर, सख़्त और उपद्रव फैलाने वाले हैं। इसलिए आवश्यक था कि हम सरकार को उनके लेखों का कुछ नमूना दिखाते, जैसा कि हमने 'किताबुलबरिय्य:' में भी कुछ नमूना दिखाया है। परन्तु मेरी जमाअत का यह मेमोरियल उस हालत में भी अंजुमन के मेमोरियल से समान और समरूप हो सकता था कि जब अंजुमन की तरह मेरी जमाअत भी ज़टल्ली की पूछ-ताछ और दण्ड के लिए कोई निवेदन करती। स्पष्ट है कि उन्होंने मेमोरियल में ज़टल्ली को स्वयं ही क्षमा कर दिया है और लिख दिया है कि हम उसे कोई दण्ड दिलाना नहीं चाहते। अब देखो यह कितनी नैतिक बात है जिसे ऑबज़र्वर ने जान-बूझ कर प्रकट नहीं किया ताकि वास्तविकता के खुलने से उसका उद्देश्य नष्ट न हो जाए। ख़ुलासा यह है कि ज़टल्ली का मूल उद्देश्य केवल गालियां देना और हंसी-ठट्ठा करना है परन्तु उम्महातुल मोमिनीन पुस्तक के लेखक

* **कियास मअलफ़ारिक़-** एक चीज़ का दूसरी चीज़ पर उन में अनुकूलता एवं समानता के बिना अनुमान लगाना। (अनुवादक)

का मूल उद्देश्य आरोप लगाना है और गाली उसने इसी कारण अपनाई है ताकि लोग उत्तेजित होकर उसके मूल उद्देश्य की ओर ध्यान न दें। इसलिए उसकी गालियों की ओर ध्यान देना मूल उद्देश्य से दूर जा पड़ना था। तो यह कितनी (बड़ी) ग़लती है कि इन दोनों मेमोरियल को एक जैसा और एक ही रूप का समझा जाता है। हमारा यह सिद्धान्त होना चाहिए कि जब किसी विरोधी की बातों में गालियां और आरोप इकट्ठे हों तो प्रथम आरोपों का उत्तर देकर आम लोगों को धोखा खाने से बचाएं, फिर अन्य बातों के बारे में जो कुछ परस्पर समय और हित के विरुद्ध न हो वही करें अकारण उपद्रव फैलाने का सिलसिला प्रारंभ न करें। इसके अतिरिक्त जैसा कि वर्णन कर चुका हूं हमारी जमाअत के मेमोरियल में ज़टल्ली को दण्ड देने के लिए हरगिज़ निवेदन नहीं किया गया बल्कि उस मेमोरियल के छठे वाक्य को देखना चाहिए। उसमें स्पष्ट तौर पर उल्लेख है कि हम हरगिज़ उचित नहीं समझते कि कथित मुल्ला तथा ऐसे अन्य उपद्रवियों पर फौजदारी अदालत में मुकद्दमें करें और न कोई ऐसी बात करें जिस का परिणाम उपद्रव हो।

अब देखो कि जिस मेमोरियल को हमारे इस मेमोरियल से विपरीत समझा गया है वह उसके मूल उद्देश्य के अनुसार एवं अनुकूल है। बहुत अफ़सोस है कि इस से पूर्व कि मेमोरियल को ध्यान से पढ़ा जाता आरोप किया गया है।

अन्त में पंजाब ऑबज़र्वर में इस बात पर बहुत ही बल दिया गया है कि ऐसे कठोर शब्द सुनने से जो पुस्तक 'उम्महातुल मोमिनीन' में दर्ज हैं, यदि एक सभ्य व्यक्ति जो अपने दिल पर जब्र करके सब्र कर सकता है कोई जोश दिखाने से चुप रहे तो क्या उसके सहपंथियों की बहुसंख्यक जमाअत भी जो इतना सब्र नहीं रखती चुप रह सकती है।

अर्थात् बहरहाल शान्ति-भंग होने का दामन को पकड़ कर रोकने वाला खतरा है जिसका कानूनी तौर पर रोकना आवश्यक है। मैं इसके उत्तर में कहता हूं कि मैंने कब और किस समय इस बात से इन्कार किया है कि ऐसे उपद्रव फैलाने वाले लेखों से शान्ति-भंग होने की संभावना है बल्कि मैं तो कहता हूं कि न केवल साधारण संभावना बल्कि अत्याधिक संभावना है बशर्ते कि मुसलमानों के जन सामान्य शिक्षित लोग हों। किन्तु मैं बार-बार कहता हूं कि इस उपद्रव को रोकने के लिए जो उपाय सोचा गया है और जिस आशय से मेमोरियल भेजा गया है यह विचार उचित नहीं है बल्कि अत्यन्त कच्चा और कमज़ोर विचार है। इस अंजुमन के समर्थक बार-बार अपने अखबारों में वर्णन करते हैं कि उस मेमोरियल से जो अंजुमन ने भेजा है मूल उद्देश्य यह है कि उम्महातुल मोमिनीन पुस्तक को प्रकाशित होने से रोक दिया जाए। अतः मैं इसी उद्देश्य पर ऐतराज़ करता हूं। मुझे बहुत से पत्र और ठोस सूचनाओं के माध्यम से ज्ञात हुआ है कि 'उम्महातुल मोमनीन' पुस्तक का प्रकाशन पूर्ण रूप से हो चुका है और एक हज़ार पुस्तक मुफ़्त बांटी जा चुकी। अब कौन सा प्रकाशित होना शेष है। जिसे रोका जाए। अफ़सोस यह अंजुमन क्यों इस बात को आंख खोलकर नहीं देखती कि अब सम्पूर्ण शोर और आर्तनाद समय के बाद है। हां यदि यह विचार हो कि यद्यपि यह मेमोरियल जो अंजुमन ने भेजा है समय के बाद है परन्तु यदि सरकार ने यह आदेश दे दिया कि इन पुस्तकों का प्रकाशित होना रोक दिया जाए तो इस्लाम के लोग प्रसन्न हो जाएंगे और इस प्रकार से शान्ति-भंग होने का ख़तरा नहीं रहेगा। तो मैं कहता हूं कि अब कौन सा ख़तरनाक जोश लोगों में फैला हुआ है। हालांकि इस पुस्तक के प्रकाशन पर तीन महीने गुज़र भी गए। वास्तविक स्थिति यह है कि मुसलमानों के जन सामान्य अधिकतर

अशिक्षित हैं। उनको ऐसी पुस्तकों के विषय की ख़बर भी नहीं होती अन्यथा जोश फैलने के वे दिन थे जब एक हज़ार पुस्तक मुफ़्त बांटी गई थी और बिना मांग लोगों के घरों में पहुंचाई गई थी। फिर हम देखते हैं कि वे ख़तरनाक दिन कुशलतापूर्वक गुज़र गए और ये पुस्तकें शुभ संयोग से ऐसे लोगों की दृष्टि तक सीमित रहीं जिनमें पशुओं वाला जोश नहीं था। सच है कि उन सब को इस पुस्तक से बहुत कष्ट पहुंचा है। परन्तु ख़ुदा तआला की दूरदर्शिता और कृपा ने जन सामान्य के कानों से इन गन्दे तथा भड़काने वाले लेखों को दूर रखा। बहरहाल जिस समय मेमोरियल भेजा गया जन सामान्य के जोश का समय गुज़र चुका था हां उत्तर लिखने का समय था और अब तक है।

क्या अंजुमन को ख़बर नहीं कि पुस्तकों के लेख पर जोश प्रदर्शित करना शिक्षित लोगों का कार्य है और शिक्षित लोग किसी सीमा तक सभ्यता एवं सब्र रखते हैं। बेचारे जन सामान्य जो प्राय: अशिक्षित होते हैं वे ऐसी गालियों से अपरिचित रहते हैं। यही कारण है कि इसके बावजूद कि इसी प्रकार की सैकड़ों पुस्तकें पादरी लोगों ने लिख कर इस देश में प्रकाशित की हैं और इसी प्रकार के लेख उनके अखबारों में भी प्रकाशित होते रहते हैं और यह कार्रवाई न केवल एक-दो दिन की बल्कि साठ वर्ष की है परन्तु फिर भी वे लेख यद्यपि कैसे ही उपद्रव फैलाने वाले हों किन्तु ख़ुदा तआला की ओर से यह सामान पैदा हो गए हैं कि लोग वहशियों की तरह इन लेखों से उत्तेजित हो सकते हैं वे प्राय: अशिक्षित हैं और जो लोग इन लेखों को पढ़ते और देखते हैं वे प्राय: सभ्य हैं जो लेख का उत्तर लेख द्वारा ही देना चाहते हैं। यह वह बात है जो केवल काल्पनिक नहीं बल्कि साठ वर्ष के निरन्तर अनुभव से सिद्ध हो चुकी है और यदि ऐसे लेखों से कोई उपद्रव फैल सकता तो सर्वप्रथम पादरी इमादुद्दीन के लेख यह

ज़हरीला प्रभाव अपने अन्दर रखते थे, जिनके बारे में एक अंग्रेज़ अन्वेषक ने भी गवाही दी है कि "यदि 1857 ई. का ग़दर पुनः होना संभव है तो इसका कारण भी पादरी इमादुद्दीन के लेख होंगे।" परन्तु मैं कहता हूं कि यह विचार भी कच्चा है क्योंकि पादरी इमादुद्दीन की पुस्तकों को प्रकाशित हुए लगभग तीस वर्ष का समय गुज़र गया परन्तु इसके बावजूद मुसलमानों की ओर से कोई उपद्रव फैलाने वाला कार्य जारी नहीं हुआ और क्योंकर जारी हो। समस्त मुसलमान क्या निम्न और क्या उच्च ख़ूब जानते हैं कि सरकार को इन लेखों से कुछ संबंध नहीं। प्रत्येक व्यक्ति धार्मिक स्वतंत्रता के कारण अपनी आन्तरिक विशेषताएं दिखा रहा है। सरकार ने अपनी प्रजा पर सिद्ध कर दिया है कि वह किसी का पक्षपात करने के बिना बहुत न्याय एवं इन्साफ़ बादशाही दया और हमदर्दी से ब्रिटिश इण्डिया में शासन कर रही हैं। यही कारण है कि मुसलमान जब किसी अन्य धर्म का ऐसा लेख देखते हैं या इस प्रकार की दिल दुखाने वाली पुस्तक उनकी दृष्टि से गुज़रती है तो वे ऐसी पुस्तक को केवल एक व्यक्ति के व्यक्तिगत पाप,शत्रुता मूर्खता और दोहरी मूर्खता (अर्थात् मूर्ख होना और स्वयं को विद्वान समझना) का परिणाम समझते हैं और 'मआज़ अल्लाह' किसी को यह विचार हरगिज़ नहीं आता कि सरकार का इसमें कुछ हस्तक्षेप है। पंजाब के मुसलमान साठ वर्ष से निरन्तर इसका अनुभव कर रहे हैं कि इस सरकार के सिद्धान्त उच्च कोटि के न्याय प्रिय एवं न्याय फैलाने पर आधारित हैं। और हरगिज़ संभव नहीं कि एक सेकण्ड के लिए भी उनके दिल में गुज़र सके कि देशीय पादरी सरकार की दृष्टि में क्षमा के योग्य हैं। अत: जब इस उपकारी सरकार के बारे में प्रजा के दिल अत्यन्त साफ हैं तो इस स्थिति में यदि पादरियों की गालियों से किसी शान्ति के भंग होने का ख़तरा हो तो शायद इतना हो कि किसी अवसर पर एक समूह दूसरे समूह से दंगा-फ़साद करे। परन्तु सच

यह है कि एक लम्बे समय का अनुभव हम पर सिद्ध करता है कि आज तक यह दंगा-फ़साद भी एक क़ौम का दूसरी क़ौम से नहीं हुआ। हालांकि इन गत साठ वर्षों में हम लोगों ने देशी पादरियों के वे कठोर लेख पढ़े हैं और वे दिल दुखाने वाले वाक्य हमारी दृष्टि से गुज़रे हैं जिन से दिल टुकड़े-टुकड़े हो सकता है, इसके बावजूद मुसलमानों की ओर से कोई उत्तेजना और क्रोध प्रकट नहीं हुआ। इसका कारण यह है कि मुसलमानों के उलमा खण्डन लिखने की ओर ध्यान देने लगे। तो जिस जोश को कुछ मूर्खों ने पशुओं की तरह प्रदर्शित करना था वह सभ्यतापूर्वक क़लम और काग़ज़ के द्वारा प्रकट किया गया। जबकि मुसलमानों का एक बड़ा समूह अशिक्षित है जो ऐसे लेखों की कुछ जानकारी नहीं रखता। यही कारण है कि ये समस्त ज़हरीले लेख किसी फ़साद का कारण न हो सके और विश्वास किया जाता है कि भविष्य में भी फ़साद का कारण न हों, क्योंकि मुसलमान अब साठ वर्षों के समय से इस आदत पर सुदृढ़ हो गए हैं कि लेखों का उत्तर लेखों से दिया जाए और यह कूटनीति अमन क़ायम रखने के लिए अत्युत्तम और प्रभावी है कि भविष्य में भी इसी आदत पर सुदृढ़ रहें और अन्य उपायों की ओर ध्यान न दें।

इसके अतिरिक्त इस उपाय में ज्ञान की उन्नति है यही कारण है कि हमारे इस ब्रिटिश भारत में एक कम योग्य और अल्प ज्ञान मुबाहसः करने वाला भी जो पादरियों के साथ बहस का सिलसिला जारी रखता है अपने मुबाहसः में इतनी जानकारियां पैदा कर लेता है कि यदि क़ुस्तुनतुनिया में जा कर एक प्रसिद्ध विद्वान से वे बातें पूछी जाएं जो इस व्यक्ति को याद होती हैं तो वह हरगिज़ नहीं बता सकेगा, क्योंकि उस देश में ऐसे मुबाहसे नहीं किए जाते इसलिए वे लोग इस कूचे से परिचित नहीं होते और प्रायः सीधे-सादे और अज्ञान होते हैं। अब हम कथित उपरोक्त उद्देश्यों के लिए एक अरबी

पुस्तक जिस का अनुवाद फारसी भाषा में प्रत्येक पंक्ति के नीचे लिखा गया है इस पुस्तक के बाद लिखते हैं। क्योंकि बहुत दूर के देशों के लोग उर्दू नहीं पढ़ सकते, जैसा कि अरब देशों के रहने वाले या ईरान, बुख़ारा और काबुल इत्यादि के निवासी। इसलिए यही समयानुसार हित में मालूम हुआ कि इस महान कार्य को प्रसिद्ध करने के लिए अरबी और फ़ारसी में भी कुछ लिखा जाए ताकि ये लोग भी दौलत और धर्म की सहायता करने से वंचित न रहें। हम ख़ुदा तआला से सामर्थ्य चाहते हैं कि इस अरबी-फारसी की पुस्तक को भी हमारे द्वारा पूर्ण करे। आमीन।

بسم الله الرحمٰن الرحيم

اَلْحَمْدُ للرحمٰن الذی ابتدء بالافضال۔ و اسبغ منَ العَطاء من غیر عملٍ سبق من العُمّال۔ الکریم الذی نضح عَنّا المکارہ و اتمّ علینا انواع النوال۔ و اعطانا کل شیء قبل السوال و اظہار الآمال۔ بعث لنا رسولاً کریمًا بارعًا فی الخصال۔ سبّاق غایات فی کل نوع الکمال۔ خاتم الرسل و النبیین۔ النبیّ الامیّ الذی ھو محمّدٌ بما حُمّد علٰی السن المستفیضین۔ و بما بذل الجُھد للامة و شاد الدین۔ و بما جاء لنا بکتاب مبین۔ و بما اوذی لنا عند تبلیغ رسالات ربّ العٰلمین۔ و بما اکمل کلّ ما لم یُکمل فی الکتب الاولٰی۔ و اعطٰی شریعة منزھة عن الافراط و التفریط و نقائص

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

समस्त प्रशंसाएं उस रहमान ख़ुदा के लिए हैं जिसने अपनी कृपा से प्रत्येक वस्तु का प्रारंभ किया और उसने कर्म करने वालों के किसी कर्म के करने से पूर्व अपने दान को पूर्ण किया, वह कृपालु है जिसने हमसे घृणित बातों को दूर किया और हम पर अपने समस्त प्रकार की नेमतों को पूर्णता तक पहुंचाया और उसने हमें प्रत्येक वस्तु मांगने से पूर्व तथा आशाओं की अभिव्यक्ति से पहले प्रदान की। उसने हमारे लिए स्वभाव और प्रकृतियों में सर्वोत्तम रसूल करीम अवतरित किया जो हर प्रकार की खूबी के चरमोत्कर्ष में अत्यधिक अग्रसर होने वाला ख़ातमुररुसुल और ख़ातमुन्नबियीन है। वही उम्मी (अनपढ़) नबी जो कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है क्योंकि वह फैज़ पाने वालों की ज़बानों से बहुत प्रशंसा किया गया और इस कारण से भी कि आपने उम्मत के लिए अत्यंत प्रयास और कोशिश की और धर्म को सुदृढ़ किया तथा इस कारण से भी कि वह हमारे लिए खुली-खुली किताब लाए और इस कारण से भी कि समस्त लोकों के प्रतिपालक के संदेश के प्रसार के कारण आपको

اخرىٰ۔ و اكمل الاخلاق و اتمّ ما جَرٰى۔ و احسن الى طوائف الورىٰ۔ و علم الرشد بغرر البيان و وحى اجلى۔ و عصم من الضلالة و تحامىٰ۔ و انطق العجماوات و نفخ فيهم روح الهُدٰى۔ و جعلهم ورثاء كافّة المرسلين۔ و طهّرهم و زكّاهم حتى فنوا فى مرضات الحضرة۔ و اهراقوا دمائهم لله ذى العزة۔ و اسلموا وجوههم منقادين۔ و كذالك علم معارف مبتكرة۔ و لطائف مكنونة۔ و نكات نادرة۔ حتى بلغنا الفضل باغتراف فضالته۔ و عرفنا ادلة الحق باختراف دلالتهٖ۔ و صعدنا الى السّماء بعد ما كنّا خاسفين۔ اللهم فصلّ عليه و سلّم الى يوم الدين۔ و علىٰ آله الطاهرين الطيبين۔ و اصحابه الناصرين المنصُورين۔

हमारे लिए कष्ट दिया गया और इसके कारण कि आपने पहली किताबों में जो कुछ अपूर्ण था उसे पूर्ण कर दिया और अधिकता एवं न्यूनता तथा अन्य दोषों से पवित्र शरीयत प्रदान की और आपने शिष्टाचार को पूर्ण किया और जो अपूर्ण था उसे पूर्ण किया तथा सृष्टि के प्रत्येक वर्ग पर उपकार किया और उत्तम, सरस वर्णन और प्रकाशमान वह्यी से मार्गदर्शन किया तथा आपने पथभ्रष्टता से बचाया और सुरक्षा की। आपने गूंगों को बोलना सिखाया और उनमें हिदायत के रूह फूंक दी और उनको समस्त रसूलों का वारिस बनाया और उनको पवित्र किया तथा उन को शुद्ध किया यहां तक कि वे ख़ुदा की रज़ा में फना हो गए। और उन्होंने अल्लाह तआला के लिए अपने खून बहाए और आज्ञापालन करते हुए स्वयं को (उसके) सुपुर्द कर दिया और इसी प्रकार आपने नए, अछूते, अध्यात्म ज्ञान, गुप्त उत्तम बातें और अद्भुत रहस्य सिखाए यहां तक कि हमने आपकी कृपा से लाभ उठाते हुए कृपा को पा लिया और हमने आपके मार्गदर्शन के चुने हुए फ़ल से सच के तर्कों का ज्ञान पाया और हम पृथ्वी में धंसे होने के बाद अब आकाश की बुलंदियों तक पहुंच गए हैं। हे अल्लाह! अब तू मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर और आपकी शुद्ध और पवित्र आल (संतान) पर तथा आपके सहायक और समर्थन प्राप्त सहाबा

نخب اللّٰہ الذین آثروا اللّٰہ علی انفسھم و اعراضھم و اموالھم و البنین۔ والسلام علیکم یا معشر الاخوان۔ لقیتم خیرا و وُقیتم شرور الزمان۔ و رُزقتم مرضات ربّ العالمین۔

اما بعد فاعلموا ایھا الاخوان۔ و الاحباب و الاقران۔ انّ الزمان قد اظھر العجب۔ و ارانا الشجیٰ والشجب۔ و سخر بوم لیلۃ اللیلاء من الدرۃ البیضاء و شارف ان تشن الغارات علیٰ دین الرحمٰن۔ الذی ضمّخ بالطیب العمیم من العرفان۔ و اُودِع لفائف نعیم الجنان۔ و سیقت الیہ انہار من ماء معین۔ و تفصیل ذالک ان بعض السفہاء من المتنصرین۔ والمرتدین الضالین۔ سبّوا نبیّنا محقرین غیر مبالین۔ و طعنوا فی دیننا مستھزئین۔ مع انھم اتخذوا

पर क़यामत तक दरूद और सलाम भेज। अल्लाह तआला के चुने हुए जिन्होंने अल्लाह को अपने नफ्सों अपने सम्मानों और अपने मालों तथा अपनी औलाद पर प्राथमिकता दी। अस्सलामु अलैकुम हे जमाअत के भाइयो! (अल्लाह करे) भलाई पाओ और तुम युग की बुराइयों से सुरक्षित रहो और तुम्हें समस्त लोगों के प्रतिपालक की प्रसन्नता प्राप्त हो।

तत्पश्चात हे भाइयो, दोस्तो और साथियो! तो तुम जान लो कि इस युग ने अद्‌भुत बातें प्रकट की हैं और हमें ग़म एवं भय दिखाया है और अंधेरी रात के उल्लू चमकदार मोती के साथ उपहास कर रहे हैं और निकट है कि उस रहमान ख़ुदा के धर्म पर निरंतर आक्रमण हों जो इरफान की असाधारण सुगंध से सुगंधित किया गया है और उसमें स्वर्ग की नेमतें प्रचुरता से रखी गई हैं और उसकी ओर शुद्ध एवं निर्मल पानी की नहरें लाई गई हैं और उसका निवारण यह है कि नए-नए ईसाई होने वालों में से कुछ मूर्ख और मुर्तद और पथ भ्रष्ट लोगों के लिए तिरस्कार एवं घृष्टता से हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां दीं और हंसी-ठट्‌ठा करते हुए हमारे धर्म के बारे में कटाक्ष किए, इसके बावजूद कि उन्होंने रहमान ख़ुदा को छोड़कर (असहाय इंसान को) उपास्य बना लिया और उन्होंने इंसान के सामने उकडू बैठते हुए अल्लाह को त्याग

الٰهـا مـن دون الرحمٰـن۔ و تـركـوا الله عـا كفين على الانسـان۔ و جـاؤا بِإفك مبين۔
فـلا يَسْـتَحْيَوْنَ بل يـوذون اهل الحق جالعين۔ و يفسـدون فى الارض مجترئين۔ و
يصولـون على المسـلمين مغضبـين۔ و كنا مامورين لازالة تماثيلـهم۔ وازاحة
اباطيلـهم۔ و اجاحة تسـاويلهم۔ و اقتـلاع اقاويلـهم۔ والاٰن ظهـر الامـر
معكوسًـا۔ و عـاب الليـل شموسًـا۔ وصال المتنصـرون على المسـلمين۔ و من
فتنـهم الجديـدة ان رجـلًا منـهم الف كتابـا و سـمّاه امّهات المؤمنين۔ و سـلك
فيـه كل طريـق السـبّ و الافـتراء كالمفسـدين الفتّانـين۔ انـه امـرء اسـتعمل
السـفاهة فى خطابـه۔ و اَبْـدىٰ عـذرة كانـت فى وطابـه۔ و اظهـر كانّـه اتمّ الحجة
فى كتابـه۔ و ختـم المباحـث بفصـل خطابه۔ و لَيْسَ فى كتابه من غير السـبّ و

दिया तथा उन्होंने खुला-खुला झूठ गाढ़ लिया फिर भी शर्म नहीं करते अपितु अहले हक को बेशर्मी से दुख देते हैं और वे घृष्ट होकर पृथ्वी में फसाद करते और क्रोधित होकर मुसलमानों पर आक्रमण करते हैं हालांकि हम उनके बुतों को तोड़ने, उनकी झूठी बातों को दूर करने और उनकी बनावट की चमक का उन्मूलन करने और उनकी असत्य बातों को जड़ से उखाड़ने के लिए मामूर (आदेशित) हैं और अब मामला उलट गया है और रातें सूर्य के दोष निकाल रही हैं और नए ईसाई मुसलमानों पर टूट पड़े हैं और उनके नए फ़ित्नों में से एक यह है कि उनमें से एक व्यक्ति ने पुस्तक लिखी और उसका नाम 'उम्महातुल मोमिनीन' रखा है और उसने उसमें उपद्रवी फसाद करने वालों की तरह गाली गलौज और झूठ गढ़ने का हर तरीका ग्रहण किया है। यह ऐसा व्यक्ति है जिसने अपनी किताब में निर्लज्जता से काम लिया है और उसने वह गंदगी प्रकट की जो उसके अंदर थी और उसने ऐसे प्रकट किया कि जैसे उसने अपनी किताब में हुज्जत पूरी कर दी और अपने निर्णायक कलाम से बहस को समाप्त कर दिया है, हालांकि उसकी किताब में गाली-गलौज के अतिरिक्त कुछ भी नहीं और ऐसे वाक्य हैं जो लज्जावान और बुद्धिमान व्यक्ति को शोभा नहीं देते। उसने अपनी किताबों को बिना किसी मांग के क़ौम के प्रतिष्ठित और चुने हुए मोमिनों में

الشتم۔ و کلمات لا یلیق لاھل الحیاء والحزم۔ بید انہ ابدع بارسال کتبہ
من غیر طلب الی المسلمین الغیورین من اعزۃ القوم و نخب المؤمنین۔
وتلک ھی النار التی التھبت فی ضرم المتألمین۔ و احرقت قلوب المؤمنین
المسلمین۔ فلما رَأَیْنَا ھٰذا الکتاب۔ و عثرنا علٰی غلوائہ و ما سبّ و ذاب۔
قرئنا کلمہ الموذیۃ۔ و آنسنا قذفاتہ المغضبۃ و شاھدنا ضیمہ الصریح۔
و قولہ القبیح۔ واجتلینا ما استعمل من جور و اعتساف۔ وقذف و شتم
کاجلاف۔ علمنا انہ نطق بھا معتمّدًا لاغضاب المسلمین۔ و ما تفوّہ علی
وجہ الجد کالمسترشدین المحققین۔ بل تکلم فی شان سیّد الانام باقبح
الکلام۔ کما ھو عادۃ الاجلاف و اللئام لیوذی قلوب المسلمین۔ و طوائف

से स्वाभिमानी मुसलमानों को भेजा और यही वह अग्नि है जिसने हमदर्दों की अग्नि को और भड़काया तथा मुसलमान मोमिनों के दिलों को जलाया है। तो जब हमने उस किताब को देखा और उसकी व्यर्थ बातों तथा बुरा-भला कहने और दोष निकालने पर सूचना पाई और उसके कष्टदायक वाक्य पढ़े और हम उसको क्रोध दिलाने वाली गंदी गालियों से अवगत हुए और हमने उसके स्पष्ट ज़ुल्म और बुरे कलाम का अवलोकन किया और (विवेक की दृष्टि से) उस अत्याचार, अन्याय, आरोप लगाने और कमीनों की तरह अश्लील बातों को देखा जो उसने वैध रखी थीं तो हमने जान लिया कि उसने जानबूझकर मुसलमानों को क्रोध दिलाने के लिए यह बातें की हैं और उसने शिक्षा और हिदायत के अभिलाषी अन्वेषकों की तरह अन्वेषण करके यह बात नहीं की अपितु उसने सैयद उल अनाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में निकृष्टतम वाक्य कहे हैं जैसा कि यह कमीने स्वभाव और कमीनों की आदत होती है ताकि वे मुसलमानों के दिलों और अहले इस्लाम के फ़िर्क़ों को कष्ट पहुंचाएं और खैरुल मुरसलीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत के दिलों को जोश दिलाएं तो जैसा कि इस उपद्रवी ने इरादा किया वही हो गया और उसकी इन बातों के कारण हर उस व्यक्ति ने कष्ट महसूस किया जिसके दिल में ईमान है और

اھل الاسلام۔ و یُغلی قلوب امۃ خیر المرسلین۔ فظھر کما ارادھٰذا الفتان۔ و تالّم بکلمہ کل من فی قلبہ الایمان۔ و اصاب المسلمین بقذفہٖ جراحۃ مؤلمۃ۔ و قرحۃ غیر ملتئمۃ۔ و ظنوا انھم من المجرمین۔ ان لم ینتقموا کالمؤمنین المخلصین۔ و ذکروا بھا ایام الاولین۔ و لو لا منعھم ادب السلطنۃ المحسنۃ۔ و تذکّر عنایات الدولۃ البرطانیۃ۔ لعملوا عملًا کالمجانین۔ ولا شک ان ھٰذا السفیہ اعتدیٰ فی کلماتہ۔ و اغری العامۃ بجھلاتہ۔ و جاوز الحد کالغالین۔ فلاجل ذالک قد ھاجت الضوضاۃ۔ و ارتفعت الاصوات۔ و تضاغی الناس برنّۃ النیاحۃ۔ و اشتعل الطبائع من ھٰذہ الوقاحۃ۔ و مُلِاَ الجرائد بتلک الاذکار۔ و قام کل احد ککُماۃ المضمار۔ بما آذی کالمعتدین۔

والحاصل انہ افترٰی و تجرّم۔ و اراد ان یستأصل الحق و یتصرّم۔

उसके इस बुरा भला कहने के कारण मुसलमानों को अत्यंत कष्टदायक ज़ख्म और ऐसा नासूर (नाड़ी व्रण) लगा जो कि भरने वाला नहीं और उन्होंने गुमान किया कि यदि उन्होंने शुद्ध मोमिनों के समान प्रतिशोध न लिया तो वे अवश्य अपराधियों में से होंगे इससे उन्होंने अपने पूर्वजों के युग को याद किया। और यदि उन्हें उपकारी सरकार का आदर रोक न होता और बर्तानवी हुकूमत के उपकार याद न आते तो वे अवश्य उन्मादी लोगों के समान अमल करते और कोई संदेह नहीं के उस बेशर्म ने अपनी बातों में सीमा का उल्लंघन किया और अपनी मूर्खतापूर्ण बातों से सामान्य मुसलमानों को उकसाया और अतिशयोक्ति करने वालों के समान सीमा उल्लंघन किया तो इसी कारण से शोर मचा और आवाजें बुलंद हुईं तथा लोगों ने मृतक पर विलाप करने वालों की आवाज़ों के समान रोना-पीटना किया और इस बेशर्मी के कारण तबीयतें भड़क गईं और उनकी चर्चा से अख़बार भर गए तथा हर कोई योद्धा सीमा से बढ़ने वालों के कष्ट के कारण उठ खड़ा हुआ।

सारांश यह है कि उसने इफ्तिरा किया और मासूम पर लांछन लगाया और इरादा किया कि सच को जड़ से उखाड़ दे तथा काट दे और उसने लोगों को

و اسبل غطائًا غليظًا لاغلاط الناس۔ و اراد اَنْ يُطفئ انوار النبراس۔ فنهض المسلمون مستشيطين مشتعلين۔ و صاروا طرائق قددازاعقين مغتاظين۔ فذهب بعضهم الى ان يُبلغ الامر الى الحكام۔ و يترافع لغرض الانتقام۔ والآخرون مالوا الى الردّ علىٰ تلك الاوهام۔ و حسبوه من واجبات الاسلام۔ فالذين اختاروا الترافع عرضوا شكواهم على حضرة نائب الدولة۔و ارسلُوا ما كتبوا لهذه الخطّة۔ و الفريق الثانى توجّهوا الى ردّ الكتاب۔ والآخرون وجموا من الاكتياب۔ و كذالك اختلفوا فى الاعمال و الاٰراء۔ واستخلص كل احد ما هدىٰ اليه من الدهاء۔ فالذى اُشرب حسّى۔ و تلقفه حدسى۔ ان الاصوب طريق الردّ و الذبّ۔ لا الاستغاثة ولا السبّ بالسبّ۔ وانى اعلم بلبال المسلمين۔

बोधभ्रम में डालने के लिए भारी पर्दा डाल दिया तथा उसने इरादा किया कि दीपक के प्रकाशों को बुझा दे तो मुसलमान उत्तेजित होकर भड़कते हुए उठ खड़े हुए और उन्होंने प्रोटेस्ट करते हुए क्रोध की अवस्था में विभिन्न तरीके अपना लिए तो उनमें से कुछ की राय यह थी कि इस मामले को अधिकारियों तक पहुंचाया जाए तथा प्रतिशोध के उद्देश्य से मुक़द्दमा किया जाए और कुछ दूसरे इन भ्रमों के रद्द की ओर झुके और इस रद्द लिखने को इस्लाम के कर्तव्य में से समझा। तो वे लोग जिन्होंने अधिकारियों तक बात को पहुंचाना पसंद किया उन्होंने अपनी शिकायत को जनाब वायसराय तक पहुंचाया तथा उन्होंने इस मामले में जो मेमोरियल लिखा था वह भेज दिया। दूसरे गिरोह ने पुस्तक के खंडन की ओर ध्यान दिया और दूसरे लोग ग़म और शोक से खामोश हो गए। और इसी प्रकार उन्होंने अपने कार्यों और रायों में मतभेद किया और प्रत्येक ने अपनी बुद्धि के अनुसार जो उचित समझा उसे ग्रहण किया। अत: जिसकी आवश्यकता को मैंने महसूस किया, वह जिसे मेरी प्रतिभा ने उचित पाया वह यह है कि सबसे सही बात निस्संदेह खण्डन लिखने और प्रतिरक्षा करने का तरीका है न कि मुकद्दमेबाज़ी और गालियों के मुकाबले में गालियां देना। और मैं मुसलमानों के गम की तीव्रता को और जो मोमिनों के दिलों

وما عـرىٰ قلـوب المؤمنـين مِـن السـن الموذيـن۔ ولكـنى ارى الخـير فى ان نجتنـب المحاكمـات۔ ولا نوقـع انفسـنا فى المخاصمـات۔ و نتحامىٰ اموالنـا مـن غـرامـات التنازعـات۔ و اعـراضنـا مـن القيـام امـام القضـاة۔ و نصبر عـلى ضجر اصابنـا۔ و غـمّ اذابنـا۔ ليعدّمنا مبرة عنـد احكـم الحاكمـين۔ و مـا نسـينا مـا رأينـا مـن جـورٍ و عسـفٍ۔ و اىّ حـرّ رضـى بخسـفٍ۔ و قـد اوذينـا فى ديننـا القويـم و رسـولنا الكـريـم۔ و آنسـنا مـا هـيّـج الاسـف و اجـرى العـبرات۔ و شـاهدنا مـا اضجـر القلـب و زجّىٰ الزفـرات۔ بيـدان الدولة البرطانيـة لهٰؤلاء كالاواصـر المومّـلة۔ و لقسّيسـين حقوق على هـذه الدولة۔ و نعلم ان نبـذ حرمـهم امـرٌ لا ترضـاه هـذه السـلطنة و يُنصبهـا هذا القصد و تشـق

को दुष्ट लोगों की ज़बानों से कष्ट पहुंचा है उसे भली भांति जानता हूं परंतु मैं भलाई इसी बात में देखता हूं कि हम मुकद्दमेबाज़ी से बचें और हम अपने नफ्सों को लड़ाई-झगड़े में न डालें तथा अपने माल झगड़ों के जुर्माने और अपने सम्मान जजों के सामने खड़े होने से बचाएं। और हम हर पहुंचने वाली व्यग्रता और हर घुला देने वाले ग़म पर सब्र करें ताकि (यह काम) हमारी ओर से अहकमुल हाकिमीन (ख़ुदा) के पास नेकी गिनी जाए और हमने जो ज़ुल्म और अत्याचार देखा है उसे भूले नहीं हैं और कौन आज़ाद मनुष्य अपमान पर प्रसन्न होता है। हमें अपने सुदृढ़ धर्म तथा हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में कष्ट दिया गया और हमने इस बात का भी अवलोकन किया जिसने अफसोस को भड़काया और आंसू जारी किए और हमने उस बात तथा कटाक्षों का अवलोकन किया जिसने दिलों को तंग किया और आंहों का कारण बनी। परंतु बर्तानवी हुकूमत इन लोगों की आशा स्थल है और पादरियों के इस हुकूमत पर अधिकार हैं और हम जानते हैं कि इन पादरियों का अपमान करना ऐसा मामला है जिसे यह हुकूमत पसंद न करेगी और यह इरादा करना भी उसे कष्ट में डालेगा और यह अदालत की कार्यवाही उस पर भारी गुज़रेगी। और इस हुकूमत के हम पर उपकार हैं,

عليها هذه المعدلة۔ ولها علينا منن يجب ان لا نلغيها۔ فلنصبر على ما اصابنا لعلّنا نرضيها۔ و ما نفعل بتعذيب المتنصرين و قد رأينا امنًا من حكامها العادلين۔ و وجدنا بِهِم كثيرا من غض و سرور۔ و خفض و حبور و ما مسّنا منهم شظفٌ فى الدّين۔ ولا جنف كالظالمين من السلاطين۔ بل اعطونا حرّيةً فعلاو قولا۔ و ارضونا حفاوة و طولا۔ و ما رأينا سوءًا من هذه الدولة۔ و لا قشفًا كايّام الخالصة۔ بل رُبّينا تَحْت ظلها مذ ميطت عنا التمائم۔ و نيطت بنا العمائم۔ و عشنا بكنفها آمنين۔ و جعلها الله لنا كعَيْن نستسقيها۔ و كعين نجتلى بها۔ فنحاذر ان يفرط الى هٰذه الدولة بعض الشبهات۔ و تحسبنا من قوم يضمرون الفساد فى النيات۔ فلذالك ما رضينا بان نترافع لتعذيب هذا

आवश्यक है कि हम उन्हें न भुलाएं। अतः चाहिए कि हम इस कष्ट पर सब्र करें जो हमें पहुंचा है ताकि हम उसे राज़ी कर सकें और नए ईसाइयों को दंड दिलवाकर हम क्या करेंगे जबकि हम उसके न्यायवान शासकों से अमन देख चुके हैं और हमने उन अधिकारियों के कारण बहुत सी तरोताज़गी, ख़ुशी, समृद्धि और प्रसन्नता पाई हैं और हमें इनसे धर्म के मामले में किसी प्रकार की परेशानी नहीं पहुंची और न ही अत्याचारी बादशाहों का सा अत्याचार अपितु इन्होंने हमें कथन और कर्म में आज़ादी दी है और इन्होंने हमें अपनी मेहरबानियों तथा उपकार से प्रसन्न किया है और हमने इस हुकूमत से कोई बुराई नहीं देखी और न ही सिखों के समय की तरह की कठोरता। अपितु जब से हमने होश संभाला और जवान हुए हमने इसकी छाया के नीचे पोषण पाया और हम इसकी शरण में अमन से रहे और अल्लाह तआला ने इसे हमारे लिए ऐसे झरने के समान बनाया जिससे हम सैराब होते हैं और ऐसी आंख की तरह जिसके द्वारा हम देखते हैं। अतः हम इस बात से बचते हैं कि इस हुकूमत को (हमारे बारे में) संदेह पहुंचें और वह हमें ऐसी क़ौम में से समझे जिनकी नियतों में फसाद छुपा होता है तो इस कारण से हम इस इल्ज़ाम लगाने वाले दुष्ट को दंड दिलवाने के लिए मुकद्दमेबाज़ी पर तैयार नहीं हुए और

القذاف الشرير۔ و اعرضنا عن مثل ھٰذہ التدابیر۔ و حسبنا انہ عمل لا ترضاہ الدولۃ۔ و لا تستجادہ تلک السلطنۃ۔ ف کففنا کالمعرضین۔ و سمعتُ انّ بعض المستعجلین من المسلمین۔ارسلوا رسائل الی الدولۃ مستغیثین۔ و تمنّوا ان یوخذ المؤلّف کالمجرمین۔ و ان ھی الا امانی کامانی المجانین۔ و امّا نحن فما نری فی ھذا التد بیر عاقبۃ الخیر۔ و ّلا تفصیًا من الضیر۔ بل ھو فعل لا نتیجۃ لہ من غیر شماتۃ الاعداء۔ ولا یُستکفیٰ بہ الافتتان بمکائد اھل الافتراء۔ ولو سلکنا سبیل الاستغاثۃ و نترافع لاخذ مؤلف ھذہ الرسالۃ۔ لنُعزیٰ الیٰ فضوح الحصر۔ و نرھق بمعتبۃ عند اھل العصر۔ و یقال فینا اقوال بغوائل الزخرفۃ۔ و یقطع عرضنا بحصائد الالسنۃ۔ و یقول السفھاء انھم عجزوا من الاتیان

हमने ऐसे उपायों से मुंह फेर लिया और सोचा कि यह कार्य ऐसा है जिसे हुकूमत पसंद न करेगी और न ही यह सरकार इसे अच्छा समझेगी इसलिए हम विमुख होने वालों के समान रुक गए और मैंने सुना है कि मुसलमानों में से कुछ जल्दबाज़ों में फरियाद करते हुए हुकूमत को पत्र भी भेजे और उन्होंने इच्छा की है कि इस लेखक को अपराधियों की तरह पकड़ा जाए और यह केवल पागलों की इच्छाओं जैसी इच्छाएं हैं और जहां तक हमारा संबंध है तो हम इस उपाय का अंजाम अच्छा नहीं देखते और न ही इसे हानि से रिक्त समझते हैं अपितु यह ऐसा कार्य है जिसका परिणाम शत्रुओं की प्रसन्नता के अतिरिक्त कुछ नहीं और न ही इससे वह फित्ने रुक सकते हैं जो झूठ गढ़ने वालों की छलपूर्ण चालों से प्रकटन में आए और यदि हम मुकद्दमेबाज़ी के तरीकों को अपनाएं और इस पुस्तक के लेखक की पकड़ के लिए नालिश कराएं तो उत्तर न दे सकने का अपमान हमारी और संबद्ध किया जाएगा और हम ज़माने के लोगों के क्रोध के पात्र होंगे तथा हमारे बारे में गुमराह करने वाली झूठी बातें की जाएंगी और ज़बान की काट से हमारे सम्मान पर चरके लगाए जाएंगे और मूर्ख कहेंगे कि यह लोग उत्तर देने से असमर्थ रहे। निस्संदेह वे अत्यधिक क्रोध और बेचैनी के कारण अधिकारियों की ओर गए। फिर इसके बाद

بالجواب۔ فلا جرم توجهوا الی الحکّام من التضرم والاضطراب۔ فبعد ذالك لا تبقیٰ لنا معذرة۔ و ترجع الینا مندمة و تبعة۔ فلیس بصواب ان نطلب هذه المنیة۔ و نرود هذه البُغیة۔ و لَیّس بحریّ ان نسعٰی کالنادبات الی السلطنة۔ و نُضحی انفسنا من مأمن الحجج البیّنة۔ و نضیع اوقاتنا فی البکاء والصُراخ کالنسوة۔ ولا نفکر لهدم بناء هذه الفرقة۔ ولا نتوجه الیٰ خزعبیلاتهم ولا نزیح وساوس جهلاتهم۔ ونترکهم فی کبرهم و زهوهم۔ ولا ننبههم علی غلطهم و سهوهم۔ ولا نأخذهم علی بهتانهم و افترائهم۔ ولا نری الخلق خیانتهم و قلة حیائهم۔ و نفرح بماینالهم من الحاکمین۔ بل ینبغی ان نجیح اوهامهم و نکسّر اقلامهم۔ و نجعل کلمهم مضغة للماضغین۔ وان لم نفعل هذا فما فعلنا شیئًا فی خدمة الدین۔ وما

हमारे लिए कोई बहाना शेष न रहेगा और हम शर्मिंदगी तथा बुरे अंजाम से दो-चार होंगे। इसलिए यह तरीका सही नहीं है कि हम ऐसी इच्छा करें और ऐसी मनोकामना चाहें और यह उचित नहीं कि हम मातम करने वाली औरतों की तरह इस हुकूमत की ओर दौड़ें और न यह कि अपने नफ़्सों को स्पष्ट तर्कों की शरण स्थली से बाहर निकालें और न यह कि हम अपने समय को औरतों की तरह रोने और चीखो पुकार करने में व्यर्थ करें और न इस फिरके की बुनियाद को गिराने के बारे में सोचें और न ही उनकी बेहूदा बातों की ओर ध्यान दें और न ही हम उनकी मूर्खता के भ्रम को दूर करें और उनको उनके अहंकार और अभिमान में छोड़ दें तथा उनको उनकी गलतियों और दोषों के बारे में सतर्क न करें और उन्हें उनके आरोपों एवं इफ्तराओं पर न पकड़ें और हम सृष्टि को उनकी बेईमानी और बेशर्मी न दिखाएं और हम उन पर ही प्रसन्न हो जाएं जो अधिकारियों की ओर से उन्हें दंड मिले अपितु आवश्यक है कि हम उनके भ्रमों को ध्वस्त करें और उनके क़लमों को तोड़ें और उनकी बातों को चबाने वालों के लिए तर कौर बना दें और यदि हमने ऐसा न किया तो जैसे हमने धर्म की सेवा के लिए कुछ भी न किया और न ही हमने सर्वोत्तम उपकारी ख़ुदा के उपकार को पहचाना और न ही हमने धन्यवाद

عرفنا صنيعة الله خير المحسنين۔ وما شكرنا بل انفدنا الوقت غافلين۔ فان الله وهب لنا حرية تامّةً لهذه الامور لنحقّ الحق و نبطل ما صنع اهل الزور۔ فلولم نمتع بهذه الحريّة۔ فما شكرنا نعم الله ذى الجود والموهبة۔ وما كنّا من الشاكرين۔ الم تروا كيف نعيش احرارًا تحت ظلّ هذه السلطنة۔ و كيف خُيّرنا فى ديننا و اوتينا حرية فى مباحث الملّة الاسلامية۔ و اُخرجنا من حبس كنا فيها فى عهد دولة الخالصة۔ و فُوّضنا الٰى قوم راحمين۔ و انّ حكّامنا لا يمنعوننا من المناظرات والمباحثات۔ ولا يكفئوننا ان كان البحث فى حُلل الرفق و بصحة النيات۔ ولا يحيفون متعصبين۔ فلاجل ذالك نستسنى دولتهم و نستغزر ديمة نصرتهم۔ فانا لا نرىٰ تلهب جذوتهم۔ عند ردّ مذهبهم۔ و ازراء ملّتهم۔ و هٰذا

किया। अपितु हमने लापरवाही में जीवन व्यतीत कर दिया। निस्संदेह अल्लाह तआला ने हमें इन मामलों के लिए पूर्ण आज़ादी दी है ताकि हम सच को सिद्ध करें और जो झूठों ने बातें बनाई हैं उन्हें हम रद्द करें तो यदि हमने इस आज़ादी से लाभ न उठाया तो हमने दानशील और वरदानी अल्लाह तआला की नेमतों का धन्यवाद न किया और न ही हम कृतज्ञ लोगों में से हुए। क्या तुमने देखा नहीं कि हम किस प्रकार आज़ादी से इस हुकूमत की छत्र छाया में रहते हैं और किस प्रकार हमें हमारे धर्म के मामले में अधिकार दिया हुआ है और हमें इस्लामी मिल्लत के मुबाहसों में आज़ादी दी हुई है और हमें उस कैद निकाला गया है जिसमें हम सिखों की हुकूमत के युग में थे और हमें दया करने वाली क़ौम के सुपुर्द किया गया और निस्संदेह हमारे शासक हमें शास्त्रार्थ और मुबाहसों से मना नहीं करते और यदि बहस नरम ढंग से और अच्छी नियत से हो तो वह हमें नहीं रोकते और पक्षपात के आधार पर अत्याचार नहीं करते। अत: इस कारण से हम उनकी हुकुमत को महान पाते हैं और उनकी सहायता वृष्टि को बड़ी प्रसन्नता से पाते हैं फिर हम उनको उनके धर्म के खंडन और उनकी मिल्लत पर आलोचना के समय पूर्ण उत्तेजना में नहीं देखते, यही वह बात है जिसने दिलों को उनके प्रेम की ओर खींच लिया है और

هو الذی جذب القلوب الٰی محبتهم۔ و امال الطبائع الٰی طاعتهم۔ و احبهم الینا کالسّلاطین المسلمین۔ و انهم قوم قد اسرونا بمنتهم۔ لا بسلاسل حکومتهم۔ و قیّدونا بایادی نعمتهم۔ لا بایدی سطوتهم۔ فواللّٰه قد وجب شکرهم و شکر مبرتهم۔ و الذین یمنعون من شکر الدولة البرطانیة و یندّدون بانه من مناهی الملّة۔ فقد جاء وا بظلم و زور۔ و تورّدوا موردًا لیس بماثور۔ ایحسبونهم ظالمین۔ حاش لِلّٰهِ و کلا۔ بل جل معروفهم و جلّی۔ انظروا الٰی بلادنا و اهلها المخصبین۔ من القانطین والمتغربین۔ انظروا ما ایمن هٰذا السواد۔ وما ابهج هٰذه البلاد۔ عمرت مساجدنا بعد تخریبها۔ واُحییت سنننا بعد تتبیبها۔

स्वभावों को उनके आज्ञापालन की ओर झुका दिया है और उनको मुसलमान बादशाहों की तरह हमारा प्रिय बना दिया और यह वह क़ौम है जिसने हमें अपने उपकार के ज़ोर से कैद कर लिया है न कि अपनी हुकूमत की ज़ंजीरों से और उन्होंने हमें अपनी नेमतों के उपकारों से कैद कर लिया है ना कि अपने बाज़ू के ज़ोर से इसलिए अल्लाह की कसम उनकी कृतज्ञता और उनकी नेकी का धन्यवाद अदा करना आवश्यक हो गया। है और वे लोग जो बर्तानवी हुकूमत की कृतज्ञता से मना करते हैं और यह प्रसिद्ध करते हैं कि (धन्यवाद करना) यह शरीयत (इस्लाम) के निषेधों में से है तो निस्संदेह उन्होंने ज़ुल्म और झूठ का पाप किया और ऐसी आस्था ग्रहण की जो किसी हदीस से सिद्ध नहीं। क्या वे उन (बर्तानवी सरकार) को अत्याचारी समझते हैं? ख़ुदा की क़सम कदापि नहीं अपितु उनके उपकार तो बहुत महान और रोशन हैं। तुम हमारे इलाकों और उनमें रहने वाले समृद्धि लोगों को देखो चाहे वे यहां के रहने वाले हों या बाहर से आए हुए हों और देखो कि कितने ही मुबारक हैं यहां के सामान्य लोग और कितने ही चित्ताकर्षक हैं यह इलाके। हमारी मस्जिदें वीरानी के बाद आबाद हो गईं और हमारी धार्मिक निशानियां तबाही के बाद जीवित कर दी गईं, हमारे अज़ान देने के मीनार अंधकार

و اُنيرت مآذننا بعد اظلامها۔ و رفعت مناورها بعد اعدامها۔
و رأينا النهار بعد الليلة الليلاء۔ و وصلنا الانهار بعد فقدان
الماء۔ و فُتح الجوامع و المساجد لذكر اللّٰه الوحيد۔ و علا صيت
التوحيد۔ و ترجّينا بعد تمادی الايام۔ ان يزيح سموم الكفر
ترياق وعظ الاسلام۔ و حفظنا من شر كلّ مفاجی۔ و عُدنا من
تيه الغربة الٰی معاج۔ و اقترب ماء النضارة من سرحتنا۔ و كاد يحلّ
بمنبتنا و اصبحنا آمنين۔ حتی الفينا كل من الوی عنقه من العناد۔
كالاصادق و اهل الوداد۔ و تبدّی الاساود كاعوان النآد۔ و قُلِبَ عُجرنا
و بُجرنا و نقل الی الصلاح و السداد۔ و نَضَرْنا بدولةٍ جاءت كعهاد۔
عند سنة جماد۔ فرأت هٰذه الدولة دخيلة امرنا۔ و اطلعت علی ذوبنا

के बाद रोशन किए गए और हमारी मस्जिदों के मीनार ध्वस्त होने के बाद दोबारा बुलंद किए गए और हमने घोर अँधेरी रात के बाद दिन देखा और हम पानी के अभाव के बाद नेहरों तक जा पहुंचे और एक ख़ुदा के ज़िक्र के लिए जामेअ और सामान्य मस्जिदें खोल दी गईं और एकेश्वरवाद अर्थात तौहीद का नारा बुलंद हुआ और हमें पर्याप्त दिनों के पश्चात आशा पैदा हुई कि इस्लाम के उपदेश का विषनाशक कुफ्र के विषों को समाप्त कर देगा और हर अचानक आने वाली बला की बुराई से हम सुरक्षित हो गए और हम बेवतनी के मरुस्थल से अपने घर लौट आए और तरोताज़गी का पानी अस्तित्व रूपी वृक्ष तक पहुंचा और करीब था कि वह हमारे आंगनों में उतरे और हम अमन पाने वाले हो गए यहां तक कि हमने हर उस आदमी को जिसने शत्रुता के आधार पर विमुखता की, सच्चा मित्र और मुहब्बत करने वालों के समान पाया और सांप गुण शत्रु संकट के समय हमदर्द सहायकों के समान हो गए। हमारे बाह्य और आंतरिक को परिवर्तित कर के सुधार और ईमानदारी की और डाल दिया गया और हम दुष्कर दुर्भिक्ष के समय बसंत की पहली वर्षा के समान इस हुकूमत के आने से तरोताज़ा हो गए फिर इस हुकूमत ने हमारे आंतरिक मामलों को देखा और हमारी क्षणिक और हमारी कमज़ोरी पर सूचना पाई तो इस हुकूमत ने हमें शरण दी और हम पर दया की हमारी हमदर्दी

و ضُمرنا۔ فآوتنا و رحمتنا۔ و واستنا و تفقدتنا۔ حتی عاد امرنا الی نعیم۔ بعد عذاب الیم۔ فالاٰن نرقد اللیل ملاءٍ اجفاننا۔ ولا نخس ولا وخز لابداننا۔ تغرد فی بساتیننا بلابل التھانی و النعماء۔ مأیسة علی دوحة الصفاء بعد ما کنا نُصدم من انواع البلاء۔ فانصفوا الیس بواجب ان نشکر دولة جعلھا اللّٰہ سببًا لھذہ الانعامات ۔ و اخرجنا بیدیھا من سجن البلیات۔ الیس بحق ان نرفع لھا اکفّ الضراعة والابتھال۔ ونحسن الیھا بالدعاء کما احسنت الینا بالنوال۔ فان لنا بھا قلوبًا طافحة سرورًا و وجوھًا متھللة و مستبشرة حبورا۔ و ایامًا مُلئت امنا و حُرّیّة۔ ولیالی ضمّخت راحة و لُھنیةً۔ و ترٰی منازل مزدانة بابھج الزینة۔ ولا خوف ولا فزع ولو مررنا علٰی اسود العرنیة ضربت خزی

की और हमारा ध्यान रखा यहां तक कि दर्दनाक अज़ाब के बाद हम समृद्धशाली हो गए तो अब हम रात को चैन की नींद सोते हैं इस हाल में कि हमारे शरीरों को कोई चीज़ न बेचैन करती है न कष्ट देती है। हमारे बागों में निष्कपटता के बड़े वृक्ष पर झूलते हुए बुलबुलें खुशी और ऐशो-आराम से चहचहाती हैं इसके बाद कि हम भिन्न-भिन्न प्रकार के संकटों में ग्रस्त थे। अतः तुम इंसाफ करो कि यह अनिवार्य नहीं कि हम ऐसी हुकूमत का धन्यवाद अदा करें जिस को अल्लाह तआला ने इन इनामों का माध्यम बनाया है और हमें इस हुकूमत के हाथों संकटों की जेल से निकाला है क्या यह आवश्यक नहीं कि हम विनय और विनम्रता पूर्वक इस (सरकार) की खातिर हाथ उठाएं और दुआ के द्वारा उस पर उपकार करें जिस प्रकार उसने हम पर अपनी कृपा से उपकार किया है। अतः इसके कारण हमारे दिल खुशी से आबाद हैं और चेहरे चमक रहे हैं और खुश हैं और दिन अमन और आज़ादी से भर गए हैं तथा रातें आराम और खुशहाली के इत्र से सुगंधित हैं और तू घरों को सुंदरतम सजावट के सामानों से सजाया हुआ देखता है और कोई भय एवं डर नहीं चाहे हम कछारों के शेरों के पास से गुज़रें, अत्याचारियों पर असफलता की बदनामी डाली गई और झूठी अफवाहें फैलाने वाले झूठे लोगों पर पृथ्वी तंग

الفشل علی الظالمین۔ وضاقت الارض علی المرجفین المبطلین۔ و نعیش مستریحین آمنین۔ فایّ ظلم کان اکبر من ھذا الظلم ان لا نشکر ھذہ الدولۃ المحسنۃ۔ ونضمر الحقد والشر والبغاوۃ۔ أھٰذا صلاح بل فسق ان کنتم عالمین۔ فویل للذین یبغون الفساد۔ ویضمرون العناد۔ واللّٰہ لا یحب المفسدین۔ انھم قوم ذھلوا آداب الشکر عند رؤیۃ النعمۃ۔ وانساھم الشیطان کلّ ما نُدِب علیہ من امور الشریعۃ۔ وجاؤ شیئا ادّا۔ وجازوا عن القصد جدا۔ و ما بقی فیھم الا حمیۃ الجاھلیۃ۔ وفورۃ النفس الابیّۃ۔ ولا یمشون کالذی خشی ودلف۔ ولا یخلعون الصلف۔ ولا یذکرون ما سلف فی زمن خالصۃ مغشوشین۔ الم یعلموا انّ الشکر لاھلہ من وصایا القرآن۔ و اکرام المحسن

हो गई है और हम आराम से अमन में रहते हैं तो इस अत्याचार से बढ़कर और क्या अत्याचार हो सकता है कि हम इस उपकारी सरकार का धन्यवाद अदा न करें और हम द्वेष, बुराई और विद्रोह दिल में छुपाए रखें। क्या यह नेकी है? नहीं अपितु पाप है और तुम यदि तुम जानते हो। अत: तबाही है उन लोगों के लिए जो फसाद चाहते हैं और दिल में बैर रखते हैं और अल्लाह फसाद करने वालों को पसंद नहीं करता। यह वह क़ौम है जिन्होंने नेमतों को देखकर धन्यवाद के नियमों को भुला दिया और शरीयत के जिन मामलों की ओर उनको ध्यान दिलाया गया था वह शैतान ने उन्हें भुला दिए और उन्होंने बहुत बुरा काम किया और बीच की चाल से बहुत दूर हट गए और उनमें केवल अशिष्टता का स्वाभिमान तथा उद्दंड नफ़स का जोश शेष रह गया और वह उस मनुष्य के समान नहीं चलते जो ख़ुदा के भय को ग्रहण करता है और विनम्रता से चलता है और डींगें मारने को नहीं छोड़ते और वे उस हाल को याद नहीं करते जो बुरी नियत बद्दियानत सिखों के युग में गुज़रा है क्या वे नहीं जानते कि धन्यवाद के पात्र लोगों का धन्यवाद अदा करना पवित्र क़ुर्आन के आवश्यक आदेशों में से है और उपकार करने वाले का सम्मान करना ऐसी बात है जिसको रहमान ख़ुदा की किताब ने वर्णन किया है। निस्संदेह अल्लाह

مما نطق به كتاب الرحمن. و ان الدولة البرطانية قد جعلها الله موابذة حلّنا و عقدنا. و حفظاء يقظتنا و رقدنا. و انا وصلنا بهم الى المرادات المستعذبة. ونجونا من الآفات المخوفة. فكيف لا نشكر لهم و نعلم انهم احسنوا الينا. و كيف نفارقهم و ندرى انهم حرساء الله علينا. و الله يحب المحسنين. و كناقبل ذالك غُصِب مناقر انا وعقارنا و خُرِّب دار قرانا و مقارنا. ودسنا تحت انتياب النوب وتوالى الكرب. وصفرت راحتنا. وفرغت ساحتنا. حتى اُخرجنا من املاك و ارضين. وقصور و بساتين. و اوطان مكتئبين مغتمّين. وطُردنا كالعجماوات. ووُطِئنا كالجمادات. وسلكنا مسلك العباد والغلمان. ولحقنا بالارذلين منزلة من نوع الانسان. وربماا

तआला ने बर्तानवी सरकार को हमारे समस्त मामलों का फैसला करने वाली और हमारे सोते-जागते में हमारी रक्षा करने वाली बनाया है और निस्संदेह हमने उनके द्वारा प्रसन्न करने वाली मनोकामनाओं तक पहुंच पाई और हमने बहुत सी भयावह आपदाओं से मुक्ति पाई है। इसलिए हम कैसे उनका धन्यवाद अदा न करें हालांकि हम जानते हैं कि उन्होंने हम पर उपकार किया है और हम किस प्रकार उनको छोड़ सकते हैं हालांकि हम जानते हैं कि वह ख़ुदा तआला की ओर से हमारे निगरान हैं और अल्लाह तआला उपकार करने वालों को पसंद करता है और इससे पहले हमारे देहात तथा माल और सामान हमसे छीन लिए गए और हमारे मेहमान खाने और बैठने के स्थान को बर्बाद किया गया और हमें निरंतर एवं लगातार संकटों से कुचला गया और हम कंगाल हो गए और हम खाली हो गए यहां तक कि हमें हमारी जायदाद और ज़मीनों, महलों, बागों, घरों से शोकग्रस्त और मलिन चित्त होने की अवस्था में निकाला गया और हमें जानवरों के समान धिक्कारा गया और हमें निर्जीव पदार्थों की तरह रौंदा गया तथा हमसे दासों और नौकरों का सा व्यवहार किया गया और हम मानवजाति में से श्रेणी की दृष्टि से सबसे निकृष्टतम लोगों से जा मिले और कभी हमसे जानवरों को हल्का सा ज़ख्म लगने और हमें किसी

تمنا باخف جرح اصاب منا حيوانًا۔ اوبما قطعنا اغصانا فقُتلنا او صلبنا او اجلئنا تاركين اوطانا و متغربين۔ ثم رحمنا الله و اتى بالدولة البرطانية من ديار بعيدة۔ و بلاد نائية۔ و كان الامر لله يختار لعباده من يشاء۔ يوتى الملك من يشاء و ينزع الملك ممن يشاء۔ وهو ارحم الراحمين۔ انه دفع الحكومة الى اهلها بعد خبال الخالصة۔ ثمّ بدل تعبنا و نصبنا بالنعمة والراحة۔ و اورثنا ارضنا مرة اخرىٰ۔ بعد ما اُخرجنا كاوابد الفلا۔ ورجعنا الى اوطاننا سالمين متسلّمين۔ ورُدّ الينا قرانا و عقارنا وفضّتنا و نضارنا۔ الا ماشاء الله و سكنا فى بيوتنا اٰمنين۔ و انا ما تعلقنا باهداب هذه السلطنة۔ الا بعد ما شاهدنا خصائص هذه الحكومة۔ وامعنا النظر فى نعمها متوسمين۔ وسرحنا الطرف فى

मामूली सी टहनी काटने के बदले में अपराधी ठहराया गया, फिर हमें कत्ल किया गया या हमें सलीब पर मार दिया गया या हमें देशों को छोड़ने और प्रवास ग्रहण करने पर विवश किया गया। फिर अल्लाह ने हम पर दया की और सुदूर के इलाकों से बर्तानवी सरकार को लाया और आदेश अल्लाह ही के लिए है वह अपने बन्दों के लिए जिसे चाहे चुन लेता है वह जिसे चाहता है बादशाहत देता है और जिससे चाहे बादशाहत छीन लेता है। और वह दया करने वालों में से सर्वाधिक दयालु है उसने हुकूमत को सिखों की तबाही के बाद उसकी योग्यता रखने वालों के सुपुर्द कर दिया फिर उसने हमारी थकान और मेहनत को नेमत और आराम से परिवर्तित कर दिया और एक बार फिर हमें अपनी ज़मीन का वारिस बना दिया इसके बाद कि हमें जंगल के जानवरों की तरह निकाल दिया गया था और हम अपने घरों की ओर सही सलामत लौट आए और हमें हमारे देहात जागीरें और धन दौलत वापस लौटा दी गई इल्लाह माशा अल्लाह (अर्थात सिवाए उसके जो अल्लाह ने चाहा) और हम अपने घरों में अमन से रहने लगे और इस सरकार की विशेषताओं के अवलोकन के बाद ही हम इस सरकार के दामन से संबंध हुए और हमने उसकी नेमतों को विवेक से गहरी दृष्टि से देखा और बुद्धिमत्ता पूर्वक हमने उसकी खूबियों

میسمها متفرسین۔ فاذا ھی دواء کروبنا۔ ومداویۃ نوبنا و خطوبنا۔ وبھا سیق الینا الاموال۔ بعد ما استحالت الحال۔ و غار المنبع و اعول العیال۔ ونجینا بھا من الدھر الموقع۔ والفقر المدقع و کنا من قبل شججنا فلا الکروب من الشجیٰ۔ وطوینا اوراق الراحۃ من ایدی الطوی۔ و ما کانت تعرف اقدامنا الا الوجیٰ ۔ و ما صدورنا الا الجویٰ۔ ومرّ علینا لیالی ما کان فراشنا فیھا الا الوھاد۔ و لا موطأنا الا القتاد۔ فکنّا نجلوالھموم باذکار ھذہ الدولۃ۔ و نجتلی زمننا طلق الوجہ۔ بابشار تلک المعدلۃ۔ حتیٰ اسعف اللّٰہ بمرادنا۔ وجاء بھذہ الدولۃ لاسعادنا۔ فوصلنا بھا بشارۃ تنشی لنا کل یوم نزھۃً ۔ و تدرء عن قلوبنا کربۃً۔ الیٰ ان خُلِّصْنا من الخوف والاملاق۔ ونقلنا من

की ओर अपनी दृष्टि दौड़ाई तो देखा कि यही हमारी बेचैनी का उपचार है और हमारे संकटों तथा कठिनाइयों का इलाज करने वाली है हालतें परिवर्तित हो जाने के बाद जब झरने सूख गए (जीविका के माध्यम तबाह हो गए) और घर के लोगों ने रोना-धोना किया तो इसी सरकार के कारण हमारे माल हमें लौटाए गए और हमें इस सरकार के द्वारा भयावह युद्ध तथा धूल में मिला देने वाली दरिद्रता से मुक्ति दी गई और इससे पहले हम ग़मों के जंगलों में से ग़म की हालत में गुज़रते थे और भूख के हाथों हमने आराम को बिछौना लपेट दिया और हमारे पैर केवल ज़ख्मों से परिचित थे और हमारे सीनों में केवल ग़म की जलन थी और हम पर कई रातें ऐसी गुज़रीं कि हमारा बिस्तर नीचाई के अतिरिक्त कुछ न था और हमारे चलने का स्थान कांटों के अतिरिक्त कुछ न था तो हम इस सरकार के द्वारा उन कामों को दूर करते थे और इस न्यायवान सरकार की खुशख़बरी के साथ हम अपने युग को रूपवान देखते थे यहां तक कि अल्लाह तआला ने हमारी मनोकामनाएं पूरी कीं और हमारे सौभाग्य के लिए इस सरकार को लाया अत: हम इस सरकार के द्वारा ऐसी खुशख़बरी तक पहुंचे जो प्रतिदिन हमारी तरोताज़गी को बढ़ाती है और हमारे दिलों से बेचैनी को दूर करती है यहां तक कि हम भय और दरिद्रता से मुक्ति

عـدم العُـراق الی الارفـاق۔ وجـاء نـا النعـم مـن الاٰفـاق۔ و نظـم الاجانـب فی سـلك الرفـاق۔ و فزنـا بمرامنـا بعـد خفوق راية الاخفـاق۔ وقد كنا فی عهـد الخالصـة۔ اخرجنـا مـن ديارنـا و لُفظنا الی مفـاوز الغربـة۔ وبُلِينا باعـواز المنيـة۔ فلمّـا مـنّ اللّٰه علينـا بمجیٔ الدولة البرطانيـة۔ فكأنّـا وجدنـا مـا فقدنـا مـن الخزائـن الايمانيـة۔ فصـار نزولهـا لنـا نُـزل العز و البركـة۔ و مغنـاه سـبب الفـوز والغنيـة۔ ورأينـا بها حبـورًا و فرحة۔ بعـد مـا لبثنـا عـلی المصائـب بُرهـةً۔ و رُفعنا مـن ذل اخريـات الناس الٰی مراتـب رجـال هـم للقـوم كالـرأس۔ ونُجّينـا مـن قطـوب الخطـوب۔ و حـروب الكـروب۔ و كنـا نمـدّ الابصـار الی ذالـك الوقـت السـعيد۔ كما تمـد الاعـين لهـلال العيـد۔ و كنـا نبسـط يـد الدعـاء لهـذه الدولة۔ بمـا

पा गए, और हमें कंगाली से समृद्धि की ओर ले जाया गया और हमारे पास चारों ओर से नेमतें आईं और अजनबी लोग दोस्तों की लड़ी में पिरोए गए और हम असफलता के बाद अपने उद्‌देश्यों में सफल हो गए और जब हम खालसा के काल में थे तो हमें हमारे घरों से निकाल दिया गया और हमें प्रदेश के जंगलों में फेंक दिया गया तथा इच्छाओं की पूर्ति न होने से आज़माए गए तो जब अल्लाह तआला ने बर्तानवी सरकार को लाकर हम पर उपकार किया तो जैसे हमने उनकी ईमानी ख़ज़ानों को पा लिया जिनको हमने खो दिया था। अतः इस (सरकार) का आना हमारे लिए सम्मान और बरकत के उतरने का कारण और उसका अर्थात (खालसा सरकार का) स्थान लेना सफलता एवं समृद्धि का कारण बना और हमने एक लंबे समय तक संकटों में रहने के पश्चात इस सरकार से खुशी और प्रसन्नता देखी और हम नीच और कम श्रेणी के लोगों से बुलंद करके ऐसे बंदों के पदों तक पहुंचा पहुंचा दिया जो क़ौम के लिए सर के समान हैं और हमें घटनाओं की प्रचंडता तथा संकटों के जंगलों से मुक्ति दी गई और हम अपनी आंखें इस मुबारक समय के लिए मार्ग में बिछाए हुए थे जैसे की आंखें ईद के चाँद के लिए बिछाई जाती हैं और हम इस हुकूमत के लिए दुआ के लिए हाथ उठाते थे, उन संकटों

اصابتنـا مصائـب فى زمـن الخالصـة۔ و نبا ّبنـا مالـف الوطـن و اخـرجنا مـن البقعـة۔ و كانـت آبـاء نـا اقتعـدوا غـارب الاغـتراب۔ بمـا اكرهـوا و بُعّدوا مـن الا تـراب۔ فتركـوا دار رياسـتهم وجميـع مـا كان لـهم مـن القـرىٰ۔ و نَصّـوا ركاب السـرىٰ۔ وجابـوا فى سيرهم وعـورا۔ و تركـوا راحـة و حبـورا۔ وانضـوا اجاردهـم تَسْـيارا۔ و ما رأوا ليـلا و لا نهارا۔ حـتى وردوا حمٰـى رياسـةٍ كفّلتـهم بحراسـة۔ فسَـرَوا ايجـاس الخـوف واستشـعاره الى ايـام۔ و رأوا لعـاع الامن و ازهاره بعـد آلام۔ ثم طلعت علينـا شـمس الدولة البرطانيـة و امطـرت مُـزن العنايـات الرحمانيـة۔ فتسـربلنا لبـاس الامـن بعـد ايـام الخوف وصرنـا مخصبين نعـم العوف۔ فعدنـا و ابـاء نـا الى منبـت شُـعبتنا۔ و ملنـا الى الاو كار من فَلَا غُـربتنا

के कारण जो हमें सिखों के काल में पहुंचे और देश से प्रेम हमें रास न आया और हमें अपने स्थान से निकाल दिया गया और हमारे बाप दादा प्रवासी हो गए क्योंकि उनको विवश किया गया और उन्हें समआयु वालों के से अलग किया गया तो उन्होंने अपनी रियासत के केंद्र और जितनी भी उनकी बस्तियां थीं, सबको छोड़ा और उन्होंने रात की सवारियों को तेज दौड़ाया और उन्होंने अपने सफ़र के पथरीले रास्तों को पार किया तथा उन्होंने आराम और उसी को त्याग दिया तथा उन्होंने चिल्ला-चिल्लाकर अपने उच्च नस्ल के तंबू घोड़ों को दुबला कर दिया और उन्होंने रात देखी न दिन यहां तक कि वह ऐसी रियासत की शरण में चले गए जिस ने उनकी रक्षा की ज़िम्मेदारी ली तो उन्होंने एक समय के लिए भय का एहसास और विचार दूर किया और उन्होंने दुखों के बाद अमन के गुच्छे तथा फूल देखे। फिर हम पर बर्तानवी सरकार का सूर्य उदय हुआ और रहमान ख़ुदा की अनुकंपाओं के बादल बरसे फिर भय के दिनों के बाद हमने अमन का लिबास पहना और हम समृद्ध और खुशहाल हो गए तो हमारे बाप दादा अपने देश की ओर लौटे और हम प्रदेश के जंगलों से अपने घरों की ओर आए और हमने प्रसन्न होते हुए अपने आप को मुबारकबाद दीं और यदि हम इंसाफ से काम लेंगे तो अवश्य हम यह

و هنّأنا انفسنا فرحين۔ و لو انصفنا لشهدنا ان هذه السلطنة ردّت الينا ايام الاسلام۔ و فتحت علينا ابوابا لنصرة دين خير الانام۔ و كنا فى زمن دولة الخالصة۔ اوذينا بالسيوف والاسنة۔ وما كان لنا ان نقيم الصلٰوة على طريق السنة۔ و نؤذّن بالجهر كما نُدب عليه فى الملّة۔ و لم يكن بُدّ من الصُمتِ على ايذاءِهم۔ و لم يكن سبيل لدفع جفاءِهم۔ فرُددنا الى الامن والامان عند مجىء هذه السلطنة۔ و ما بقى الا تطاول قسّيسين بالالسنة۔ و جعل الحرية كل حرب سجالا۔ ولكنا تركنا القذف بالقذف لئلا نشابه دجّالا۔ و لا نكون من المتعسفين۔ وما منعت السلطنة ان نفتح الالسن بالجواب۔ بل لنا ان نقول اكبر ممّا قالوا و نصبّ عليهم مطرا من العذاب۔ ولكن

गवाही देंगे कि इस सरकार ने हमें इस्लाम के दिन वापस लौटा दिए और हम पर खैरुल अनाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सहायता के दरवाजे खुले जबकि सिखों की हुकूमत के काल में हमें तलवारों और भालों से कष्ट दिया गया तथा हमारे लिए संभव न था कि हम मसनून तरीके पर नमाज़ अदा कर सकें और ऊंचे स्वर में अज़ान दे सकें जैसा कि धर्म में आदेश दिया गया है और उनके कष्ट देने पर खामोशी के अतिरिक्त हमारे पास कोई चारा न था तथा उनके अत्याचार को दूर करने का कोई मार्ग न था फिर इस सरकार के आने से हम अमन और अमान की ओर लौट आए और केवल पादरियों की गालियां शेष रह गईं और आज़ादी ने प्रत्येक युद्ध को दोनों पक्षों के लिए बराबर बना दिया परंतु हमने बुरा कहने के मुकाबले पर बुरा न कहा ताकि हम भी दज्जाल के समान न हो जाएं और न ही हम अत्याचारियों में से हैं और सरकार ने हमें जैसे को तैसा उत्तर देने से नहीं रोका अपितु हमारे लिए संभव था कि हम उनसे भी बड़ी बात कहें और हम उन पर अज़ाब की वर्षा बरसाएं परंतु एक इंसान से कुत्तों का कार्य तो जारी नहीं हो सकता और न कबूतर मुर्दा पर गिरता है चाहे भूख उसे मौत के जंगलों में फेंक दे। क्या वह हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर औरतों की ओर रूचि का दोष

المرء لا يصدر منه فعل الكلاب۔ ولا يستقرى الحمام الجيفة و لو لفظه الجوع الى معامى التباب۔ ايعيبون نبينا على الشغف بالنساء۔ و كان يسوعهم قد عيب على شره الاكل و شرب الصهباء۔ وقد ثبت من الانجيل انه آوى عنده بغية۔ و كانت زانية و فاسقة و شقية۔ و كانت امرأة شابة فى ثياب نظيفة۔ مع صورة لطيفة۔ فما انصرف عنها و ما قام۔ و ما اعرض عنها و ما الام۔ بل استأنس بها و آنس بطيب الكلام۔ حتى جلعت و مسحت علىٰ راسه من عطرها التى كان قد كسب من الحرام۔ و كذالك اقبل على بغية اخرىٰ و كلّمها۔ وسئلت وعلّمها۔ و هذه حركات لا يستحسنها تقى۔ فما الجواب ان اعترض شقى۔ ولا شك ان النكاح على وجه الحلال خير من تلك

लगाते हैं जबकि उनके यसू पर तो खाने की तीव्र लालच और मदिरापान का आरोप लगाया गया तथा इंजील से भी सिद्ध कि उसने व्यभिचारिणी स्त्री को अपने पास शरण दी और व्यभिचारिणी, पापी और दुर्भाग्यशाली थी और वह उजले कपड़े पहने हुए सुंदर जवान स्त्री थी। तब वह न तो उससे दूर गया और न ही वहां से उठा और न ही उससे मुख मोड़ा और न ही निंदा की अपितु उसकी ओर आकर्षित हुआ तथा प्रेम की अभिव्यक्ति मधुर बातों से की यहां तक कि उसने बेशर्मी दिखाई और उस अर्थात (यसू) के सर पर अपना इत्र मला जो उस (औरत) की हराम की कमाई का था, तथा इसी प्रकार वह यसू एक और बदकार औरत के पास गया और उससे बातचीत की और उस (बदकार औरत) ने प्रश्न किए और उस (यसू) ने उसे ज्ञान सिखाया और यह ऐसी हरकतें हैं कि कोई संयमी इसे पसंद नहीं करता। अत: कोई दुर्भाग्यशाली ऐतराज़ करे तो इसका क्या उत्तर है तथा कोई संदेह नहीं कि हलाल (वैध) तरीके पर निकाह करना ऐसी हरकतों से उत्तम है और जो कोई यसू जैसा जवान कुंवारा हो जो शादी का बहुत मुहताज हो तो इसमें क्या संदेह है कि इस प्रकार का मेल-मिलाप उपलब्ध होने से दिल नहीं बहकेगा★ अत: जो

* هٰذا ما كتبنا من الاناجيل علىٰ سبيل الالزام۔ و انا نكرم المسيح و نعلم انه

الافعال۔ و من کان کیسوع شابا طریرا اغرب مفتقرا الی الازدواج۔ فای شبھة لا تفجأ القلب عند رؤیة ھٰذا الامتزاج ★ فمن کان شمّر عن ذراعیه لاعتراض۔ و لبس الصفاقة لارتکاض۔ فلیحسر عن ساعده لھذه الزرایة۔ فانھا احق و اوجب عند اھل التقوی والدرایة۔ و امّا نحن فصبرنا علی اقوالھم۔ وثبّتنا قلوبنا تحت اثقالھم۔ لتعلم الدولة انّا لسنا بمستشیطین مشتعلین۔ ولا نبغی الفساد بالمفسدین۔

و لا ننسیٰ احسان ھذه الحکومة۔ فانھا عصم اموالنا و اعراضنا ودماء نا من ایدی الفئة الظالمة۔ فالان تحت ظلھا نعیش

कोई ऐतराज़ के लिए कटिबद्ध हो और बेचैनी की हालत में निर्लज्जता का लिबास ओढ़ ले तो उसे चाहिए कि इस दोष निकालने का मुकाबला करने के लिए स्वयं को तैयार करे क्योंकि ऐतराज़ अहले तकवा (संयमियों) और बुद्धिमानों के निकट सच और आवश्यक है इसलिए जहां तक हमारा संबंध है हमने उनके कथनों पर सब्र किया और उनके बोझों तले अपने दिलों को सुदृढ़ रखा ताकि हुकूमत जान ले कि हम क्रोधित और उत्तेजित होने वालों में से नहीं हैं और हम उपद्रवियों के मुकाबले पर उपद्रव नहीं करना चाहते।

और इस सरकार का उपकार नहीं भूलते क्योंकि उसने हमारे मालों, हमारे सम्मान और हमारे ख़ून को ज़ालिम गिरोह की पकड़ से बचाया। अत: हम अब उसकी छाया के नीचे समृद्धि और आराम से रहते हैं और हमें अपराध के बिना चट्टी नहीं पड़ती और अवज्ञा के बिना हम अपमान के घर में नहीं उतरते अपितु हम हर लांछन और आपदा से अमन में हैं और हम समस्त दुराचरियों और काफिरों की बुराइयों से बचाए जाते हैं। फिर हम किस प्रकार नेमतें देने

کان تقیّا و من الانبیاء الکرام۔ منه

★ (अनुवाद) ये वे बातें हैं जो हमने इल्ज़ामी उत्तर के तौर पर इंजीलों से लिख दी हैं और निस्संदेह हम मसीह अलैहिस्सलाम का सम्मान करते हैं और जानते हैं कि वह संयमी था और अंबिया किराम में से था। इसी से

بخفض و راحة۔ ولا نرد مورد غرامة من غیر جریمة۔ و لا نحل دار ذلة من غیر معصیة۔ بل نامن کل تهمة و آفة۔ و نکفی غوائل فجرة و کفرة۔ فکیف نکفر نعم المنعمین۔ و کنّا نمشی کاقزل قبل هذه الایام۔ و ما کان لنا ان نتکلم بشیءٍ فی دعوة دین خیر الانام۔ و کان زمان الخالصة زمان الذلة و المصیبة صُغّر فیه الشرفاء۔ و اسادت الآماء۔ وصُبت علینا مصائب ینشق القلم بذکرها و خرجنا من اوطاننا باکین۔ فقلّب امرنا بهذه الدولة من بؤسٍ الیٰ رَخاء۔ و من زغرع الیٰ رخاء۔ وفتح لنا بعنایاتها باب الفَرج۔ و اوتینا الحریة بعد الاسر والعَرج۔ و صرنا متنعّمین مرموق الرخاء۔ بعد ما کنّا فی انواع البلاء و رأینا لنا هذه الدولة کریف بعد الامحال۔ او کصحة بعد الاعتلال۔

वालों की नेमत का इंकार करें। और हम इन दिनों से पूर्व लंगड़े की सी चाल चला करते थे और हमारे लिए संभव न था कि हम खैरुल अनाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के धर्म के प्रचार के लिए कोई बात कर सकें। और सिखों का काल अपमान और संकट का काल था जिसमें शालीन लोगों का तिरस्कार किया गया और दासियों ने सरदारों को जन्म दिया तथा हम पर ऐसे अत्याचार किए गए कि कलम उनके वर्णन से टूट जाता है और हम अपने देशों से रोते हुए निकले। फिर हमारा मामला इस सरकार के कारण कृपणता से समृद्धि तथा तेज़ और तीव्र हवा से नरम रफ्तार हवा में परिवर्तित हो गया तथा हमारे लिए उसकी अनुकंपा से विस्तार का द्वार खोला गया और हमें क़ैद के बाद आज़ादी दी गई और धनवान तथा गर्व से देखे जाने वाले हो गए, इसके बाद कि हम विभिन्न संकटों में ग्रस्त थे और हमने इस सरकार को अपने लिए दुर्भिक्ष के बाद तरोताज़गी या बीमारी के बाद तंदुरुस्ती की तरह पाया। अत: इन उपकारों और नेमतों तथा सहानुभूतियों के कारण इस सरकार का सच्चे दिल और सच्ची नीयत से धन्यवाद अदा करना आवश्यक हो गया। इसलिए हम इस सरकार के लिए सच्ची ज़बानों और स्वच्छ हृदयों से दुआ करते हैं तथा ख़ुदा तआला से

فلاجل تلك المنن و الآلاء والاحسانات۔ وجب شكرها بصدق الطوية و اخلاص النيات۔ فندعوا لها بألسنة صادقة و قلوب صافية۔ و ندعوا الله ان يجعل لهذه الملكة القيصَرَة عاقبة الخير۔ و يحفظها من انواع الغُمّة والضير۔ و يصدف عنها المكاره والافات۔ و يجعل لها حظّا من التعرف اليه بالفضل والعنايات۔ انه يفعل ما يشاء و انه ارحم الراحمين۔

فلما رأينا هذه المنن من هذه الدولة۔ والفينا اراداتها مبنية علىٰ حسن النية۔ فهمنا انه لا ينبغى ان نوذيها فى قومها بعد هذه الصنيعة۔ ولا يجوز ان نطلب منها ما ينصبها لبعض مصالح السلطنة۔ بل الواجب ان نجادل القسّيسين بالحكمة والموعظة الحسنة۔ و ندفع بالتى هى احسن و نترك الترافع الى الحكومة۔ هذا و نعلم ان قذف

दुआ करते हैं कि इस महारानी कैसरा (हिंद) का अंजाम अच्छा करे और इसे विभिन्न प्रकार के ग़म तथा हानियों से सुरक्षित रखे और इससे घृणित बातें तथा आपदाओं को दूर करे और कृपा एवं अनुकंपा से अपनी मारिफत (अध्यात्म ज्ञान) प्रदान करे। निस्संदेह वह जो चाहता है वही करता है और वह दया करने वालों में सर्वाधिक दयालु है।

फिर जब हमने इस सरकार की ओर से यह उपकार देखे और हमने उसके इरादों को नेक नीयत पर आधारित पाया तो हमने जान लिया कि यह उचित बात नहीं कि हम इस सरकार को इस उपकार के बाद उसकी क़ौम के बारे में कष्ट दें और यह वैध नहीं कि हम इस सरकार से हुकूमत के कुछ हितों के विरुद्ध मांग करें। अपितु आवश्यक यह है कि हम पादरियों से हिकमत और उत्तम नसीहत के साथ बहस करें और हम उस के द्वारा प्रतिरक्षा करें जो उत्तम हो और हम सरकार से न्याय की मांग को त्याग दें। यह तो हुआ और हम जानते हैं कि पादरियों का लांछन लगाना अपनी चरम सीमा को पहुंच गया है और उसकी छुरियों ने हमारे दिलों को ज़ख्मी कर दिया है तथा उन्होंने हमारे जनसामान्य पर ऐसे आक्रमण किया है जैसे भेड़िया भेड़ के बच्चे पर आक्रमण करता है। और उन्होंने घाटीदार चीते की

قسّیسین قد بلغ مداہ۔ و جرحت قلوبنا مداہ۔ و انھم وثبوا علی عامتنا وثبۃ الذئب علی الخروف۔ و نزوا نزو النمر المجوف۔ فسقی کثیر من ایدیھم کاس الحتوف۔ وبلغوا بدجلھم ما لیس یبلغ بالسیوف۔ و تراء وا من کل حدب ناسلین و قد اتتکم من اخبار فلا حاجۃ الیٰ اظھار۔ و لا تغتموا و لا تحزنوا و اربؤا ایام اللّٰہ صابرین۔

والامر الذی حدث الآن واضجر القلوب۔ وجدّد الکروب۔و عظّم الخطوب وانتشر وا وقد الحروب۔ و کبر و اعضل۔ و دقّ و اشکل۔ و خوّف بتھاویلہ و ھوّل۔ فھو رسالۃ امّھات المؤمنین۔ وقد قامت القیامۃ منھا فی المسلمین۔ و کل من رأی ھذہ الرسالۃ فلعن مؤلّفہ بما جمع السبّ والضلالۃ۔ وھو زایل الوطن والمقام۔ لکی

तरह तेज़ी से आक्रमण किया तो उनके हाथों से बड़ी संख्या ने मौत का प्याला पिया और उन्होंने अपने छल से वह काम कर दिखाया जो तलवारों से नहीं किया जा सकता और दिखाया कि वह हर बुलंदी को फलांगने वाले हैं और निस्संदेह तुम्हारे पास ऐसी ख़बरें आ चुकी हैं जिनके व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं और तुम ग़म न करो तथा दुखी न हो और सब्र करते हुए अल्लाह के दिनों की आशा करो।

और वह मामला जो अब हुआ है और जिसने दिलों को बेचैन कर दिया है तथा दुखों को ताज़ा कर दिया है और बात बढ़ गई तथा फैल गई और इस बात ने युद्ध की अग्नि भड़का दी है और वह मामला बहुत बड़ा हो गया है तथा उसने अपनी भीषणता से भयभीत किया और डराया है। अत: वह पुस्तक 'उम्महातुल मोमिनीन' है जिसके कारण मुसलमानों में क़यामत मच गई है और प्रत्येक जिसने यह पुस्तक देखी उसने उसके लेखक पर लानत भेजी क्योंकि उसने इस पुस्तक में गालियां और गुमराही एकत्र कर दी हैं तथा उसने देश और स्थान को छोड़ा ताकि अधिकारियों से अमन में रहे और उसने भागने का मार्ग अपनाया ताकि उसे मुकद्दमों में घसीटा और खींचा न जाए। अब तो उससे केवल उसकी बातों की गंदगी, बातों की दुर्गंध, ऐतराज़ों के बोधभ्रम शेष रह गए हैं। इसलिए हम उसके लांछन लगाने, उसकी गालियों और

يامن الحكام۔ فاختار المفرّ۔ لئلا يُسحب و يُجرّ و بقى منه عذرة كلماته۔ و نتن ملفوظاته ۔ و اُغلوطة اعتراضاته۔ فنترك قذفه و بذاءه و نجاسة كلماته۔ و نفوّضه الى الله و يوم مكافاته۔ و اما ما افترى من شبهاته التى تولّدت من حمقه و زيغ خيالاته۔ فذالك امر وجب ازالته بجميع جهاته۔ و ان الحق شيء لا يمكن احدا التقدم عنه و لا التّأخر۔ ثم غيرة الاسلام فرض مؤكد لمن كان له الحياء والتدبّر۔ فان المؤلّف اجترء و هتك حرم الدين۔ وصال و بارز فبارزوا كاسد من العرين۔ وقد حان ان يكون رجالكم كقسورة و نساء كم كلبوة۔ وابناء كم كاشبال۔ واعداء كم كسخال۔ فاتقوا الله و عليه توكّلوا ان كنتم مؤمنين۔

و قد سبق منّا الذكر بانّ القوم تفرّقوا فى امر كتابه۔ فبعضهم

वाक्यों की गंदगी को छोड़ते हैं और हम उसे अल्लाह तआला तथा क़यामत के दिन के सुपुर्द करते हैं। अत: जो इफ्तिरा उसने ऐसे संदेहों के परिणामस्वरुप किया है जो उसकी मूर्खता और उल्टी सोच के कारण पैदा हुए हैं वह ऐसा मामला है कि उसका हर पहलू से निवारण आवश्यक है और सत्य ऐसी चीज़ है कि किसी के लिए उससे आगे बढ़ना या पीछे रहना संभव नहीं। फिर इस्लाम का स्वाभिमान हर लज्जावान और विचार करने वाले पर बिल्कुल फ़र्ज़ है क्योंकि निस्संदेह लेखक ने हिम्मत की इस्लाम धर्म के अपमान की और उसने आक्रमण किया तथा मुकाबले के लिए सामने आया तो तुम भी शेर के समान मुकाबले के लिए कछार से निकलो और निस्संदेह वह समय आ गया है कि तुम्हारे मर्द शेरों के समान हों और तुम्हारी औरतें शेरनियों के समान और तुम्हारे बेटे शेर के बच्चों के समान और तुम्हारे शत्रु बकरों के समान हों। अत: अल्लाह का संयम ग्रहण करो और उसी पर भरोसा करो यदि तुम मोमिन हो।

और हमारी ओर से पहले चर्चा गुज़र चुकी है कि (हमारी) क़ौम उसकी पुस्तक के बारे में विभिन्न राय रखती थी तो उनमें से कुछ ने उसके उत्तर देने की ओर ध्यान देने को अच्छा जाना और उन्होंने इस बात को बुरा समझा कि इस शिकायत को सरकार तक पहुंचाया जाए क्योंकि यह व्यवस्था और

استحسنوا التوجه الی جوابہ۔ واستھجنوا ان یرفع الشکوی الی السلطنۃ۔ فانھا من امارات العجز والمسکنۃ۔ و فیہ شیءٌ یخالف التأدّب بالدولۃ العالیۃ۔ و قالوا ان الترافع لیس من المصلحۃ۔ فلا تسعوا الی حکام الدولۃ۔ و لا تقصدوا سیّئۃ بانواع الحیلۃ۔ بل اصبروا و غیّضوا دموعکم المنھلات۔ ولا تذکروا ما قیل من الجھلات۔ وادفعوا بالتی ھی احسن و انسب بشان الشرفاء۔ ولا تسعوا الی المحاکمات بالصراخ والبکاء۔ و ان لنا کل یوم غلبۃ بالادلۃ القاطعۃ و سطوۃ دامغۃ بالبراھین الیقینیۃ۔ فلا یحتقر دیننا عند العقلاء۔ و لا یحقر بتحقیر السفھاء۔ فالرجوع الی الحکومۃ کالنائحات۔ امر لا یعدّہ غیور من المستحسنات۔ و لیس ھذا العدو بواحد فنستریح بعد

विनय की निशानियों में से है और इसमें ऐसी चीज़ है जो उच्च सरकार के आदर के विरुद्ध है और उन्होंने कहा कि मेमोरियल भेजना हित के विरुद्ध है। अत: तुम सरकार के अधिकारियों की ओर न भागो और विभिन्न बहानों से बुराई का इरादा न करो अपितु सब्र करो और अपने बहते हुए आंसुओं को पोंछ लो और जो मूर्खतापूर्ण बातें की गई हैं उनको याद न करो और ऐसी चीज़ से प्रतिरक्षा करो जो अच्छी हो और सभ्य लोगों के महत्व एवं सम्मान के सर्वथा अनुसार हो और तुम अदालतों में चीखते-चिल्लाते और रोते हुए न जाओ तथा निस्संदेह हमारे लिए प्रतिदिन अकाट्य तर्कों के साथ प्रभुत्व है और निश्चित प्रमाणों के साथ सर तोड़ आक्रमण है। अत: हमारा धर्म बुद्धिमानों के निकट तिरस्कृत नहीं और न ही मूर्खों के तिरस्कार करने से तिरस्कृत होता है। मृतक पर रोने वालियों की तरह हुकूमत की ओर लौटना ऐसा मामला है कि स्वाभिमानियों के निकट अच्छा नहीं और यह एक ही शत्रु नहीं कि उसके दंड के बाद हम आराम पाएं अपितु हम उस जैसे बहुत से (शत्रु) देखते हैं जिनकी बातें उसकी बातों जैसी हैं और पैमाना भी उसके पैमाने जैसा है। इस देश के शहरों में से कोई शहर और इलाका शेष नहीं रहा जहां उन्होंने डेरा न डाला हो

نكاله۔ بل نری كثيرًا من امثاله۔ لهم اقوال كاقواله۔ و مكال كمثل مكاله۔ و لم يبق بلدة و لا مدينة من مدائن هذه البلاد الا نزلوا بها و تخيّموا للفساد فى الارضين۔ و كانوا فى اوّل زمنهم يتزهّدون و يوحدون و يروضون انفسهم و يراوضون۔ و يكفون الالسن ولا يهذون۔ ثم خلفوا من بعدهم خلف عدلوا عن تلك الخصلة۔ ورفضوا وصايا الملة۔ و هجوا الاتقياء والاصفياء و تركوا الصلٰوة و اكلوا الخنزير و شربوا الخمر و عبدوا انسانا كمثلهم الفقير۔ و سبق بعضهم على البعض فى سبّ خير العباد۔ وقذفوا عرض خير البريّة بالعناد۔ ألّفوا كتبا مشتملة على السبّ والشتم والمكاوحة والقحة ممزوجةً بانواع العذرة مع دجل كثير لاغلاط العامة۔ و بلغ عدد بذاء

और इस पृथ्वी में उपद्रव करने के लिए तंबू न लगाए हों और वह अपने पहले युगों में संयमियों जैसा जीवन व्यतीत करते थे और एकेश्वरवाद की आस्थाएं रखते थे और स्वयं भी परिश्रम करते थे और दूसरों को भी परिश्रम कराया करते थे और अपनी ज़बानों को रोकते थे और बकवास न करते थे। फिर उन के बाद अयोग्य उत्तराधिकारी आए और वह इस आदत से हट गए और उन्होंने धर्म के आदेशों का इंकार कर दिया और उन्होंने संयमी तथा चुने हुए लोगों की निंदा की और उन्होंने नमाज़ त्याग दी, सूअर खाया और शराब पी और अपने जैसे मुहताज आदमी की इबादत की और खैरुल इबाद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां देने में उनमें से कुछ-कुछ अन्यों से आगे बढ़ गए और उन्होंने शत्रुता से खैरुल बरिय्य: सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्मान पर आरोप लगाए। उन्होंने गाली गलौज, बुरा भला कहने, निर्लज्जता और विभिन्न प्रकार के गंद पर आधारित और बहुत से धोखे पर आधारित पुस्तकें लिखीं ताकि सामान्यजन को बोधभ्रम में डालें और उनकी गालियों की संख्या इस सीमा तक पहुंच गई कि उसे केवल ख़ुदा तआला ही जानता है। अत: तुम देखो कि मुक़द्दमेबाज़ी के समय मामला कितना पेचीदा हो जाता है और

هم الیٰ حد لا یعلمه الا حضرة العزّة۔ فانظروا کیف یعضل الامر عند الاستغاثاة و یلزم ان نعدو کل یوم الی المحاکمات۔ و ان هی الا من المحالات۔ هذه دلائل هذه الفرقة۔ والآخرون یؤثرون طرق الاستغاثة۔ و لکنا لا نریٰ عندهم شیئًا من الادلة علیٰ تلك المصلحة۔ و ان هو الا حرص للانتقام کعُرض الناس والعامة۔ و اذا قیل لهم انکم تخطئون بایثار هذه التدابیر۔ فلا یجیبون بجواب حسن کالنحاریر۔ و یتکلمون کالسفهاء المتعصبین۔ و قلنا ایها الناس ارجعوا النظر۔

आवश्यक हो जाता है कि हम प्रतिदिन फैसलों के लिए अदालतों की ओर दौड़ें तो निस्संदेह यह असंभव बातों में से है। ये उस गिरोह के तर्क हैं और दूसरे मुकद्दमेबाज़ी के मार्गों को प्राथमिकता देते हैं परंतु हम उनके पास इस हित के बारे में कोई तर्क नहीं देखते। यह तो केवल सामान्य लोगों के समान प्रतिशोध का लालच है और जब उनको कहा जाता है कि इन उपायों को प्राथमिकता देकर तुम ग़लती करते हो तो वे बुद्धिमानों की तरह अच्छा उत्तर नहीं दे सकते और द्वेष रखने वाले मूर्खों के समान बातें करते हैं तथा हमने कहा कि हे लोगो! तुम फिर से विचार करो।

आठवीं शर्त पृष्ठ-6 से संबंधित हाशिया

फ़र्याद-ए-दर्द पुस्तक

हदीस की पुस्तकें

बुख़ारी तालीक़ुस्सिन्दी, शैख़ुलइस्लाम मिस्र, ऐनी, फ़त्हुलबारी, इर्शादुल बारी, उन्वानुल बारी, शेख़ुल इस्लाम देहलवी, हाफ़िज़ दर्राज़, तराजुम शाह वली उल्लाह तौशीह, तस्हीलुल क़ारी, लुग़ात दफ़उल विस्वास फ़ी बाज़िन्नास, रफ़उल इल्तिबास अन बाज़िन्नास, मज्मुआ हवाशी हाफिज़ साहिब, तजरीदुल बुख़ारी मुहश्शा, मुस्लिम माअ नौवी मिस्र-व-हिन्द, वश्हुद्दीबाज, मुफ़्हम, अस्सिराजुल वहहाज, मुअत्ता, ज़र्कानी, मुसव्वा, मुसफ़्फ़ा, अलकौलुलमुमजिद तिर्मिज़ी, शुरूहे अर्बअ, नफ़अ क़ूतुल मुग़तज़ी, निसाई, अस्सनदी, ज़हरूर्रब्बी उर्फ़ ज़हरूर्रब्बे, हवाशी शेख़ अहमद, अबूदाऊद, ता'लीक़ इब्ने क़य्यिम, मिर्क़ात अस्सऊद, मज्मुआ शुरूहे अर्बअ, इब्ने माजा माअ ता'लीक़ुस्सनदी, मिस्बाहुर्रजाजः तर्जुमा उर्दू, दारमी, मुस्नद अहमद, मुस्नद कंज़ुल उम्माल कामिल, क़ंज़ुल उम्माल कामिल, शरह मआनी-उल-आसार, किताबुल आसार, किताबुल हज, मुस्नद इमाम अबू हनीफ़ा, मुस्नद अश्शाफ़िई, रिसालतुल इमाम अश्शाफ़िई, अलअदबुल मुफ़रद, दार-ए-क़ुत्नी, तर्ग़ीब-व-तर्हीब मंज़री, जामे सग़ीर तैसीरुल वुसूल, तस्ख़ीर अरबईन नबवी, ख़मसीन इब्ने रजब, मवाइदुल अवाइद, उम्दतुल अहकाम बुलुग़ुलमराम, रियाज़ुस्सालिहीन, शमाइले तिर्मिज़ी, खसाइसिन निसाई, नवादिर हकीम तिर्मिज़ी, कौसरुन्नबी, मशारिक़, दारूलग़ाली, अज्क़ार, तिबरानी सग़ीर, जुज़उल क़िराअत, जुज़ रफ़अल यदैन, हिस्ने हिसीन, नुज़ूलुल अबरार, सफ़रुस्सआद, बुनियान-ए-मर्सूस, बुदूरूल अहिल्लः, मिर्क़ात, लम्आत, कौकब दुरारी, शरह उम्दतुल अहकाम, नैलुल औतार, मनादी शरह जामिउस्सग़ीर, अज़ीज़ी

शरह जामिउस्सग़ीर, नसबुर्राय, नसबुद्दिराय:, तल्ख़ीसुल हबीर, मिस्कुल ख़िताम, सुबुलुस्सलाम, फ़त्हुल अल्लाम, शरह सफ़रुस्सआदत, शरह अली क़ारी अली मुस्नद, जामिउल उलूम इब्ने रजब, सिराजुन्नबी, शरह शमाइल, शरह हनफ़ी, शरह बाजूरी, शरह हरवी, शरह सरहिन्दी, तिब्बुन्नबी सुयूती, नेशापुरी शाह मबारिक़ुल अज़्हार शरहमशारिक़, शरह सुदूर, बुदूरे साफ़िरह, मज़ाहिर-ए-हक़, दुर्रे अलबह्या, सैलुलजर्रार, उक़ूद जवाहिरिल मुनीफ:, रिसाला रफ़उल यदैन फ़िद्दुआ, तालीमुल किताबत लिन्निस्वान, बाब चहारम मिशकात, अलजहरो बिज़्ज़िक्र मस्हुर्रुक़्ब:, कश्फ़ुल ग़म्म:, किताबुल अस्माअ लिल बैहक़ी, रसाइल समानिय: व -अश्र-व-इस्ना अशर लिस्सुयूती, अल जवाबुल काफ़ी, ख़ुरूजुल महदी अला क़ौलितिर्मिज़ी, मस्अल: तलक़्क़ुल उम्म:, रफ़उस्सबाब: लिहयातिस्सनदी, किताबुस्सलात, अलजवाबुल-काफ़ी मज़ाहिरुल हक़, बर्ज़ख़ अबू शकूर, रिसाल: इमाम मालिक, मज्मुआ मौज़ूआत शौकानी, तअक़्क़ुबाते सुयूती, मस्नूअ मौज़ूआत-ए-कबीर, अल्लआली मस्नूअ, जैलुल्लआली, कश्फुलअहवाल, मकासिदे हसन:, कलीनी, शरह कलीनी, इस्तिब्सार मनलायहज़ुरुहुल फ़क़ीह, तहज़ीबुल अहकाम, वसाइलुलुश्शिया, नहजुल बलाग़:, शरह इब्ने अरबी अलहदीद।

तफ़्सीर की पुस्तकें

तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर, तफ़्सीर इब्ने कसीर, तफ़्सीर फ़त्हुलबयान, तफ़्सीर अब्बासी, तफ़्सीर मआलि मुत्तंजील, ख़ाज़िन, मदारिक, जामिउल बयान, इक्लील, फ़त्हुलख़बीर, तफ़्सीर सूरह नूर, तफ़्सीर इब्ने अर्फ:, तफ़्सीर बहरुल हक़ाइक़, हुसैनी ज़माना मुसन्निफ, तफ़्सीर रूहुल मआनी, तफ़्सीर कबीर, तफ़्सीर रूहुल बयान, बैज़ावी, ख़फ्फाज़ी बैज़ावी, क़ुनूवी बैज़ावी, शैखज़ादा बैज़ावी, अस्सय्यद अली बैज़ावी, कश्शाफ़, इन्साफ़ अला

कश्शाफ़, इल्हाफ़ अला कश्शाफ़, कश्फुल इल्तिबास अला कश्शाफ़, अस्सय्यद अली अलकश्शाफ़, तफ़्सीर अबू सऊद नीशापुरी, मज्मउल बयान, हल अब्यातुल कश्शाफ़, सिराजुल मुनीर ख़तीब, फ़त्हुर्रहमान क़ाज़ी ज़करिया, सावी अला जलालैन, मज़्हरी, अलजमल अलल जलालैन, ता'लीक़ जलालैन, अस्बाबुन्नुज़ूल, जलालैन, अन्नासिख वल मन्सूख इब्ने हज़म, नुज़्हतुल क़ुलूब अबू बक्र सख़्तियानी, मुफ़ारिदात-ए-राग़िब इस्फ़हानी, तब्सीरूर्रहमान, अराइसुल बयान, तन्ज़ीहुल क़ुर्आन, अद्दुररुल ग़ुरर, साफ़ी, सवातिउल इल्हाम, तफ़्सीर दुररुल अस्रार अहमदी, नैलुल मराम, इत्क़ान, कमालैन, मफ़हमातुल अक़रान, तफ़्सीर मन्सूब इललइमाम हसन अस्करी, तफ़्सीर अम्मार अली, तफ़्सीरूस्सय्यद, बुरहान अला तफ़्सीरूस्सय्यद, तन्क़ीहुलबयान अला तफ़्सीरूस्सय्यद, इक्सीर, तफ़्सीर क़ासिम शाह, तफ़्सीर कवाशी, अक़्सामुल क़ुर्आन इब्ने क़य्यिम, क़समहाए क़ुर्आनियः, मज़्हरी, अज़ीज़ी सह पारः, इफ़ादतुश्शियूख़, अत्तावीलातुर्रासिख फ़िल मुक़त्तिआत, वजीज़, बहरे मव्वाज, फ़त्हुर्रहमान, कश्फ़ुल अस्रार, तैसीरुल क़ुर्आन, ग़रीबुल क़ुर्आन, फ़ौज़ुल कबीर, अत्तहरीर, रऊफ़ी, तफ़्सीर मुअव्वज़तैन लिइब्ने सीना, नमूज़जुल्लबीब, इम्ला अबुल बक़ा, रौज़तुर्रय्यान, तर्जुमानुल क़ुर्आन, अस्रारूल फ़ातिहा क़ूनूवी, तफ़्सीर मुईनुल वाइज़, तफ़्सीर याकूब चर्ख़ी, मज़्हरुल अजाइब, करामातुस्सादिकीन..... ज़ादुल आख़िरत, ऐजाज़ुल क़ुर्आन, हक्क़ानी, इक्तिबासुल क़ुर्आन, पारः तफ़्सीर इमाम अबुलमन्सूर, तक़्रीम फी अस्हाबिर्रक़ीम, इज़ालतुर्रैन, इज़ालतुल ग़ैन, अक्सीरी आज़म, अस्रारुल क़ुर्आन, लताइफ़ुल क़ुर्आन, फ़त्हुल मन्नान, मआमलातुल अस्रार, हयात-ए-सरमदी, सैल, रैड वील, तर्जुमा अम्माद, तर्जुमा शिया इस्ना अशरियः, तफ़्सीर युसूफ़ नुक़रह कार, ख़ल्क़ुलजान्न, ख़ल्क़ुल इन्सान, नुजूमुल क़ुर्आन, मिफ्ताहुल आयात।

सर्फ़-व-नह्व
(व्याकरण)

मिल्हतुल ए'राब, शरह लम्हः मिन मुसन्निफ़, शरह बहरक, आजिरोमियः मुहश्शा, अब्नियतुल अफ़आल, शरह मिअत इब्ने रज़ा, शरह कतर.....मुजीबुन्निदा, नह्व मीर,शरह मिअत अरबी, हिदायतुन्नहव, काफ़ियः कला ज़ैनी ज़ादा, ग़ायतुत्तहक़ीक़, रज़ी काफ़ियः, शरह मल्ला, अब्दुल ग़फ़ूर माआ मौलवी, जमाल अब्दुर्रहमान, इसामुद्दीन, शरह अजरूमियः, शुज़ूर, शरह शुज़ूर मुसन्निफ अमीर अली इबादह, क़स्सारी, अल्फियः मुहम्मदी, तर्कीबुल्फ़ियः, शरह ख़ालिद अज़्हरी, शरह शवाहिद इब्ने अक़ील, इब्ने अक़ील, तौज़ीह, तस्रीह, हाशिया अत्तस्रीह, सब्बान, अश्मूनी, मुग़नी, हाशिया अमीर अलीलमुग़नी, हाशिया (अली) हाशियतुल अमीर, वसूक़ी अललमुग़नी, दमा मीनी अला मुग़नी, मुसन्निफ़ अला दमा मीनी, मिनहल अललवाफ़ी, ज़रीरी, मिस्बाह, ज़ौअ, दहन, तहज़ीबुन्नह्व, इर्शादुन्नह्व, शरह उसूल-ए-अकबरी, तंबीहुल अनीद, इल्मुस्सीग़ः, तसारीफ़ुपश्शुकूर, हदयतुस्सर्फ़, अब्वाबुस्सर्फ़, मौजिहुत्तहज्जी, मिफ़्ताहुल क़ुर्आन, सर्फ़ मीर, मुतूनुल उलूम, अल इलमुल ख़फ़्फ़ाक़, रिसालः वज़्अ, शरह रिसालः वज़्अ, रज़ी शाफ़ियः, जार बुर्दा, इक़्तिराह, मुनतख़ब अश्बाह, मुफ़स्सल, फ़वाइदुस्समादियः, शम्मः, ख़साइसुल अब्वाब, नग़्ज़क, मग़्ज़क,शरह ज़न्जानी, मतन मतीन, शरह तुहफ़तुलग़िल्मान, किताब शिबवैहि, मिफ़्ताहुल उलूम सिकाकी, ख़िज़्री अली इब्ने अक़ील, अश्वाह वन्नज़ाइर सुयूती।

मआनी बयान

उक़ूदुज्जमान, कुनूज़ुल जवाहिर, शरह उक़ूद, शरह कुनूज़, तल्ख़ीसुल मिफ़्ताह, मुख़तसर, बन्नानी अली मुख़्तसर, मुतव्विल भोपाली,

अतवल, हसन मुतव्विल, मौलवी मुतव्विल, सय्यद मुतव्विल, अस्सीद, सय्यद अली मिफ़्ताह, फ़राइद-ए-महमूदी, मुर्शिदी अली उक़ूद, रिसालः किनायः, मीज़ानुल अफ़्कार, ग़ुसनुल्बान, रिसाइली अजविबः इराक़ियः, नश्वतुस्सकरान।

अदब (साहित्य)

शरह फ़रज़दक़, दीवान अख़तल, उर्वा नाबिग़ः, हातिम, अल्क़मः, फ़रज़दक, क़ैस आमिर, अंतर, ख़न्साअ, तुर्फ़ा, ज़हीर, इमरउल क़ैस, शलशलियः, हिमासः, अबुल अताहिया, रत्बुल अरब, हमीरियः, अत्यबुन्नग़म, क़सीदा ज़म्मुतुत्व्लीद, तुहफा सिद्दीक़ःशरह उम्मेज़अ, मुतनब्बी, ख़श्शाब, शरह ज़ूज़नी, शरह तब्रेज़ी, शरह इमरउलक़ैस, शरह शफ़्ज़ी, फैज़ी हिमासः, अल्कुन्नफ़ीस, शरह फैज़ी सब्आ मुअल्लकः, शरह हम्ज़ियः, शरह बानत, शरह बुर्दा, शरह मुतनब्बी, शरह लिउमैय्या अल अरब, शरह लिउमैय्या अल अजम, शरह तन्वीर, शरह रसाइल हम्दानी, शरह उमर बिन अल फ़ारिज़, शरह सबाबः, ख़ुतब इब्ने नबातः व नवाब-व अब्दुल हयी व अरब, अत्वाक़, तज़्मीनुल अस्वाक़ मअ शरह, शरह तुहफ़तुलमुलूक, मुसामिरः, सिद्दीकः, अलहिलाल, अलएलाम, अलउर्वा, अजविबः इराक़ियः, शरह मुक़ामात, मक़्सूरःदुरीद, मक़ामात-ए-वरदी, मक़ामात-ऐ-हरीरी, हमीदी, हम्दानी, सुयूती, बदीई, ज़मख़शरी, ख़ज़ानतुल अदब इब्ने हज्जः, शवाहिद ऐनी अली रज़ी व शवाहिद अल्फ़ियः, अलिफ़ लैलः, इख़्वानुस्सफ़ा, मुस्ततरफ़, कश्कोल, इकाइदुल फ़रीद, अल अनीसुल मुफ़ीद, अलफलकुल मशहून, तारीख़ यमीनी, तिबयान-ए-तबीन, अख़बारुल अरब, सनाजतुत्तर्ब, अग़ानी, इन्शा-ए-मरई, नहजुल मुरासलः, सफ़ियतुल बलाग़ः, मसलुस्साइर, फ़लकुद्दायर, किताबुल अज़्किय, अदबुत्तलब, उम्दः इब्ने रशीक़, रसाइल बदीउज़्ज़मान, मीज़ानुल अफ़्क़ार,

उरूज बा काफ़ियः, अलफ़त्हुल क़ुस्सी।

लुग़त (शब्दकोश)

ताजुलउरूस, लिसानुल अरब, मज्मउल बिहार, मज्मउल बहरैन, निहायः इब्ने असीर, मुख़्तसर अन्निहायः लिस्सुयूती, मशारिक़ुल अन्वार लुग़ः, सिहाह जौहरी, वश्शाह, मिस्बाहुल मुनीर, अलक़ौलुल मानूस, अलजासूस अलल क़ामूस, अक़रबुल मवारिद, जैल अक़रब, असासुल बलाग़ा, कामिल मिबरद, मुक़द्दमतुल्लुग़ः, बुग़्यः फ़ी उसूल अल्लुगः, मज़्हर, फराइदुल्लुग़ः, सिर्रुल्लयाल, सिराह, अलमुबतकिर, फ़ुरूक़ुल्लुग़ः, ग़यास, शम्सुल्लुग़ात, अम्साल-ए-सीदानी, अम्साल हिलाल अस्करी, मख़्ज़नुल अम्साल, नज्मुल अम्साल, फिक़ः अल्लुग़, किफ़ायतुल मुतहफ़्फ़िज़, अलफ़ाज़ुल किताबः, अत्तलवीह फ़िल फ़सीह, अलमुसल्लसात, तज्नीसुल्लुग़ात, तातीरुल अनाम, इब्ने शाहीन, अमीरुल्लुग़ात, अरमग़ान, मुहावरात-ए-हिन्द।

तारीख (इतिहास)

तारीख तिब्री कलान 14 जिल्द, तारीख़ इब्ने ख़ल्दून 7 जिल्द, तारीख़ कामिल इब्ने असीर 12 जिल्द, अख़बारुद्दुवल क़िर्मानी,अख़बारुल अवाइल मुहम्मद बिन शहनः, तारीख़ अबू नसर अत्बी, नफ़्ख़ुत्तीब तारीख़ उलमा-ए-अंदुलूस, मुरूजुज़्ज़हब मसऊदी, आसारुल अद्हार 3 जिल्द, अजाइबुल आसार जीरती, ख़ुलासतुल असर फी आयान हादी अशर, फ़हरिस्त इब्ने नदीम, मफ़ातीहुल उलूम, अलआसारुल बाक़ियः बैरूनी, तक़्वीमुल बुल्दान इमादुद्दीन, मरासिदुल इत्तिला, मसालिकुल मुमालिक, अलफ़त्हुल क़ुस्सी, नुज़्हतुल मुश्ताक़,मवाहिब लदुन्नियः, ज़र्कानी शरह मवाहिब, ज़ादुल मआद, सीरत इब्ने हिशाम, शिफा, शरह शिफ़ा लिअली क़ारी, सीरत मुहम्मदिया औजिज़ुस्सैर, क़ुर्रतुल उयून, सुरूरुल महज़ून,

मदारिजुन्नुबुव्वत, सीरत हलबियः, सीरत दहलान, मुलख़्खस अत्तवारीख़, सीरत मुहम्मदिया हैरत, तन्क़ीदुल कलाम, बदाइ उज़्ज़ुहूर, तुहफ़तुल अहबाब, तारीख़ुल ख़लफ़ा सुयूती, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, इसाबः फी मारिफ़तिस्सहाबः, असदुल ग़ाबः, मीज़ानुल ऐतिदाल, इब्ने ख़्लकान, तज़किरतुल हुफ़्फ़ाज़, लिसानुलमीज़ान, ख़ुलासा असमाउर्रिजाल, तक़रीबुत्तहज़ीब, ख़ुलासा तारीख़ुल अरब, ख़ुलासा तरीख़ अरब सय्यदियो, तारीख़ मिस्र व यूनान, तारीख़ कलीसियः, दीनी-व दुनयावी तारीख, मसीही कलीसियः, तारीख-ए-यूनान, तारीख-ए-चीन, तारीख-ए-अफग़ानिस्तान, तारीख-ए-कश्मीर, गुलदस्ता कश्मीर, तारीख़-ए-पंजाब, तारीख-ए-हिन्दुस्तान अलफिन्सटन, तारीख-ए-हिन्द ज़का अल्लाह नवीन भी, वकाइए राजपूताना, तारीख़ ग़ौरी न खिल्जी, अजाइबुल मक़्दूर, तारीख़-ए-मक्का, रिहलः बैरम सिफ़्वतुल ऐतबार, रिहलः इब्ने बतूतः, रिहलः अस्सिद्दीक़,रिहलः अलवसी, रिहलः अहमद फ़ारिस, रिहलः शिब्ली,खुलफ़ाउल इस्लाम, तारीख नहर ज़ुबैदा, तारीख बंगाल,मनाक़िब खदीजा, मनाक़िब सिद्दीक़, मनाक़िब अहले बैत, मनाक़िबुल ख़वातीन, रिहलते बर्नियर, तारीख़ बैतुल मुक़द्दस, अलयानिउलजना, तज़्किरः अबू रैहान, अलमुश्तबिह मिनर्रिजाल, बिदायतुल क़ुदमा, फ़ुतूह बहना, जुग़राफियः मिस्र, फ़ुतूहुलयमन, फ़ुतूहुश्शाम, मोजिमुल बुल्दान, तारीख़ुल हुकमा, सीरतुन्नोमान, हयात-ए-आ'ज़म, ख़ैरातुल हिसान, हुस्नुल बयान, मनाक़िब अश्शाफिई, क़लाइदुल जवाहिर, अख़बारूल अख़्यार, तज़्किरतुल अब्रार, गुज़िश्तः व-मौजूदः तालीम, तारीख-ए-अलवी, तज़्किरतुल औलिया, इत्तिहाफ़ुन्नबला, अत्ताजुल मुकल्लल, तबक़ातुल उदवा, तलाइउलमक़्दूर, अब्जदुल उलूम, उम्दतुत्तवारीख, आईनःए-अवध वाक़िआत शुजाअ, नफ़्हातुल इन्स, सवानिह मुहम्म्द क़ासिम, मौलवी फ़ज़्ज़लुर्रहमान, बुस्तानुल मुहद्दिसीन, तराजुम

हनफ़ियः, गुलाब नामः तारीख़ हिसार, तारीख बहावलपुर, तारीख सियाल कोट, तारीख नुहात, तारीख पटियाला, तारीख रूसिया, तारीख लाहौर, रोज़ रोशन, शमए-अंजुमन, सुब्ह-ए-गुलश्न, तज़्किरतुश्शुअरा दौलत-ए-शाही, तर्जुमान वहाबियः, तारीख़ुल हुकमा, यादगार ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, त्क्वीमुल्लिसान, तुज़क-ए-तैमूर।

कुतुबुल उसूल

तहरीर इब्ने हम्माम, कश्फ़ुल अस्त्रार अली अलबज़्दवी, जमउल जवामे'मअ शरह, बनानी, कश्फ़ुल मुब्हम, मुसल्लमुस्सुबूत, तदरीबुर्रावी, तल्वीह, तौज़ीह, चिल्पी, मुल्ला ख़ुसरो, शेखुल इस्लाम, अल्फ़ियः इराक़ी, फ़त्हुल मुग़ीस, वज़दवी लिफ़ख़्रिल इस्लाम, अलफ़िक़्ः अलअकबर, वसाया अलइमाम, नुख़्बः, शरह नुख़्बः लिअली क़ारी, उसूल शाशी, फुसूलुल हवाशी, ज़ुब्दतुल उसूल आमली, शरह नुख़्बतुल मुसन्निफ़, उसूल हिक्मियः इब्ने क़य्यिम, हुसामी-मौलवी हुसामी, मिर्क़ातुल वुसूल, मिर्क़ातुल उसूल, अलमनार, नूरुल अन्वार, नस्मातुल अस्हार, फ़ुसूलुल हवाशी, मुक़द्दमः इब्ने सलाह, जफ़रुल अमानी, शरह मुख्तसर अलजरजानी, क़मरुल अक़्मार, इश्राक़ुल अब्सार।

फ़िक़्ः

फ़त्हुल क़दीर हिदायः, ऐनी हिदायः, हिदायः मुहश्शा अब्दुलहयी, सआयः शरह वक़ायः, चल्पी शरह वकायः, ग़ायतुल हवाशी, नकायः शरह, शरह वकायः, अश्शामी मअ तकमिलः, बहरुर्राइक़, तकमिलः बहरुर्राइक, मन्हतुल फ़ाइक़ कबीरी शरह मनियः, मुनीरी शरह क़ुदूरी, अलजौहरतुन्नय्यिरः, इश्बाहु वन्नज़ाइर, क़ानूनुल इस्लाम, उन्वानुश्शर्फ़, हद्यः मुख़्तारः, अलजामिउस्सग़ीर, ज़ियादात, शरह अज़्ज़ियादात, तुहफ़तुल अख़्यार, नूरुल ईमान, अन्नाफ़िउल कबीर, अन्नफ़ख़तुल मिस्कीनः, अत्तुहफ़तुल मिकियः,

रिसालहु इक्सारुत्त अब्बुद वलजुहुद, रोयतुल हिलाल, फ़त्हुल मुक़्तदी, हिलाल-ए-रमज़ान, अश्शहादतु फ़िल इर्ज़ाअ, जमाअतुन्निसा, रिसालतुल अललमिन्दील, अल अजूबीतुल फ़ाज़िल:, ऐतबारुल कुतुब, रिसालतुल अस्नाद, रिसालतुत्तस्हीह, अन्नस्ख़ वत्तर्जीह, नफ़उल मुफ़्ती, नफ़उस्साइल, दफ़उलवस्वास, ज़ज़रुन्नास फी असर इब्ने अब्बास, तहज़ीरुन्नास, शुर्बुद्दुख़ान, आख़िरु जुमअ:, अलक़िरअत बित्तर्जिम:, अलइन्साफ़ फ़िल एतिकाफ़, रिसालतु सब्ह, रिसालतुर्रहन, अलइक्सार फित्तअब्बुद, रिसालतुल जरह वत्ता'दील, तब्सिरतुन्नाक़िद, अलफ़ताविस्सलास: लिश्शेख अबुल हयी, अलकलामुल मुबरम, अलकलामुल मबरूर, अस्साई अलमश्कूर, इमामुल कलाम, ग़ैसुलग़माम,अल आसारुल मर्फ़ूअ:, दलीलुत्तालिब, बदूरुल अहिल्ल:, हिमायतुल फ़िक़्ह:, मुजल्लतुल अहकाम, किताबुल फ़राइज़, मसाइलुश्शरीअ:, अरौर्ज़ुल मुस्तन्किअ, सियानतुन्नास, सिल्क-ए-नूर, कलिमतुल हक़्क़, रसाइल इब्ने आबिदीनिश्शामी, इजाबतुल ग़ौस बिबयान हालुन्नुकब: वन्नुजव: वाल अब्दाल वल औताद वल ग़ौस, ग़ायतुल बयान फ़ी अन्न वक़्फ़िल इस्नैन अला अन्फ़ुसिहा वक़्फ़ ल वक़्फ़ान, ग़ायतुल मतलब फ़ी अश्रातिल वाक़िफ़, औदुन्नसीब इला अहलिद्दर्जतुल अक़रब फलअक़रब, अल अक़वलु लुल वाज़िहतो फ़ी नक़्ज़िल किस्मते व मसअलतिद्दरजतिल जअलिय:,तंबीहुर्रुकूद अला मसाइलिन्नक़ूद, अलइल्मुज़्ज़ाहिरु फ़ी नफ़्इन्नसबित्ताहिर, अज्वीबीतुन मुहक़्क़क़तुन असइलतिन मुफ़्तरक:, रफ़उल इन्तिकासि व दफ़उल ऐतराज़ज़ि अला क़ौलिहिमुलईमान मब्नियतुन अलल अलग़ाज़ ला अलल अग़राज़, तंबीह ज़विल इफ़्हाम अला अहकामित्तब्लीग़ ख़ल्फ़लइमाम, रिसालतुलइबाना अन अख़्ज़िल उजरत अलल हज़ानति, इतिहाफ़ुज़्ज़की अन्नबिय्य: बिजवाब मा यक़ूलुल फ़क़ीह, अलफ़वाइदुल अजीब: फ़ी ए'राबुल कलिमातिल

ग़रीब:, अलफ़वाइदुल मुख़स्स: बि अहकामिल हम्स:, तहबीरूत्तहरीर फ़ी इब्तालिल क़ज़ा बिल फ़स्ख़ बिल ग़बनिल फ़ाहिश बिला ता'ज़ीर, ए'लामुल ए'लाम बिअहकामिल इक़रारिल आम, रफ़उत्तरद्दुद फ़ी अक्दिल असाबिअ इन्दत्तश्शहहुद मअ रिसाल: मुल्ला अली क़ारी, नशरूल उर्फ़ फ़ी बिनाए बाज़िल अहकाम अलल उर्फ़, शरह मन्ज़ूम: अल मुसम्मात बिउक़ूद रस्मुलमुफ़्ती, सल्ललहुसामुल हिन्दी अन्नुसर: मौलाना ख़ालिद अननक़्शबन्दी, तंबिहुल वलाति वलहुक्काम अला अहकाम शातिम ख़ैरिल अनाम औ अहदे अस्हा बिलकराम, शिफाउल अलील व ब्लुल ग़लील फ़ी हुक्मिल ख़तमात व त्तहालील, अर्रहीक़ुल मख़्तूम शरह क़लाइदुल मंज़ूम, मिन्हलुल वारिदीन मिन बिहारिल फ़ैज़ अला दुख़रिल मुतअहिहलीन, उक़ूदुल्ल आली फ़ी असानीदिल अवाली, अल जौहरतुन्नय्यिर:, अलकंज़ कलान मुजतिबाई, फ़तावा हदीसिय:, ज़ब्बुन अनिल मुआविय:, दुररि फ़ाखिर:, रद्द शन्नुलग़ार:, मिस्बाहुल अदिल्ल:, ग़ायतुल कलाम अला अमलिल मुवल्लद वलक़याम, कशफ़ उलमा याग़िस्तान, इख़्तियारूलहक़ रद्द इन्तिसारूल हक़, ईज़ाहुल हक़, अस्सरीह फ़ी अहकामिल मय्यित वज़्ज़रीह, अहसनुलबयान अला सीरतिन्नो'मान, तफ़्हीमुल मसाइल, इस्बातबिल जहर बिज़्ज़िक्र, तज़्किरतुर्राशिद रद्द तब्सिरतुन्नाक़िद, सवाइक इलाहिय:, जामिउश्शवाहिद लि इख़्राजिल वहाबैन मिनल मसाजिद, तक़्दीसुर्रहमान मिनल किज़्ब वन्नुक़्सान, इंतिज़ामुल मसाजिद, इन्तिसारूल इस्लाम, तंबिहुल मुफ्सिदीन, नान-व-नमक, कलिमतुल हक़, पीरी-व-मुरीदी, ऐतिक़ाद रिसाल शिया:, इन्साफ़ मिन अस्बाबिल इख़्तिलाफ़, सियानतुल इन्सान, महाकम: बैनल अहमदैन, तन्क़ीदुल कलाम इला ग़ौसिल अनाम, सैफ़ुल अब्रार, अर्रद्दुल मा'क़ूल, अत्तम्हीद फ़ित्तक्लीद, मैआरूल मज़ाहिब, इस्तिफ़्ता मज़्हब-ए-अहले सुन्नत, रूमुज़ुल क़ुर्आन,

जामिउल क़वाइद, तौफ़ीक़ुल कलाम फ़िल फ़ातिह:, तहक़ीकुल मराम फ़ी रद्द अला अल क़िरअत खल्फ़िल इमाम, अल बहरूल ज़ख़्ख़ार फ़िर्रद्दे अला साहिबिल इन्तिसार, अलबलाग़ुल मुबीन फ़ी अख़्फाइल आमीन, अलक़ौलुल फ़सीह फ़िल फ़ातिह:, शवारिक समदिय: तर्जमा बवारिक़, तुहफ़तुल मुस्लिमीन अलल अमीन, तर्वीहुल मुवह्हदीन फ़ित्तरावीह, फ़त्वा इहतियात बादज़्ज़ुहर, सुल्हुल इख़्वान, सवाइक इलाहिया: हुसैन शाह बुख़ारी, दलाइलुर्रूसूख, जामिउल कुनूज़, अलबाइस अला इन्कारिल बिदअ, तर्कुल क़िरअत लिल मुक़्तदी, तुहफ़तुल किराम, अश्र: मुबश्शर:, रिसाल तरावीह, फ़तावा अल उलमा, इज़्हारूलहक़, तन्क़ीहुल अरबईन, अलकलामुल मुबीन, तज़्मीनुल इबारत फ़िल इशार:, मज्मुअ: फ़तावा, ग्यारह सवाल, अलकौकबुल अजवज, बवारिक़ुल अस्मा'अ, बुशुनवीद, दर्जातुस्साइदीन, उसूलुल ईमान, इख़्राउस्सिफ़ात, दारूस्सलाम मा सबता बिस्सन:, किताबुल फ़रज, इख़्तियारूलहक़, अल बराहीनुल क़ातिअ:, मद्दल बाअ, फुयुज़ क़ास्मिय:, अन्वार-ए-नो'मानिया रफ्उर्रैब:, सित्त: ज़रूरिय:, सुयुफ़ुल अब्रार, हकीक़तुल इस्लाम, कफ़्फ़ारतु ज़्ज़ुनूब, हदयतुल बहिय:, निज़ामुल मिल्लत, अस्रार-ए-ग़ैबिय:, रसाइल शाह वली उल्लाह, तक्मीलुल ईमान, पर्दा पोशी, तन्वीरूल क़दीर, क़ाज़ी ख़ान आलमगीरी।

इल्म-ए-कलाम (शास्त्रार्थ विद्दा)

शरह मवाकिफ़ मअ अब्दुल हकीम, चिप्ली, तकमिलात, शरह मक़ासिद, अलजवाबुल फ़सीह, तुहफ़तुल अशअरिय: शिया, किताबुल अक़्ल वन्नक़्ल इब्ने तौमय:, तसनीफ़ अहमद दोम, तहज़ीब-तीसरी जिल्द, हज़रातुत्तजल्ली-शरह अक़ाइद मअ हाशिया संभली, अस्सिरातुल मुस्तक़ीम लिइब्ने तौमिय:, रद्दे नसारा, मसअला-ए-इम्कान, लिसानुल हक़, रद्दे इम्कान, उजालतुर्राक़िब, मौ'तक़िद, अलमुन्क़िज़ मिनज़्ज़लाल,

हक़ीकत रूह, जोश-ए-मज़हबी, इक़्तिसाद, हुज्जः अलहिन्द, मतालिउल इन्ज़ार, कज़ा-व-क़द्र, किताबुत्तहारत, तर्जुमा रिफ़ारमर, तुर्के-ए-हिकमियः, अलजामुल अवामअलमज़्नून बिह, आबे हयात, लिसानुस्सिद्क़, मुरासलात-ए-मज़्हबी, नूनियः, नसीहतुत्तिल्मीज़, मिन्हाज, जवाब तहरीफ़ुल क़ुर्आन, रद्दे तनासुख, इब्ताल-ए-उलूहियत, तस्दीक बराहीन अहमदिया, इस्लाम-ए-हिन्द, अलजिज़या, जल्वए कायनात, अन्नज़र अलल ग़िज़ाली, फ़ज़ाइल-ए-ग़ज़ाली, रूमूज़-ए-हस्ती, तुहफतुल हिन्द, तस्दीक़ अल हुनूद, दीन-ए-मुहम्मदी, तअनुर्रिमाह, ज़फ़र मुबीन, सौतुल्लाहुल जब्बार, इम्दादुल आफ़ाक़, हद्यः महदवियः, वेदों की हक़ीकत, तर्जीहुल क़ुर्आन, रिसालः अर्शियः, शरह जौहरः, तम्हीद, शरह जलाली, शरह अक़ाइद ख़याली, शरह अक़ीदः कुब्रा, अब्दुल हकीम ख़याली, रिसालः हयी बिन यक़्ज़ान, शरह तवालिअ, तौर पुश्ती, शरह फ़िक़्ः अकबर दामाली, अक़ीदः साबूनियः, वास्तियः, तक़रीर दिल पज़ीर, क़िब्लःनुमा, इन्तिसारुल इस्लाम, ए'लामुल अख़बार, ख़िल्अतुल हुनूद, सवाल-व-जवाब, नूर-ए-मुहम्मदी, अलअसासुलमतीन, तहक़ीक-ए-जिब्ह, फैज़-ए-मुअज़्ज़म, अक़्बतुज़्ज़ाल्लीन, तन्ज़ीहुल अंबिया, इस्बातुल वाजिब, तहाफ़तुल फ़लासिफ़ः, अलमतालिबुल आलियः, दबिस्तान-ए-मज़ाहिब, मिलल-व-नहल, शहरिस्तानी, अस्रार-ए-हज, हमीदिया, बरकातुल इस्लाम, तहक़ीकुल कलाम फ़िल हयात, अलइल्हामुल फ़सीह फ़ी हयातिल मसीह, हक़्क़ाक़ुल हक़्, कश्फ़ुल इल्तिबास, ईज़ाह, अल मुन्क़िज़ मिनज़्ज़लाल।

मान्तिक (तर्क शास्त्र)

ईसा ग़ूजी, यकरोज़ः, मीर ईसा ग़ूजी, हिदायतुन्नह्व, क़ुतुबी, मीर क़ुतुबी, मौलवी क़ुतुबी, क़ुल अहमद, मुनीरी......शरह तहज़ीब फ़ारसी, अर्बअ अनासिर, शरह तहज़ीब अरबी, मन्तिक़ क़ियासी, मवादी अल

हिकमियः, मन्तिक़ इस्तिक़राई, मिर्क़ात, अलमन्तिकुल जदीद, मज्मुअः मन्तिक, मुल्ला हसन, हम्दुल्लाह, क़ाज़ी, सुल्लम अब्दुल अली सुल्लम, मन्हियः अब्दुल अली बर सुलम, तहरीमुल मंतिक इब्ने तौमियः, रिसालः क़ुतबियः, ख़ैराबादी ग़ुलाम यह्या, मीर ज़ाहिद रिसाल, अब्दुल अली मीर ज़ाहिद रिसालः, हवाशी अब्दुलहयी अलमर्हूम, मिर्क़ात, तुहफा शाहजहानी, अब्दुल हक़ मिर्क़ात, अब्दुल हलीम बर हम्दिल्लाह, रद्दुल मुग़ालितीन, मीब्ज़ी, मुल्ला जलाल, अब्दुल अली, हदियः सईदियः, मुल्ला जलाल क़लमी व तब्अ, अब्दुल हक़ अली हदयः, सिद्रा, शम्स-ए-बाज़िग़ः, जवाहिर-ए-ग़ालियः, हवाशी उमूरे आम्मः, बहरूल उलूम उमूरे आम्मः, सिक़ायतुल हिक्मियः, शरह इशारात, हदिय महानराजा, शिफ़ा शैख़, उफ़्क़ुलमुबीन, जुज़्वात अस्फ़ार अर्बअ।

अख़्लाक-व-तसव्वुफ़
(शिष्टाचार-व-अध्यात्मवाद)

इह्या उल उलूम हिन्द-व मिस्र मअ अवारिफ़ शैख़ सहरवर्दी, शरह इह्या 10 जिल्द, हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ः, मीज़ान शो'रानी, फ़तूहात-ए-मक्कियः 4 जिल्द, रहमतुल उम्मत, कश्फ़ुल ग़म्मः, ग़नियः, फ़स्लुलख़िताब मुहम्मद पारसा, मस्नवी मौलवी रूम, लुब्बे लुबाब, शरह बहरूल उलूम, मनाज़िल शरह मदारिजुस्सालकीन, हावीउल अर्वाह, तरीकुल हिज्रतैन, ए'लामुल मुवक़्क़ईन अन रब्बिल आलमीन, शह किताबु त्तौहीद, किताबुल ईमान, किताबुर्रूह, ऐज़न अज़ गिज़ाली मुतरजम, // अलफ़ुतूह फी अहवालिर्रूह, मक्तूबात यह्या मुनीरी व ख़्वाजा मासूम, जवाहिर फ़रीदी, दलीलु आरिफ़ीन, मक्तूबात शैख़ अब्दुल हक़, सब्अ सनाबिल, मक्तूबात मौलवी इस्माईल व हबीबुल्लाह क़न्धारी, मक्तूबात इमाम रब्बानी व मज़हर जान व ग़ुलाम अली साहिब, रिसालः इमाम

क़शीरी, ज़ब्दतुल मक़ामात, मुल्हमात, फवाइदुल फ़वाइद, अफ़ज़लुल फ़लाइद, कलिमतुलहक़, मक़ामात-ए-रब्बानी, फ़ैज़-ए-रब्बानी, फ़ुतूहुल ग़ैब, मनाक़िब शैख़ अब्दुल क़ादिर, शिफ़ाउल अलील, अलब ला ग़ुलमुबीन, मंसब-ए-इमामत, शरह हिज़्बुल बहर, उजालः नाफ़िअः, अस्सिरातुल मुस्तक़ीम, इन्सान-ए-कामिल, बर्ज़ख़ अबू सालिमी, आबे हयात, इदामतुश्शुक्र, मक़ालः फसीहः, रद्द ऐतराज़ात बर इमाम रब्बानी, शीर-व-शकर, तक़्वियतुल ईमान, सुरूरूल महज़ून, शरह फ़ुसुसुल हिकम फारसी, अरबी, उर्दू, जवाब शाह अब्दुल अज़ीज़, अवारिफ़, मकारिमुल अख़्लाक़, ईक़ाज़ुरूक़ूद, बज़्मुल मन्फ़िअः, दवाउल क़ल्ब, तब्शीरुल आसी, तहसीलुल कमाल, तस्लियतुल मुसाब, मुन्जियात, ज़वाजिर, कश्फ़ुल्लिआम, कश्फ़ुल ग़ुम्अः, फ़ित्नतुल इन्सान, अलइन्फ़िकाक, अन्नुस्हुस्सदीद, मिलाकुस्सआदह, इमारतुल औक़ात, दा'वतुल हक़, दा'वतुद्दाए, ज़ियादतुल ईमान, नुकातुल हक़, कलिमतुल हक़, अस्रारुल वहदत, रिसालः तौहीदियः, बहरुल मआनी, वुजूहुल आशिक़ीन, अनीसुल ग़ुर्बा, तुहफ़तुल मुलूक, मज्मूअः रसाइल तसव्वुफ़, बशारतुल फ़ुस्साफ़, मह्वुल हूबः, अल मुफ़्तक़र फ़ी हुस्निज़्ज़न्न, ग़िरा सुलजन्नत, तज़्कीरुल कुल, ज़ौउश्शम्स, वसीलतुन्निजात, रफ़्उल इल्तिबास, अशर, ईकाज़ुन्नियाम, इस्लाह ज़ातुलबय्यिन, जिलाउल क़ुलूब तज़्किरतुल महबूब, तुहफ़ा ख़सन,पीरी मुरादी, राह-ए-सुन्नत, इन्शा उद्दवाइर, तसव्वुर-ए-शैख़, उस्व-ए-हसनः, कीमियः सआदत, बर्ज़ख़, मक्तूबात-ए-क़ुद्दूसियः मअ जवाहिर-ए-समदियः, शरह अस्माए हुस्ना इमामगिज़ाली, शरह अरबईन इब्ने हजर मक्की, सिराजुल क़ुलूब, क़ुव्वतुल क़ुलूब अबूतालिब मक्की, हयातुल क़ुलूब, इल्मुल किताब, तअर्रूफ़, तंबीहुल मुग़तरीन, जामिअ उसूलल औलिया, मब्दअ मआद, किताबुल मदख़ल,

कलिमतुल हक़्क़-ख़ुलासा, अर्बअ अन्हार, कश्फुल हिजाब, नुकातुल हक़्क़, इर्शाद-ए-रहीमियः, सबीलुर्रशाद, अन्फ़ास-ए-रहीमियः, सित्तः ज़रूरियः, मुईनुल अर्वाह, तौहीदियः, मिर्अतुल आशिक़ीन, सहाइफ़ुस्सुलूक, हज़ीरतुल क़ुदुस, मवाइदुल अवाइद, नालःअंदलीब, आहे सर्द, दर्दे दिल, नालःए-दर्द, शम-ए-महफ़िल।

तिब्ब (यूनानी चिकित्सा पद्धति)

तज़्किरः दाऊद, नुज़्हतुल बहजत, कामिलुस्सनाअत, क़ानून बू अली मिस्र 3 जिल्द, हम्मियात-ए-क़ानून मअ मुआलजात क़ल्मी, इक्सीर आज़म फ़ारसी 4 जिल्द, इक्सीर इमामुद्दीन कपूरथला, मुहीत-ए-आज़म 3 जिल्द, मख़्ज़न सुलेमानी-ज़हरावी-नम्बर11, कराबदीन उर्दू, फ़ारसी जिल्द अव्वल, जामिउश्शरहैन सिकन्दरी, रूक्ने आज़म बहरान, प्रकाशित तथा क़लमी याकूती (हस्तलिखित), नय्यर-ए-आज़म नब्ज़, ख़ुलासतुल हिकमत, मीज़ानुत्तिब्ब मअ रसाइल, अत्तशरीहुल ख़ास, किताबुत्तहज़ीर, अत्तशरीहुल आम, अम्राज़-ए-जिल्दियः, मस्ख़ुस्सियासनः, मियाह-ए-मा'दिनियः, तुहफ़तुल मुहताज, किताबुल कीमिया, कल्प द्रोम, दाराशिकोई, औरंगज़ेबी, दवाउलहिन्द, मासूमी, हयातुल हैवान, मुजर्रबात-ए-अकबरी, तिब्री प्रथम आधा भाग, रियाज़ुल फवाइद, तज़्किरह इस्हाक़ियः, मुफ़रदाते इस्हाक़ियः, मुहीत, इक्सीर मुल्तानी अरबी, रिसालः अफ़्यून, रिसालः औराम, तर्तीबुल इलल, तशरीहुल अम्राज, होम्योपैथिक, अफ़्ज़लुल मक़ाल हालात-ए-अतिब्बा, क़राबादीन वैदिक, ग़ायतुलग़ायः बिरइस्साअत, रसाइल हिन्दियः, शरह कानून चः, ज़मरद, कुनूज़ुस्सिहत, ग़ायतुल मराम, इलाजुल अम्राज़, हाइजीन, तिब्ब-ए-रहीमी, कुल्लियात इल्म, फ़िज़िकल कांग्रस, इल्मुल अम्राज़, रिसालः जराहत, मब्लग़ुलयराह, रिसालः अत्फ़ाल, बक़ाए शिबरी, मा'मूलात-ए-अहमदिया, मेटीरिया मेडीका,

मुजर्रबात-ए-सुमूम वबाए हैज़ा, बहस इख़्लात व अख़बारात-तिब्ब, इलाजुल अब्दान, शिफ़ाउल अम्राज, रिसाल:ग़िज़ा, वसाइलुल इब्तिहाज अस्सिराजुल वहह्‌ाज, रिसाल: अम्राज़-ए-क़ल्ब, हिफ़्ज़-ए-सिहत, शरह मुफ़र्रह, बहरुल जवाहिर, बहजतुर्रऊसा, सर्जरी गंजीनए फ़ुनूने सन्अत, तुहफ़-ए-ऐश, तिब्ब-ए-जमाली, रिसाल:आतिशक, मुजर्रबात-ए-बशीर, रिसाल: जुदरी, ज़ुब्दतुल मुफ्रदात, ज़ुमुदे अख्जर, अंबर, हिदायतुल मौसम, तिब्ब राजिन्दरी, फ़ुसुलुल अराज़, मुजर्रबात बूअली, मुजर्रबात-ए-रज़ाई, कज़ुल अस्रार, इलाजुल माअ, तक्शीफुल हिक्मत, रिसल: कीमिया, तबीब लाहौर बटंग, नबातात-ए-हैवानात, मा'दिनुल हिक्मत, तश्रीहुद्दिक़, रिसाल: फ़स्द, ज़ियाउस अब्सार,जियाबीतस-मिराक, रिसाल:नब्ज़, उजाला मसीही, ख़ुफ्फ़ अलाई, सआदत-ए-दारैन, रिसाल: आवाज़, अमृत सागर, रिसाल:मतब अलवी, रिसाल: हैज़ा, रूमूज़ुल हिक्मत, तिब्ब-ए-शहवानी, इलाजुल अब्दान, आईना तबाबत, तक्मीलुल हिक्मत, मुखद्दिरात, बवासीर, मुस्किरात, सूजाक़, रिसाल: बाह, किफ़ायतुल अवाम, सिहतुल हवामिल, सिहतनुमा-ए-इज़्दिवाज, नासिरुल मुआलिजीन, क़राबादीन, फिज़ीशियन, जामिअ शिफाइय:, मुफ़ीदे-आम मुईनुल हकीम, सदीदी क़लमी-व-प्रकाशित, क़राबा दीन-ए-आज़म, इफ़ादात कैमीरिय:, इल्मुल अम्राज, इलाजुल अम्राज़, नफ़ीसी कामिल, सदीदी कामिल, ख़ज़ायनुल मुलूक, हियरुत्तजारूब, ख़ुला सतुत्तजारुब, उजाल:नाफ़िअ:, तिब्ब-ए-करीमी, सनाआत-ए-वैदिक, तुहफ़ा मुहम्म्द शाही, क़राबादीन मज़्हरी, रसाइल नत्थू शाह, क़राबादीन वैदिक, रिसाल:-ए-मराक़, कंज़ुल मुस्हिलीन, इक्सीरुल अम्राज, तहक़ीक़ात-ए-नादिर:, दस्तूरून्निजात फी इलाजिल हमिय्यात, कश्त-ए-ज़ार, क़राबादीन हाज़िक, मख़्ज़निल मुफ़रदात, क़राबादीन ज़काई, मिन्हाजुद्दुक्कान,

इलाजुल हुम्मा, तिरयाक़-ए-आज़म, जन्नतुल वाक़िय:, ज़ुब्दतुलहिकमत, ख़ुलासतुल हिक्मत, अत्ताऊन, दफ़उत्ताऊन, हिर्ज़ुत्ताऊन, तबीबुल ग़ुर्बा, मज़्हरूल उलूम, रसाइल कीमिय:, हाफिज़:अहमदी, शिफ़ाउन्नास, उसूल इलाजुलमाअ, इख़्तियारुत्तौलीद, तश्रीहुल औराम, अस्सिहत नूरुलहिक्मत, बहरे मुहीत, गुलदस्ता मुजर्रबात, मुअल्लिमुस्सिहत, इब्राहीम शाही, हादी सग़ीर, फ़र्रुख़ शाही, हादी कबीर, इलाज कल्बुल कल्ब, तहलीलुल बौल, क़ादिरी।

क़ुतुब-ए-मज़ाहिब
(धार्मिक पुस्तकें)

वेद 10 जिल्द, , ऋवेद, यजुर्वेद, अथर्व वेद, शाम वेद, अनुवाद देहली, वेद भूमिका (अनुवाद) , सत्यार्थ प्रकाश (संस्कृत तथा उर्दू), मनु, याज्ञ कल्क,परमानन्द, जैन मत की पुस्तकें, अलखधारी की पुस्तकें, जवाब सत्यार्थ प्रकाश (संस्कृत), ज़िन्दुस्ता, सफरंग, वसातीर, बुद्ध मज़हब, फेथ आफ़ दी वर्ल्ड, ड्रेपर, अलवाहुल जवाहिर, हुरमुस, बाबी धर्म की पुस्तकें, मुस्हफ़ हरमस, ग्रन्थ नानक साहिब इत्यादि, जनम साखी, सहीफ़-ए-फ़ित-रत......तौरिय: अबरी, क़ुतुब अहदे कदीम (अरबी,फारसी,उर्दू), अनाजील अर्बअ (अरबी,उर्दू,फारसी), अनाजिल तिफूलियत व मरयम, कुतुब अहद--ए-जदीद, तफ़्सीर-ए-ज़ुबूर, तफ़्सीर इंजील मती, तफ़्सीर इंजील लूक़ा, तफ़्सीर इंजील मर्कस, तफ़्सीर इंजील युहन्ना, तफ़्सीर आ'माल, तफ़ासीर रोमन में, तफ़्सीर खत क़रन्तियां, रसूलों के खुतूत की तफ़्सीर, तफ़्सीर खुतूत पोलूस, दआईमीम, कलीदुल किताब, तालमूद, इलहियात की पुस्तक, रसा-इल-ए-इलाहियात, ख़ुतूत बनाम नौजवान, तशरीहुतस्लीस, सलवात-ए-उमू-मिय:, जामिउल फ़राइज़, मिफ़्हातुल अस्रार, अगस्टन के इक़रार, मसीह की बेगुनाही, मसीह इब्नुल्लाह, मसीह का जी उठना, तरीक़ुल औलिया,

तालीम इल्मे इलाही, यसू का अहवाल, ख़ुलासतुत्तवारीख़, पन्द्रह लेक्चर, मीज़ानुल हक़, तरीक़ुल हयात, मिफ्ताहुत्तौरात, अस्रार-ए-इलाही, तक़्ली-दुल मसीह, एजाज़-ए-मसीही, ऐनुल हयात, नबी मा'सूम, अस्सलतुल कुतुब, तेग-व-सिपर, नियाज़ नामा, उलूहियत-ए-मसीह, तहरीफ़ुल क़ुर्आन, एजाज़ुल क़ुर्आन, हिदायतुल मुस्लिमीन, अब्दुल मसीह, तवारीख मुहम्मदी, सदाए ग़ैब, नुकाते अहमदिया, अन्दरूनः बाइबल, उसूल साइकालौजी, मिथालौजी, हवाए ज़माना, इलाहियात, इंजील तिब्बत वाला।

रसाइल उलूम मुख़्तलिफ
(विभिन्न विद्दाओं की पुस्तकें)

उकुरचन्द अक्साम के, इल्मुल हवा, इल्मुल माअ, इल्मुस्सुकून, इल्मुल हैअत, इल्मे मुसल्लस, इल्म मुक़न्ज़रात, रसाइल-ए-मुजीब, इक़्लीदस पन्द्रह मक़ालः, इल्म मुनाज़िर, रसाइल इल्म मिराया, उम्मुत्तवारीख़, रसाइल नबातात, रसाइल इल्मुल हैवानात, सिर्रूस्समा, तौशजियः, मिन्तल फ़िलास्फी, रसाइल जियालॉजी, मबादीउत्तबीआत, सिलसिला तालीम तबीअः व-फ़ल्सफ़ा, मफ़ातीहुल उलूम, फहरिस्त इब्ने नदीम, कश्फ़ुज़्ज़ुनून, कश्फ़ुल क़ुनूअ, फहरिस्त ख़दीवियः, अत्तौफ़ीक़ातुल इल्हामियः, जामिअ बहादुर ख़ानी।